दिसम्बर 2008 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

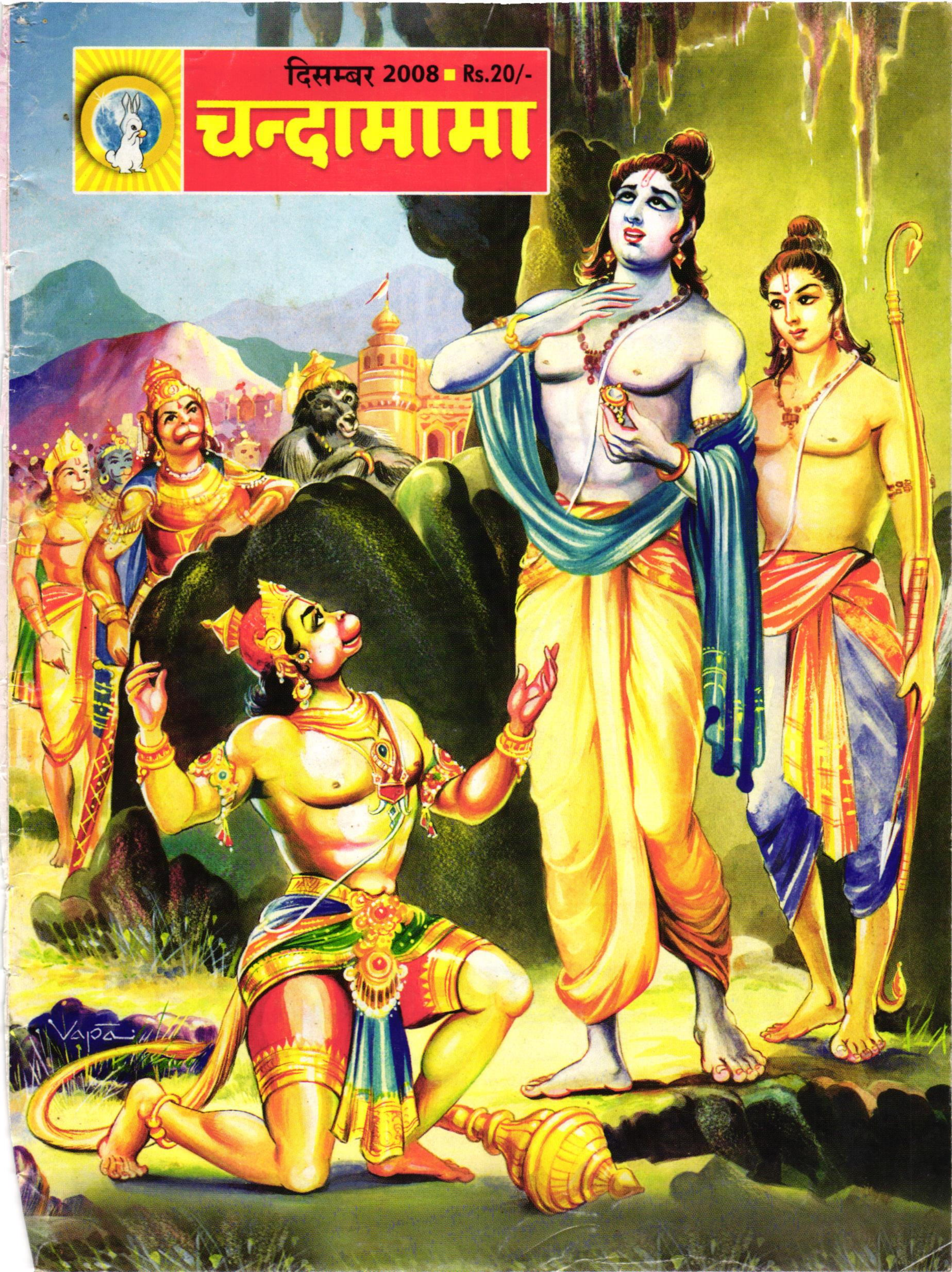

New
BOOMER®
Super Bubble Gum
Splash™
Mint
WITH LIQUID CENTER
Win cool prizes like bandana caps, sippers & bubblemeters!
What is cricketer M.S Dhoni's biggest strength?
(A) He is from Jamshedpur OR (B) He is super cool under pressure
Send your replies to: Boomer Contest, Chandamama India Ltd., JVL Plaza, 6th Floor, 626 Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600018
OR e-mail to: boomer@chandamama.com OR SMS your answer as follows to 54646 Boomer <space> A or B

25% Off!

CHANDAMAMA'S

Ramayana

An Epic Journey

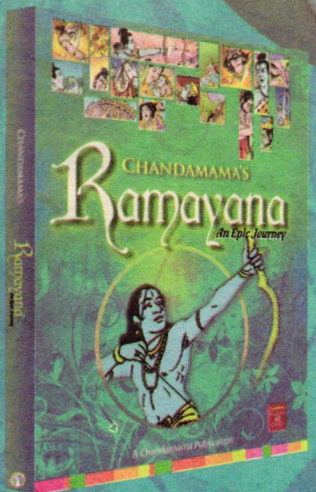

Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.

Price: Rs 449/-

Order now and get 25 % off!

To place an order go to www.chandamama.com and click on the Pre-order button.

Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

चन्दामामा सम्पुट-५९ दिसम्बर २००८ सञ्चिका - १२

विशेष आकर्षण

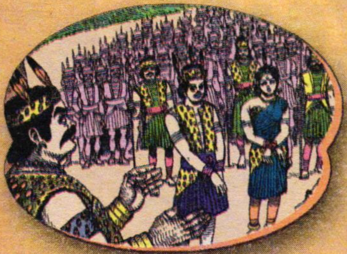

धर्म मार्ग (बेताल कथाएँ) ...१९

एक राजस्थानी लोक कथा ...३९

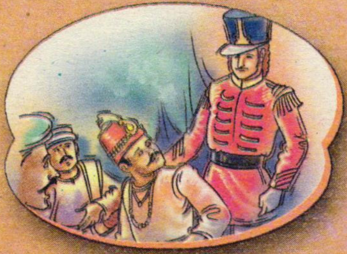

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१५ ...४७

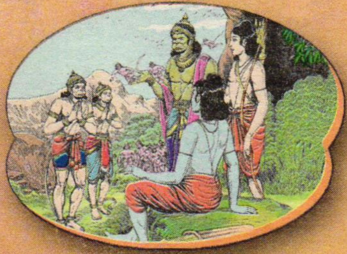

रामायण (सुन्दर काण्ड - ७) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* गूँगा भगवान ...०७
* भारत के धरोहर स्थल ...११
* क्या सचमुच सान्ता क्लॉज है? ...१२
* पाताल दुर्ग-५ ...१३
* समाचार झलक ...२५
* पौराणिक युवा नायक-७ ...२६
* अधित्यका की सुन्दर कुमारी ...३१
* बीरबल की कहानियाँ-१६ ...३४
* उदीयमान सितारा ...३८
* सत्यदेव के वरदान ...४३
* प्रशासन में त्रुटि ...५०
* शतरंज चैम्पियन्स ...५२
* जातक कथा ...५३
* खजाने की खोज ...६३
* दोस्त ...६७
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-११ ...७१
* बच्चे अख़बार की सुर्खियों में ...७२
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

अमर वाणी

शास्त्रों के प्रति निष्ठा, सहज ज्ञान, साहस, वाक्‌चातुरी, समयानुकूल व्यवहार, प्रतिभा - ये सब कार्य-साधक के लिए कामधेनु जैसे गुण है।

त्रिविक्रम भी वामन बना, वराह बना और नृसिंह भी बना; नीच हो या न हो, अति नीच ही क्यों न हो, किसी भी रूप में कार्य को साधना होगा।

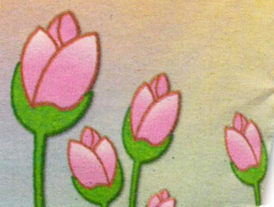

परिवर्तन, युग का विधान

पिछले कुछ दिनों में 'परिवर्तन' शब्द ने, ऐसा प्रतीत होता है, मानो जादू की शक्ति प्राप्त कर ली है। बराक ओबामा ने अपने पूरे चुनाव-प्रचार के दौरान 'परिवर्तन' शब्द पर बल देते हुए विश्वासोत्पादक विजय के साथ अमरीका का प्रेसिडेण्ट बन कर वहाँ एक इतिहास रच दिया है। वह इस तरह विश्व के सबसे शक्ति शाली देश का नेतृत्व करनेवाला प्रथम अफ्रो-अमरीकी चुना गया है।

परिवर्तन मानव-कल्याण हित; समुदायों तथा देशों में शान्ति पुनर्स्थापित करने के लिए मनोवृति में परिवर्तन; गरीब-अमीर की खाई के बीच सेतु निर्माण के लिए आर्थिक पर्यावरण में परिवर्तन। सूची अनन्त है, विश्व में सर्वत्र दुःख, घृणा और हिंसा को निर्मूल करने के लिए परिवर्तन। पूरी धरती पर प्रसन्नता लाने के लिए आगामी वर्ष के प्रकरण के रूप में 'कल्याण हित परिवर्तन' पर विचारार्थ यह मानव इतिहास में सर्वथा उपयुक्त क्षण है।

आप की पत्रिका में भी परिवर्तन हो रहा है। चार दशकों से भी अधिक समय तक *चन्दामामा* की सेवा करने के पश्चात पाठकों, प्रशंसकों तथा शुभचिन्तकों को यह सूचित करते हुए मुझे गहरे क्षोभ मनोव्यथा की अनुभूति हो रही है कि मैं इस दिसम्बर अंक से इस लोकप्रिय प्रकाशन के साथ सम्बद्ध नहीं रहूँगा।

मैं अपने युवा मित्रों तथा तेरह भाषाओं में *चन्दामामा* के पाठकों की एक विशाल दुनिया के प्रति उनके अमूल्य समर्थन तथा सहानुभूति के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैं *चन्दामामा* के संस्थापकों-अपने पिता श्री बी. नागि रेड्डी तथा श्री चक्रपाणि का, मुझ पर भरोसा करने तथा इस उदात्त राष्ट्रीय संस्था के सेवार्थ मुझे अवसर प्रदान करने के लिए, सदा कृतज्ञ रहूँगा।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com/hindi

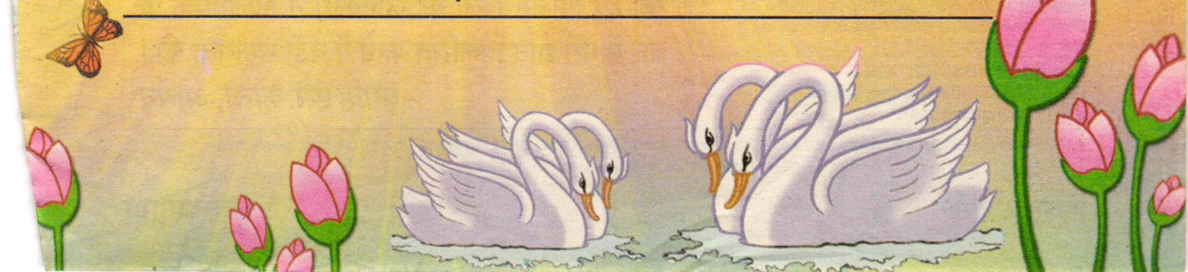

Founded by B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, *Manager-Circulation & Institutional Sales - South*
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North***
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager - Karnataka***
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East***
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval, *Sales Officer-Circulation***
Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : sowmya.b@chandamama.com
Head - Business Development : **Surajit Agarwal**
email : surajit@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet CHENNAI-600018
Phone +91 44 24334455, Fax +91 44 2432 2103
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

ANNUAL SUBSCRIPTION :
Foreign : US$30 (including shipping and handling charges)

पाठकों का पन्ना

मैं पिछले २० वर्षों से *चन्दामामा* को पढ़ रही हूँ। बदलते समय में जहाँ सभी चीज़ों में बदलाव आया है, वहाँ इस पत्रिका में केवल सकारात्मक बदलाव ही आए हैं। इसका आवरण पृष्ठ बहुत ही सुन्दर है। मुझे इसकी कहानियाँ आज भी उतनी ही रोचक लगती हैं जितनी पहले लगती थीं। इसमें प्रकाशित हर कहानी शिक्षाप्रद होती है। इस पत्रिका के चित्र बहुत आकर्षक होते हैं। मैं अपने दोस्तों को *चन्दामामा* पढ़ने की सलाह देती हूँ।

- अमृता पांडेय, दिल्ली

चन्दामामा केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, यह हमें ढेर सारी जानकारी भी देता है। यह अत्यन्त रोचक तथा शिक्षाप्रद है। इतने दीर्घ काल से पत्रिका का स्तर सदा ऊँचा बनाये रखने के लिए आप को धन्यवाद।

-बिजन कुमार बन्दोपाध्याय, बंगाल

मैं *चन्दामामा* की उत्कट प्रशंसक हूँ। मेरे पिता इसे आजीवन पढ़ते रहे। आप सहमत होंगे कि आज, ऐसा साहित्य जो बच्चों में मानवीय मूल्यों को विकसित करे, दुर्लभ है। मैं चाहती हूँ कि मेरे बच्चों को चन्दामामा पढ़ने का सुअवसर और सौभाग्य प्राप्त हो। ***-प्रशान्ति, पुणे***

मैं भारतीय विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एक भारतीय हूँ और विदेश में पल रहा हूँ। आप के रोचक स्तम्भ 'भारत दर्शक' से अपनी मातृभूमि के बारे में अधिक जानने-समझने में मुझे बहुत मदद मिल रही है। बिजिंग खेलों की जानकारी ने ओलम्पिक के बारे में मेरा ज्ञान विकसित करने में बड़ी सहायता की।

-वर्षाह एस.कान्त, ओमन

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

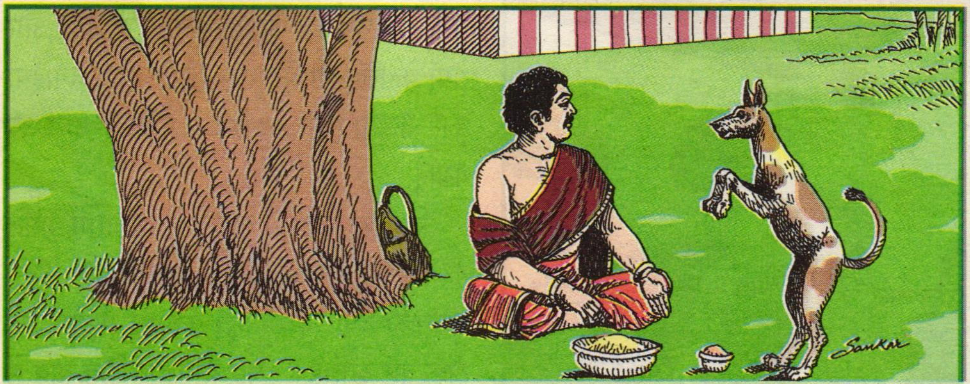

गूँगा भगवान

लक्ष्मीपुर में शिवराज नामक एक गायक रहा करता था। आसपास के गाँवों में वह घूमा करता था और जहाँ चार-पाँच लोग बैठा करते थे, वहाँ प्रतापी वीरों के त्यागों का वर्णन करते हुए गीत गाया करता था। उनसे जो मिलता था, उससे अपना पेट भरता था।

गाँवों में मुख्यतया शिव और विष्णु के भक्तों के घरों में जब शादियाँ होती थीं या कोई शुभ कार्य संपन्न होता था तो वह पहले से ही इनकी जानकारी पा लेता था और वहाँ चला जाता था। वहाँ जाकर उनके गोत्रों के नाम, उनके पुरखों से किये गये दान-धर्मों का बखान करता था। इसके बाद उनसे कहता था, ''ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ने जब विवाह किया तब उन्होंने एक लंगड़े गौरैया की जाति के एक मानव की सृष्टि की। वह गौरैया लंगड़ाते हुए त्रिमूर्तियों के गोत्रों आदि का नाम बताता और उनका विवाह कराता था। मैं भी उस लंगड़ाते हुए गौरैये की जाति का हूँ। आपकी संतान की वृद्धि होगी और पुण्य काम करके नाम कमायेगी।'' वह इस प्रकार नूतन वर-वधुओं को आशीर्वाद देता था।

शुभ कार्य जब हो रहा हो तब उस लंगड़े का आना शुभप्रद माना जाता था। इसलिए उसे भरपेट खिलाते और दक्षिणा देकर उसका सत्कार करते थे।

एक बार शिवराज ने भैरव नामक गाँव में गीत गाये, भीख माँगी और दुपहर तक गाँव के पास ही के भैरव के मंदिर के निकट पहुँचा। वह नीम के पेड़ के नीचे बैठकर भीख माँगकर लाये हुए खाद्य पदार्थों-को खाने ही वाला था, तभी वहाँ एक कुत्ता आया। शिव ने एक क़ौर उसे भी खिलाया। पर कुत्ते ने उसे नहीं खाया। आगे के

मार्कंडेय

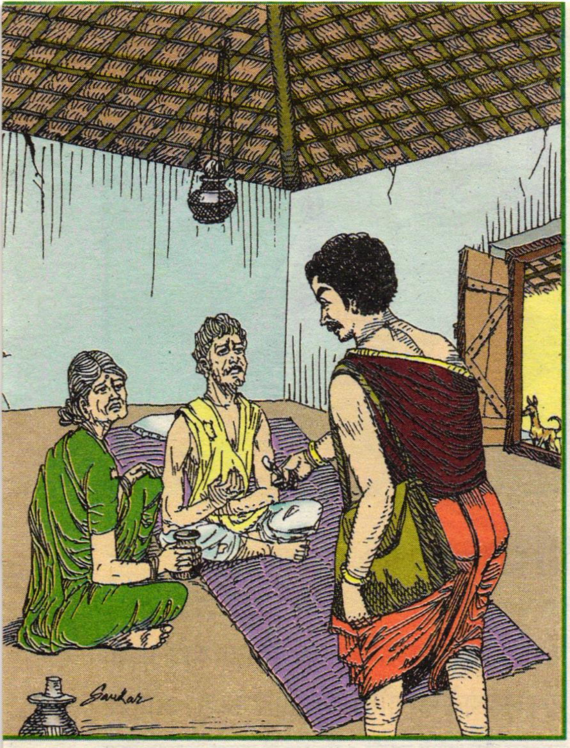

पैरों को उठाकर उसने नमस्कार किया। फिर वह ज़मीन खोदता हुआ आगे और पीछे जाने-आने लगा। शिवराज ने थाली झोली में डाल ली और उसके साथ-साथ गया। वह उसे एक झोंपड़ी के सामने ले गया। शिवराज ने झोंपड़ी के अंदर झाँककर देखा।

अंदर एक अधेड़ उम्र का आदमी पेट के दर्द से पीड़ित हो रहा था। उसने अपना नाम सीताराम बताया। उसके बग़ल में ही बैठी उसकी पत्नी ने विषय बताया। शिवराज ने तुरंत थैली में से एक जड़ी निकाली और सीताराम से कहा कि वह उसे चबाकर खाये। उसने जड़ी मुँह में क्या डाली, उसका पेट दर्द ग़ायब हो गया। पति-पत्नी ने शिवराज को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। शिवराज ने मुस्कुराते हुए कहा, ''यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। पेट दर्द के लिए ही नहीं, और रोगों के लिए भी मेरे पास छोटी-मोटी दवाइयाँ हैं।'' कहता हुआ वह फिर से मंदिर के पास आ गया।

शिव की वैद्यगिरी के बारे में सीताराम दंपति ने गाँव के सब लोगों से बताया और कहा, ''उसकी दवा अचूक है। पल भर में रोगी को ठीक कर देती है।'' यह समाचार भैरव गाँव में प्रमुख वैद्य माने जानेवाले बसवराज तक पहुँचा। पहले वह इस समाचार को सुनकर चकित रह गया। इसके बाद उसने लोगों को यह कहते हुए सुना ''सीताराम से एक दमड़ी भी लिये बिना उसे ठीक कर दिया। इसका यह मतलब हुआ कि शिवराज बहुत अच्छा आदमी है। हमारा बसवराज तो अमीरों की चिकित्सा करता है। फिर उसके पास भला क्यों जाएँ!''

यह सुनकर वह आग बबूला हो उठा और सीधे ग्रामाधिकारी के पास गया। शिकायत करते हुए उसने कहा, ''मैं प्रमुख वैद्य अमर पांडे का शिष्य हूँ, जिन्हें धन्वंतरी का अवतार माना जाता है। लोग अब मुझे कोसने लगे। उस भिखारी वैद्य के पास चिकित्सा के लिए जा रहे हैं। उससे मेरी बराबरी! इससे बढ़कर अपमान क्या हो सकता है! आप ही को इसके लिए कोई मार्ग ढूँढ़ना होगा।''

ग्रामाधिकारी ने फ़ौरन शिवराज को बुलाया और इस बात पर उसे कोसा कि बिना क़ाबिलियत के तुम वैद्यगिरी कर रहे हो और यह गुनाह है। इसके बाद सीताराम दंपति को बसवराज से माफी

मँगवायी, क्योंकि उसी के प्रचार की वजह से शिवराज की प्रशंसा की जा रही है।

सीताराम दंपति ने तुरंत माफी माँगी, किन्तु शिवराज ने कहा, ''इसमें मेरी क्या ग़लती है? मैं कितनी ही छोटी-मोटी दवाइयों के बारे में जानता हूँ। जो दवाएँ खरीद नहीं सकते, उनके लिए तो मैं बहुत बड़ा वैद्य हूँ। यह विषय गूँगे कुत्ते को भी मालूम है, इसीलिए वह ठीक समय पर मुझे वहाँ ले गया।'' उसने जो बात कही उसमें मासूमियत भरी हुई थी।

उसकी इन बातों पर एकदम नाराज़ होते हुए ग्रामाधिकारी ने कहा, ''तुम्हारा न कोई घर है, न ही कोई अपना। गाँवों में घूमते रहते हो। तुम पर तरस खाकर हम तुम्हें खाना खिलाते हैं। अब बहुत ही घमंडी हो गये हो और जो मुँह में आया, बक रहे हो। यह भी कहने लगे कि कुत्ते की अक्ल के समान समझदार भी नहीं हो। आगे से कोई भी इस गाँव में तुम्हें भीख नहीं देगा।'' गाँव के लोग भी ग्रामाधिकारी का समर्थन करते हुए कहने लगे ''एक भिखारी को इतना घमंड। अब वह कुत्ता ही इसकी देखभाल करेगा।''

शिवराज घबरा गया। घर-घर जाकर उसने क्षमा माँगी। भीख भी माँगी, लेकिन किसी ने उसे कुछ भी नहीं दिया। शाम को बेचारा भूखा शिवराज मंदिर लौटा और थकावट के मारे सो गया।

सवेरा हो गया, फिर भी वह सोता ही रहा। एक कुत्ता अचानक उसके कपड़े को पकड़कर खींचने लगा। वह जग उठा और उसने देखा कि उस गाँव के निवासी रतन गुप्त पकवानों से भरा पत्तल कुत्ते के सामने रखकर कहने लगा, ''काल भैरव, स्वीकार करना।'' कहते हुए वह उस कुत्ते को प्रणाम करने लगा। लेकिन कुत्ते ने पत्तल पर

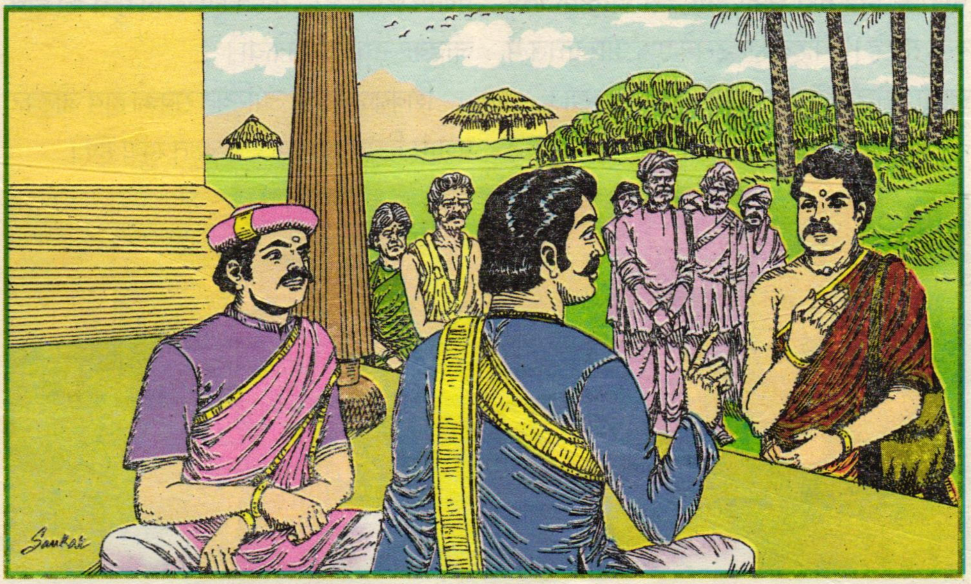

बिछे किसी भी पकवान को छुआ तक नहीं। वह शिवराज के कपड़े को खींचे जा रहा था।

असल में विषय यों था। काशी की यात्रा से लौटे रतन गुप्त ने उस दिन सवेरे काल भैरव मूर्ति की अर्चना करवायी। पुजारी ने काल भैरवाष्टक पढ़ा और रतन गुप्त से एक कुत्ते की पूजा करवायी। पुजारी ने गुप्त से कहा कि पत्तल में पकवान परोसो और कुत्ते को नैवेद्य चढ़ाओ। वह वही कुत्ता था, जिसने शिवराज से सीताराम की वैद्यगिरी करवायी। पत्तल की तरफ़ भी उसने नहीं देखा और वह शिवराज की ओर दौड़ता हुआ गया। उसका पीछा करते हुए जानेवाले व्यापारी, पुजारी तथा ग्रामीण इस दृश्य को देखकर दंग रह गये।

व्यापारी गुप्त ने कहा, ''यह कुत्ता सचमुच ही कालभैरव का अंश है। हमने जिस शिवराज को गाँव से बाहर चले जाने को कहा, वह उसकी भूख को देख नहीं सका और उसे खाने के लिए बुला रहा है।'' कहते हुए उसने एक और पत्तल में खाना परोसा और शिवराज के सामने रखा।

यह समाचार जानते ही ग्रामाधिकारी, बसवराज के साथ वहाँ आया। इस दृश्य को देखकर दोनों स्तब्ध रह गये। शर्म के मारे सिर झुका लिया। इसके बाद थोड़ी देर तक सोचने के बाद, बसवराज ने ग्रामाधिकारी से कहा, ''अक़्लमंदी और प्रतिभा आश्रय के अनुसार रंग लाते हैं। शिवराज जैसे घुमक्कड़ गाँवों में घूमते रहते हैं और गाकर वीरों का इतिहास बताते हैं। उन्हीं के कारण हमारा इतिहास अब भी सुरक्षित है। उसी प्रकार अपने अनुभव का उपयोग करते हुए वैद्यगिरी करते हैं।

''बड़े वैद्य कहलाये जानेवाले हम जैसे वैद्यों को चाहिये कि इसका आदर करें और प्रकाश में ले आयें। इसके लिए आप जैसे बड़ों का आदर भी चाहिये। अहंकार भरित होकर मैंने शिवराज को गालियाँ दीं, उसकी घोर निंदा की, इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मूक भगवान बनकर इस काल भैरव ने मेरी आँखें खोल दीं, उसे सविनय प्रणाम करता हूँ।'' कहते हुए उसने कुत्ते को हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

शिवराज ने वहाँ उपस्थित सबको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। सबके सब बहुत खुश हुए।

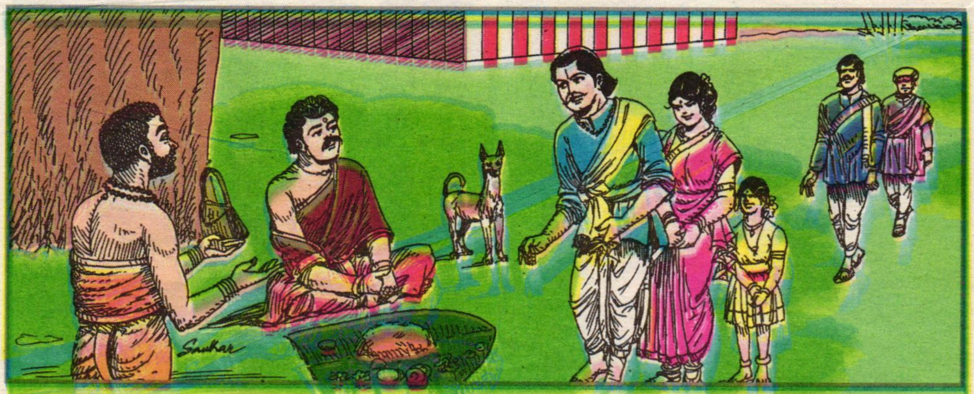

भारत के पर्वतीय रेलपथ

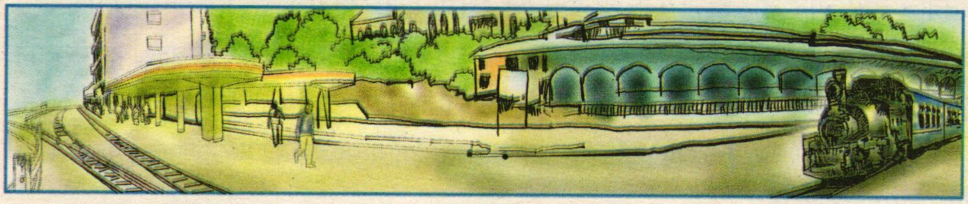

भारत में तीन पर्वतीय रेलपथ हैं। पहला था दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे जो १८८१ में आरम्भ किया गया। इसकी रूपरेखा में, अत्यन्त मनोरम पर्वतीय क्षेत्र पर प्रभावशाली रेल सम्पर्क की स्थापना की समस्या का साहसिक और विचक्षण अभियांत्रिक समाधान प्रयुक्त है। इस रेलवे का उपनाम है ट्वाय ट्रेन! यह नैरो गेज रेलवे (६१० एम एम) प.बंगाल में सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग तक जाता है। यह रेलवे ८६ कि.मी. लम्बा है और इस पर स्टीम इंजिन द्वारा चालित ट्रेन चलाई जाती है। सिलीगुड़ी में इसकी चढ़ाई १०० मीटर से शुरू होकर दार्जिलिंग में करीब २२०० मीटर हो जाती है। इस रेलवे को सन १९९९ में विश्व विरासत स्थल की सूची में शामिल किया गया।

तमिलनाडु में स्थित ४६ कि.मी.लम्बा मीटर गेज सिंगल ट्रैक नीलगिरि पर्वतीय रेलवे सन् १९०८ में बन कर तैयार हुआ। इसकी चढ़ाई ३२६ मीटर से आरम्भ होकर २२०३ मीटर तक जाती है और इसमें नवीनतम टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया गया है। यह रेलवे मेट्टूपालयम तथा पहाड़ी सैरगाह उदागमंडलम (ऊटी) के बीच स्थित है। दक्षिण भारत में नीलगिरि पहाड़ियों पर चलनेवाला यह भारत में एक मात्र 'रैक' रेलवे है। इसे विश्व विरासत स्थल के रूप में सन २००५ में घोषित किया गया।

इस वर्ष ७ जुलाई को यूनेस्को ने हिमाचल प्रदेश स्थित कालका-शिमला पर्वतीय रेलवे को विश्व विरासत स्थल के रूप में शामिल किया है। यह ९६ कि.मी. लम्बा सिंगल ट्रैक रेलवे उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में निर्मित किया गया था।

भारत में पर्वतीय रेलवे प्रणाली, टेक्नोलॉजी में विकास पर मूल्यों के आदान-प्रदान का एक विशिष्ट उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में रेलवे के विकास का, विश्व के अनेक भागों में सामाजिक तथा आर्थिक विकासों पर गहरा प्रभाव पड़ा था। ये तीनों रेलवेज अभी भी पूर्ण रूप से कार्यरत हैं।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-९ अक्तूबर २००८ :

चन्दामामा के हिन्दी संस्करण के पाठकों से प्राप्त कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पायी गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हमारे पाठकों के लाभार्थ प्रश्नोत्तरी-९ के उत्तर ४२ पृष्ठ पर दिये गये हैं। कृपया सभी चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहें।

क्या सचमुच सान्ता क्लॉज है?

सान्ता क्लॉज एक पाश्चात्य परम्परा है। फिर भी, हम उसे प्यार करते हैं, करते हैं न? चकाचौंध कर देनेवाले लाल चोगे और लम्बी श्वेत दाढ़ी में एक खासा मोटा तगड़ा आदमी वर्षान्त की एक ऐसी प्रतिमा है कि जब तक उसके प्रसन्नचित हो-हो हमारे कानों में नहीं गूंजते तब तक क्रिसमस की कल्पना करना कठिन-सा लगता है। किन्तु क्या सान्ता क्लॉज केवल बच्चों के लिए है?

सन् १८९७ में 'न्यूयार्क सन' समाचार पत्र के सम्पादकीय मण्डल की निम्नलिखित पत्र मिला :

प्रिय सम्पादक महोदय,

मैं आठ वर्ष की हूँ। मेरे कुछ बाल-मित्र कहते हैं कि सान्ता क्लॉज नाम का कोई व्यक्ति नहीं है। पापा कहते हैं कि यदि तुम इसे 'द न्यूयार्क सन' में देखो तब समझो यह है। कृपया मुझे बताइये सत्य क्या है, क्या सान्ता क्लॉज सचमुच में है?

- वरजिनिया ओ' हैन्लों

जब समाचारपत्र के एक सम्पादक फ्रांसिस चर्च ने यह पत्र पढ़ा तो यह उसके मर्म को छू गया। फ्रांसिस अमरीकी गृह युद्ध के दौरान युद्ध संवाददाता था और उसने काफी कष्ट और मृत्यु को बहुत निकट से देखा था। उसने इस नन्हीं सी बच्ची के प्रश्न का उत्तर देने का निश्चय किया क्योंकि वह सान्ता क्लॉज की महत्ता को जानता था।

यद्यपि वरजिनिया को लिखा उसका यह उत्तर-''हाँ, वरजिनिया, सान्ता क्लॉज है''- सम्पादकीय पृष्ठ पर सातवें स्थान पर रखा गया, फिर भी, कितने ही पाठकों की मर्म तंत्री झंकृत हो उठी। ऐसा प्रतीत हुआ कि सिर्फ वरजिनिया ही नहीं, बल्कि अन्य देशवासी भी थे जो सान्ता क्लॉज में विश्वास करना चाहते थे!

विश्वास करने, निष्ठा और आस्था रखने के मानव-संकल्प के कारण सान्ता क्लॉज एक मनोवांछित परम्परा है। हमारे पास, हो सकता है, अब और चिमनिज न हों, किन्तु इस दिसम्बर हम सब को मंत्र मुग्ध कर देने में सान्ता को कुछ नहीं रोकेगा, क्या ऐसा है?

चन्दामामा को भी सान्ता क्लॉज में विश्वास है। हम अपने सभी पाठकों के लिए हर्षोल्लासमय क्रिसमस और एक सुखद नव वर्ष की कामना करते हैं!!

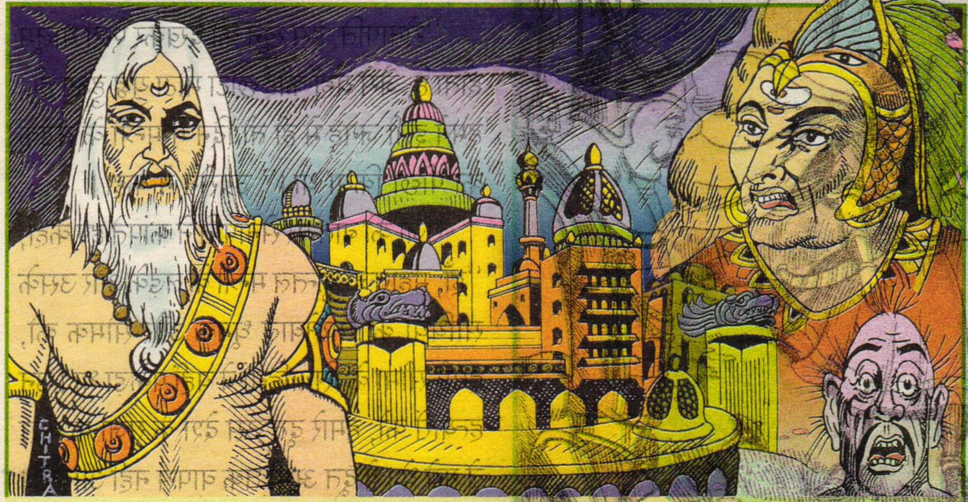

पाताल दुर्ग

5

(कुम्भीर नाम का राक्षस राजकुमारी कान्तिसेना को उठाकर ले जा रहा था, वह कालशम्बर नामक मान्त्रिक द्वारा घायल कर दिया गया। पेड़ पर छिपे धूमक और सोमक ने यह सब देखा। यकायक कहीं से कोई बाण आकर शम्बर को लगा। तुरंत राक्षस और वह गुफ़ाओं में भाग गये। बाद में-)

धूमक और सोमक ने कुछ कदम्ब सैनिकों को "वह देखो, राक्षस, वह देखो" चिल्लाते हुए गुफ़ाओं की ओर भागते हुए देखा। ताकि वे उनको दिखाई न पड़ जायें, वे और घने झुरमुट के पीछे छिप गये।

"राक्षस कहाँ है? उसे घेर लो। उसे भाग निकलने न दो।" एक घुड़सवार यह चिल्लाता तलवार घुमाता सैनिकों के बीच में आया। वह कदम्ब का राजा उग्रसेन था। उसे देखकर, सोमक को क्रोध आ गया। परन्तु कुछ सोच कर वह मुस्कुरा पड़ा और सोचने लगा कि आखिर इस राजा की मौत उसी के हाथ होनी थी, तभी तो वह बिना किसी उम्मीद के उसके इतना करीब, उसके दायरे में आ गया है कि मारना आसान है। राजा को मारना इतना आसान फिर कभी नहीं होगा। यह मौका भगवान ने उसे दिया है। उसके

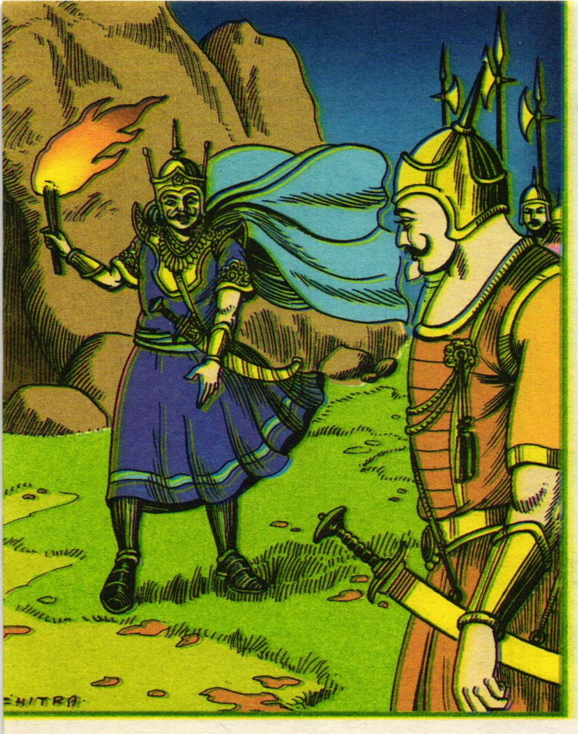

अत्याचार से प्रजा को राहत मिल जायेगी। इस पापी राजा को मारना ही उचित है। यह सब सोच कर वह दाँत पीसते हुए, उस पर बाण छोड़ने ही वाला था कि धूमक ने उसे रोका और उसके कान में कुछ कहा। सोमक ने न चाहते हुए भी धूमक की बात मान ली और धनुष की डोरी ढीली कर दी। इतने में चार पाँच कदम्ब सैनिक उग्रसेन के पास भागे भागे आये। उन्होंने कहा, ''महाराज, हमने राक्षस को घायल कर दिया है। यह देखिये, ज़मीन पर खून के निशान। परन्तु अन्धेरे में वह किसी गुफ़ा में भाग गया है।''

उग्रसेन ने सैनिकों की एक मशाल ली और गुफ़ा के सामने हरी घास पर पड़े खून के निशान उसकी रोशनी में देखे। वे निशान एक जगह ही नहीं, कई जगह पड़े हुए थे।

''सेनापति, इस खून को देखकर ऐसा मालूम होता है, जैसे यहाँ कोई छोटा मोटा युद्ध हुआ हो। हमने इसी जगह में ही तो दिन में मन्त्री के लड़के का पीछा किया था।'' उग्रसेन ने कहा।

राजा की बात पर सेनापति ने कांपते हुए कहा, ''हाँ, महाराज! कुन्तल मन्त्री के लड़के और उसके साथियों को मारनेवाले धूमक और सोमक को, हमारे सीमा के सिपाहियों ने यहीं पकड़ा था। उन हत्यारों को, हमारे दूत उस देश के राजा के पास ले गये थे। वे दूत अभी तक वापस नहीं आये हैं। हमें नहीं मालूम, वहाँ के राजा और मन्त्री ने कहाँ तक हमारी बातों पर विश्वास किया है। और यदि विश्वास कर लिया हो तो अपराधियों को क्या दण्ड दिया है। दूतों के वापस लौटने पर ही जानकारी मिल पायेगी।'' उग्रसेन ने गुस्से में कहा, ''कुछ भी हो, अगर यह राक्षस की आफ़त सिर पर न आ पड़ती, तो कुन्तल देश को, एक सप्ताह में मटियामेट कर देता।''

सेनापति कुछ कहना ही चाहता था कि पास के नाले से कल कल ध्वनि सुनाई दी। उग्रसेन ने तलवार उठाकर कहा, ''राक्षस यहीं नाला पार करके कुन्तल देश में तो नहीं पहुँच गया है। देखो, इन सब गुफ़ाओं में भी देखो।'' उसने सैनिकों को आज्ञा दी। जब कुछ सैनिक नाले की ओर भागे, तो उस तरफ़ से कुन्तल के घुड़सवार जोर से चिल्लाते आये और उन्होंने कदम्ब के सैनिकों पर हमला कर दिया। कुछ सैनिकों ने उग्रसेन को घेर लिया। और उस पर वे प्रहार करने ही वाले थे

कि तभी कहीं से एक भारी आवाज आई - ''रुक जाओ।''

''यह ठीक नहीं है। यह गलत युद्ध है। जानते हो मैं कौन हूँ। मैं उग्रसेन महाराज हूँ।'' उग्रसेन सिंह की तरह गरजा।

''इतने बड़े महाराजा का, इस जंगल में क्या काम है? जो कोई भी बिना अनुमति के कुन्तल देश में प्रवेश करता है, वह हमारा शत्रु है। चाहे तुम कोई भी हो, महाराज या सेनापति, पर हो तुम हमारे शत्रु। बिना बगावत किये हथियार रख दो, नहीं तो, जान नहीं बचेगी।'' कहता हुआ कुन्तल देश के सैनिकों का सरदार घोड़े पर से उतरा।

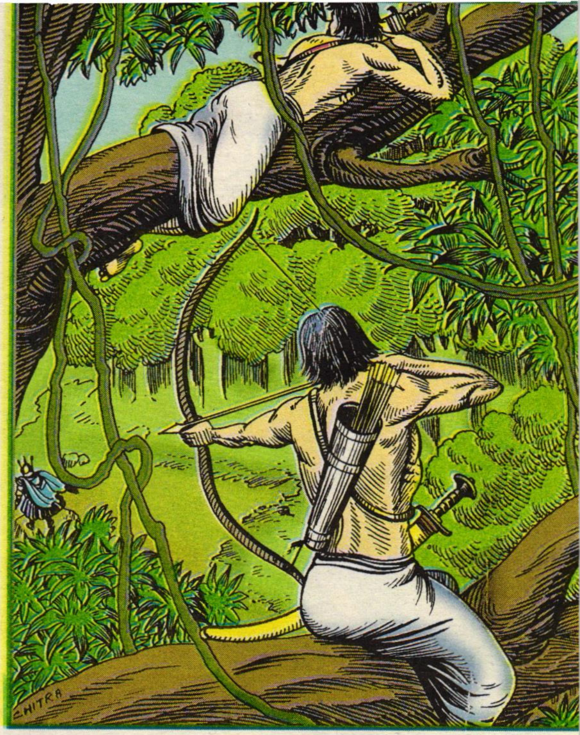

कदम्ब के सैनिक अपने राजा के सामने भाले सीधे करके खड़े हो गये। उनमें से कुछ साहसी सैनिक तलवार लेकर आगे बढ़े और कुन्तल के सैनिकों का मुकाबला करने लगे। उग्रसेन, अपने सैनिकों को सावधान करके कुछ पीछे हटा। एक पत्थर पर खड़े होकर ध्यान से देखने लगा कि शत्रु और अधिक तो नहीं हैं।

कुन्तल और कदम्ब के सैनिकों के बीच भयंकर युद्ध होने लगा। कदम्ब सैनिक इस कोशिश में थे कि कुन्तल सैनिक नाला पार कर आयें जिससे उन्हें घेर कर मारा जा सके और यह भी पता चले कि कुन्तल सैनिक कितने हैं। दूसरी ओर कुन्तल सैनिक उनको और उनके राजा को पकड़ लेना चाहते थे। इतने में पूर्व दिशा में उजाला होने लगा। झुरमुट के पीछे छिपे हुए धूमक और सोमक को कुछ दूरी पर युद्ध करते दोनों तरफ़ के सैनिक साफ़-साफ़ दिखाई देने लगे।

''सोमू, यही अच्छा मौका है। इस समय मारने से सब यही समझेंगे कि शत्रु के सैनिकों ने मारा होगा। हम पकड़े नहीं जायेंगे। हम पर किसी को सन्देह भी नहीं होगा। बोलो, क्या उस पापी उग्रसेन को तुम यमलोक पहुँचाओगे? या मैं उसे पहुँचाऊँ?'' धूमक ने पूछा।

धूमक ने अभी अपना वाक्य पूरा न किया था कि सोमक ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ''गले पर निशाना लगाओ।'' धूमक ने कहा।

सोमक ने उग्रसेन के गले का निशाना लगाकर बाण छोड़ा। पर उसी समय नाले के पार बड़ा शोर हुआ और उग्रसेन यह देखने के लिए, पत्थर से कूदा। सोमक का बाण निशाने पर न लगकर,

हाथ पर जोर से लगा। उग्रसेन जोर से चिल्लाया और नीचे गिर गया और उसके सैनिक यह सोचा कि उनके राजा पर कोई आपत्ति आ पड़ी है, तुरंत पीछे हटे। यही मौका देख, कुन्तल के सैनिक भालों से उनकी पीठों पर हमला करने लगे। इतने में नाले की ओर से गम्भीर स्वर में किसी का आदेश सुनाई दिया। ''भागते हुए शत्रु को मारो मत। घेर कर पकड़ लो।''

कुन्तल के सैनिकों ने पीछे मुड़कर देखा। उन्हें मन्त्री गंगाधर, कुछ घुड़सवारों के साथ उस तरफ़ आता हुआ दिखाई दिया। कुन्तल सेना में जय-जयकार हुआ। उनका उत्साह दुगुना हो गया। वे पूरे जोश के साथ शत्रु पर टूट पड़े। कुछ को मार दिया गया और बचे हुए कदम्ब सैनिकों को घेर कर पकड़ लिया गया और उनके हथियार ले लिये गये। राजा उग्रसेन दर्द के कारण जमीन पर पड़ा-पड़ा कराहने लगा। गंगाधर घोड़े पर से उतरा। सैनिकों ने उसको जाने के लिए रास्ता दिया। उग्रसेन के पास आकर उसने पूछा, ''कौन है यह? ओहो, तो आप उग्रसेन महाराज हैं! आश्चर्य होता है, जिनको दरबार में राजसिंहासन पर बैठना चाहिए था, क्यों यहाँ जंगल में यूँ लुढ़क रहे हैं?''

गंगाधर की बातें सुनते ही, उग्रसेन ने उठकर बैठना चाहा, पर दर्द के कारण कराहने लगा। दो कुन्तल सैनिकों ने आकर उसे उठाया और हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया। सोमक का बाण अभी उसके हाथ में लगा हुआ था। गंगाधर ने वह बाण दिखाते हुए कहा, ''महाराज, आप इतने से बाण पर इतना कराह रहे हैं! हमारे भद्र की पीठ पर इससे कहीं जबर्दस्त बाण लगा था और वह उसकी बिना परवाह किये, तीस कोस सफर करके राजधानी पहुँच गया था। जब राजवैद्य उसका बाण निकाल रहे थे, तो वह हँसता-हँसता इस प्रान्त की खबरें सुना रहा था।''

भद्र का नाम और उसकी पीठ पर लगे बाण के बारे में जैसे ही उग्रसेन ने सुना, तो वह पगलाया हुआ-सा चारों ओर देखने लगा। वह तब डरने लगा कि कहीं गंगाधर अपने लड़के की मौत का बदला लेने के लिए तलवार से उसे न मार दे। वह सोचने लगा कि क्या दुर्भाग्य मेरा पीछा कर रहा है। मैंने मंत्री के लड़के और उसके मित्रों को छेड़ कर कुन्तल राजा को शत्रु बना लिया है। दूसरी ओर अचानक मेरी बेटी को एक राक्षस उठा ले

गया। मैंने राक्षस का पीछा करते समय यह नहीं सोचा कि जंगल में एक और आपत्ति आ जायेगी, वरना और अधिक सेना लेकर आता? परन्तु गंगाधर मुस्कराता-मुस्कराता, धीमे-धीमे एक-एक कदम रखता उसके सामने आया और उन सैनिकों को, जो उग्रसेन को पकड़े हुए थे उसे एक पत्थर पर बिठाने के लिए कहा, ''महाराज! इस पुत्रशोक में भी मैं आपका कोई नुकसान पहुँचाने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ। और न तो युद्ध करने की दृष्टि से आया हूँ। मैं तो स्वयं पुत्र-शोक से विह्वल हूँ। फिर भी, आप को घायल देख कर मेरा दुख और बढ़ गया है। मैं तो अपने पुत्र की खोज में आया हूँ और यह भी जानना चाहता हूँ कि किस कारण से मेरे बच्चों पर बाण चलाये गये। यदि मेरा पुत्र मर गया है तो उसका शव कहाँ है? जब तक मुझे शशिकान्त का शव नहीं दिखाई देता, तब तक मुझे विश्वास न होगा कि वह मर गया है। उसी प्रकार मेरा विश्वास है कि जयन्त जिन्दा है। आपके किये हुए धोखे का वे ही कभी न कभी बदला लेंगे।''

उग्रसेन ने लम्बा-सा मुँह करके गंगाधर की ओर देखा, ''महामंत्री, न मालूम कल सवेरे उठकर किस मनहूस का मुँह देखा था, तब से कष्ट ही कष्ट झेल रहा हूँ। यहाँ शिकार पर आकर मैंने बड़ा घोर क्रूर काम किया। रात को मेरी लड़की....''

उग्रसेन कहता-कहता रुका। मन्त्री गंगाधर ने, उग्रसेन जिस पत्थर पर बैठा था, उसकी ओर एक कदम रखा। वह ज़रा झुका और वहाँ पड़े एक

वस्तु को हाथ में लेकर उसे ध्यान से देखते हुए कहा, ''यह क्या है? यह तो किसी राक्षस का सींग है। खून अभी तक सूखा नहीं है। मैंने कभी न सुना था कि यहाँ गुफ़ाओं में राक्षस रहते हैं।''

उग्रसेन ने गंगाधर के हाथ का सींग देखते हुए कहा, ''महामंत्री, वह राक्षस ही कल मेरे किले से मेरी लड़की को उठाकर ले गया था। उसका पीछा करते ही मैं यहाँ आया हूँ। मेरी अभी तक उससे भिड़न्त नहीं हुई है। किसने उसका सींग तोड़ा होगा?'' उसे अचरज हो रहा था।

उग्रसेन की लड़की, कान्तिसेना के अपहरण के बारे में गंगाधर ने तब तक कुछ न सुना था। यह सुनते ही उसे उग्रसेन पर दया आने लगी। वह थोड़ी देर के लिए अपना पुत्र-शोक भूल गया और उसके हृदय में उसके पीड़ित शरीर और

अपनी बेटी के अपहरण के दुख से परेशान राजा के लिए करुणा उमड़ पड़ी। उसने, साथ आये हुए वैद्य को बुलाकर, उसे उग्रसेन के हाथ में लगे हुए बाण को दिखाया। ''जैसे भी हो, महाराजा को बिना दर्द दिये उस बाण को बाहर निकालो।'' फिर उसने उग्रसेन से कहा, ''महाराज, इस आशा से कि मेरा लड़का यहीं कहीं मिल सकता है, मैं राजवैद्य के शिष्य को साथ लेकर आया हूँ।''

युवक वैद्य ने मिनटों में राजा का बाण बाहर निकाला और घाव पर पट्टी बाँध दी। गंगाधर उस बाण को देखकर कुछ कहने ही वाला था कि पास में खड़े सेनापति ने उसके कान में कुछ कहा। गंगाधर ने और चकित होते हुए कहा, ''महाराज, जिसने आपको घायल किया है और जिसने राक्षस का सींग तोड़ गिराया है, वह एक ही है। उन सोमक और धूमक को, जिनको आप लोगों ने अपने पितृ-भातृ हन्तक कहा था , हमारे सीमा के सरदार ने पकड़ लिया था और उसने आपके दूतों से लिये हुए बाण उन्हें दे दिये थे। उसी बाण से आप घायल हुए हैं। यह देखिये। आपका राज चिह्न है।'' उसने उग्रसेन को बाण दिखाया।

''महामन्त्री! मैं नहीं जानता कि वे दोनों हत्यारे हैं कि नहीं, परन्तु बगावती अवश्य हैं। वे यहीं कहीं छिपे हुए होंगे।'' कहते हुए उग्रसेन अपने सैनिकों की ओर मुड़ा और उनसे कहा, ''तुम सब उन विद्रोहियों के पीछे जाओ और उनको पकड़ो।''

गंगाधर ने सैनिकों को ठहरने के लिए कहा, ''महाराज, यहाँ आज्ञा देनेवाला मैं हूँ। आप नहीं हैं। जब तक मेरे लड़के शशिकान्त के बारे में मुझे नहीं मालूम होता, तब तक आप सब लोग शतभानु महाराज के कैदी हैं।'' फिर उसने कुन्तल के सेनापति से कहा, ''हमारे सैनिकों से इस सारे इलाके की गुफ़ाओं में धूमक और सोमक की खोज करवाओ। हमारे सैनिक यह चिल्लाते जायें कि उनको डरने की जरूरत नहीं है, शतभानु महाराजा उनका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। यह सुनकर, वे बाहर आ सकते हैं।''

तुरंत धूमक और सोमक ने पेड़ की टहनियों पर खड़े होकर कहा, ''शतभानु महाराज की जय।'' एक टहनी पर बन्दरों की तरह छलांग लगाते वे ज़मीन पर कूद पड़े। ***(अभी है)***

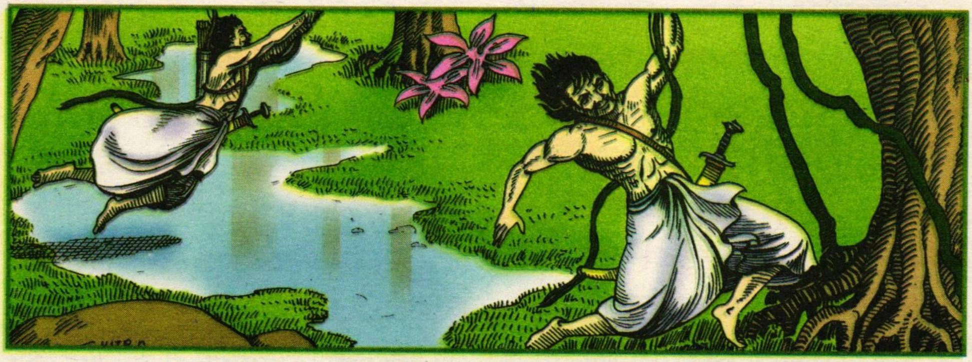

धर्म मार्ग

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः उस पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "मैं तो यह नहीं जानता कि किससे बदला लेने के लिए इतना परिश्रम कर रहे हो, कष्ट झेल रहे हो और एक प्रतापी राजा होते हुए भी एक साधारण व्यक्ति बनकर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जुटे हुए हो। किन्तु, प्रतिकार व प्रतिरोध के नाम पर अन्याय व अत्याचार करनेवाले दुष्ट भी कभी-कभी उन्हें छोड़ देते हैं और शत्रुओं की ओर स्नेहपूर्ण हाथ बढ़ाते हैं। इस प्रकार का निर्णय लेनेवाले दंडोद्दंड नामक भील जाति के नेता की कहानी तुम्हें सुनाने जा रहा हूँ। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।" फिर

वेताल कथा

वेताल उसकी कहानी यों सुनाने लगा :

दंडकारण्य के पूर्वी भाग में रहनेवाली जंगिणि जाति की कुछ युवतियाँ आखेट करने पास के जंगल में गयीं। आखेट में व्यस्त रत्नांगि अपनी सहेलियों से दूर हो गयी और एक खरगोश का पीछा करने लगी। अकस्मात् गंडोलि जाति के एक युवक से उसका आमना-सामना हुआ।

दोनों जातिवाले एक-दूसरे को शत्रु मानते थे। ऐसी स्थिति में दोनों एक-दूसरे को मारने के लिए तैयार हो जाते थे। या तो मर जाते थे या मार डालते थे। दोनों किसी भी हालत में पीछे हटते नहीं थे। रत्नांगि तुरंत डोरी चढ़ाकर निशाना बांध रही थी तो उसने देखा कि वह युवक वहाँ से हिल नहीं रहा है, उल्टे वह मुस्कुरा रहा है और उसी को ध्यान से देख रहा है।

रत्नांगि ने क्रोधित होते हुए कटु स्वर में पूछा, ''क्या देख रहे हो? अपने प्राणों का तुम्हें मोह नहीं?''

''तुम्हारे अद्भुत सौंदर्य को देखकर मैं धन्य हो गया हूँ। तुम्हारे हाथों मर जाऊँगा तो मुझे स्वर्ग ही मिलेगा'', मुस्कुराते हुए उस युवक ने कहा।

उसकी प्रशंसा पर चकित रत्नांगि वैसी ही मूर्तिवत खड़ी रही।

''मैं जानता हूँ कि तुम्हारा नाम रत्नांगि है। मेरा नाम दंडधर है। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। अगर तुम मुझे पसंद करती हो तो कल इसी समय पर यहाँ आना।'' कहता हुआ वह युवक उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना बरगद की जटाओं को पकड़कर तेजी से चला गया।

रत्नांगि अपने गाँव की ओर निकली। उसके मन में उसका सुंदर रूप और उसकी निधड़क बातें बराबर याद आने लगीं।

चार दिनों के बाद रत्नांगि, दंडधर को खोजती हुई उसी स्थल पर गयी। उसे वहाँ देखकर बोली, ''कितने दिनों से यहीं हो?''

''अभी-अभी आया हूँ। मैं तुम्हारे मन में हूँ, यह जानने के लिए इतना समय तुम्हें चाहिये, यह पहले ही से जानता हूँ, इसलिए आज ही यहाँ आया हूँ'', दंडधर ने कहा। उसकी इस बात पर और चकित होती हुई रत्नांगि ने लज्जा के मारे सिर झुका लिया। इसके बाद दोनों आपस में बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद दंडधर ने पूछा, ''क्या हम दोनों शादी कर लें?''

"मुझे इस बात का भय है कि इससे हमारी दोनों जातियों में युद्ध हो जायेगा", रत्नांगि ने कहा। "यह क्यों नहीं सोचती कि इससे हम दोनों की जातियों में दोस्ती होगी।" दंडधर ने कहा। उसकी बातों में यह विश्वास भरा हुआ था कि यह संभव है।

"इसके लिए चाहिए, साहस! क्या इतना साहस तुममें है?" रत्नांगि ने पूछा।

"तुम देखती जाना कि मुझमें कितना साहस है", कहते हुए उसने मुख पर कालिमा पोत ली, अपने सिर पर कौए के पंखों को मुकुट की तरह रख लिया और हू ब हू जंगिणी जाति के युवक की तरह तैयार होकर रत्नांगि के साथ उसके गाँव की तरफ निकल पड़ा। चूँकि रत्नांगि साथ थी, इसलिए किसी को भी उसपर संदेह नहीं हुआ। उस रात को वह रत्नांगि के ही घर में रहा।

आधी रात को जब कोई आहट सुनायी पड़ी तो रत्नांगि जाग उठी। उसने देखा कि दंडधर धीरे से दरवाजा खोल रहा है और बाहर जा रहा है। वह भी उसकी जानकारी के बिना उसके पीछे-पीछे जाने लगी। दंडधर सीधे मंदिर के अंदर गया और जंगिणियों की कुलदेवी वीरम्मा के हाथ के डमरू को चुराकर अपने कपड़ों में छिपा लिया। यह देखकर रत्नांगि पूछ बैठी, "क्या तुमने इसके लिए मुझसे प्रेम का ढोंग रचा?"

"दुष्ट शक्ति के प्रभाव में आकर हमारे गाँवों के लोग विष ज्वर के कारण मरते जा रहे हैं। बताया जाता है कि वीरम्मा के हाथ के डमरू को बजाने

से ये दुष्ट शक्तियाँ मिट जायेंगी और ज्वर कम हो जायेंगे। यह काम करने के लिए मेरे पिता ने मुझे भेजा। यह सच है कि डमरू को पाने के लिए ही मैंने तुमसे प्रेम का नाटक किया। परंतु अब सचमुच ही मैं तुमसे प्रेम कर रहा हूँ। मेरा विश्वास करो।" दंडधर ने कहा।

रत्नांगि को लगा कि वह सचमुच ही सच कह रहा है। पर, इतने में गाँव के कुछ युवक वहाँ आये और उन्हें पकड़ लिया। वे उन्हें गाँव के प्रमुख के पास ले गये।

दूसरे दिन गाँव के लोगों के बीच उन्हें खड़ा कर दिया गया। उनके अपराध पर सुनवाई शुरू हो गयी। मंदिर का पुजारी गोमांगो कहने लगा, "रत्नांगि, तुमने शत्रु की बातों में आकर, उसे अपने घर में आश्रय दिया और जाति द्रोह किया।

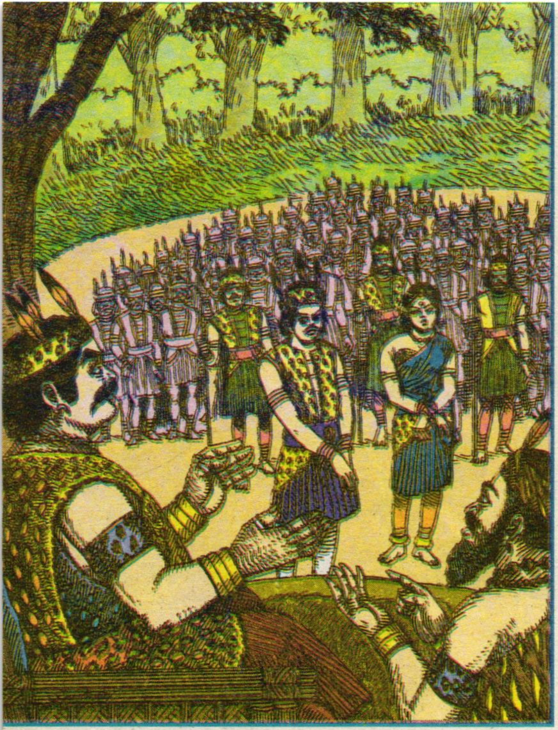

एक कदम मात्र है। यह आगे बढ़ने की दिशा में प्रारंभ मात्र है, इसी आशा को लेकर मैंने ऐसा किया।'' रत्नांगि ने विनयपूर्वक बताया।

''गलती की, तिसपर अपना समर्थन भी कर रही हो! मेरी दृष्टि में तुम सौ फी सदी अपराधिन हो।'' फिर दंडधर की ओर मुड़ते हुए पुजारी ने कहा, ''तुम हमारे शत्रु हो। कुलदेवी के हाथ के डमरू को चुराकर तुमने घोर अपराध किया। मंदिर में प्रवेश करके उसे अपवित्र कर दिया। तुम अपराधी हो। अपना अपराध मानते हो या नहीं?'' पुजारी ने पूछा।

''आपकी अनुमति के बिना गाँव में प्रवेश करना और डमरू को चुराना आपकी दृष्टि में अवश्य ही अपराध है, पर, मेरी बातों पर भी थोड़ा-सा ध्यान कीजिये। माँ वीरम्मा के महिमावान डमरू से हमारी प्रजा मरने से बच जायेगी। इस डमरू को चुराकर उसे फिर से वहीं रखने का मेरा आशय था। माँ वीरम्मा आपकी माँ है तो हमारी भी माँ है न? इसलिए मेरी दृष्टि में यह अपराध नहीं है।''

क्या तुम यह अपराध स्वीकार करती हो?'' उसने कठोर स्वर में रत्नांगि से पूछा।

''मुझे लगा कि गंडोलि जाति के लोगों से मैत्री, शत्रुता से बढ़कर सही होगी, इससे हम दोनों की जातियों को लाभ होगा, इसीलिए मैंने इससे परिचय बढ़ाया।''

''गंडोलि जाति से दोस्ती निभानी है, या शत्रुता, यह निर्णय करनेवाली तुम कौन होती हो? हमारे कुलपति के अधिकार को धिक्कारने का इतना साहस।'' पुजारी गरज उठा।

''कुलपति को धिक्कारने का न ही मेरा उद्देश्य है, न ही मेरी काबिलियत। फिर भी जनता के मन में ऐसी आकांक्षा उत्पन्न हो, तो उनके अनुसार प्रभु निर्णय ले सकते हैं और यह कोई नयी बात नहीं है। मैंने जो प्रयत्न किया, वह इस दिशा में

गोमांगो ने कुलपति की ओर मुड़कर कहा, ''हमारे गाँव में आना इसकी प्रथम ग़लती है, कुलदेवी के मंदिर में अन्यों का प्रवेश निषिद्ध है, इस नियम को तोड़कर इसने दूसरा पाप किया। ऐसे अपराधी का साथ दिया है, रत्नांगि ने। अतः इन दोनों के लिए मृत्यु दंड ही एकमात्र उचित दंड है। यह और लोगों के लिए भी चेतावनी साबित होगी।'' पुजारी ने गंभीर स्वर में कहा।

कुलपति का निर्णय सुनने के लिए सब लोग

बेचैन थे। कुलपति ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''पुजारी की बात में न्याय है। मैं इसे इनकार तो नहीं कर रहा हूँ, पर दंडधर की बातों में इससे भी बढ़कर न्याय है, धर्म है। इससे दोनों जातियों को शांति सुख प्राप्त होंगे। यह विशाल दृष्टिकोण का द्योतक है। इन्हें दंड देंगे तो धर्म का विनाश होगा। सभी को हानि पहुँचेगी। इस कारण, इन दोनों को क्षमा ही नहीं बल्कि इनका विवाह भी कराने का मैंने निश्चय किया है।''

जनता ने कुलपति के इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार किया। तालियाँ बजाकर उन्होंने इसका समर्थन किया।

गंडोलि के प्रमुख को यह समाचार सुनाने के लिए उसने एक दूत को भी भेजा।

दूत की बातें सुनते ही गंडोलि का कुलपति दंडोद्दंड आश्चर्य में डूब गया। संभलने के बाद वह सोच में पड़ गया।

जैसा सब लोग समझते हैं, असल में दंडधर गंडोलि जाति का नहीं था। जंगिणि कुलपति भल्लूकदमन का वह एकमात्र पुत्र था। दंडोद्दंड बड़ा ही दुष्ट था। एक दिन जब वह कुल के प्रमुख लोगों के साथ शिकार करने जंगल गया तब उसने उस गाँव का नाश करने के लिए हाथी का झुंड भेजा। जब प्रजा भय के मारे तितर-बितर हो गयी तब वह कुलपति के घर में घुस गया और उसके बेटे को चुराकर भाग निकला। हाथियों के आक्रमण से कितने ही लोग मर गये, इसलिए भल्लूकदमन ने सोचा कि उसका बेटा भी मर गया होगा। पर, दंडोद्दंड शिशु को ले आया और उसका नाम रखा दंडधर। उसका पालन पोषण करके बड़ा भी किया।

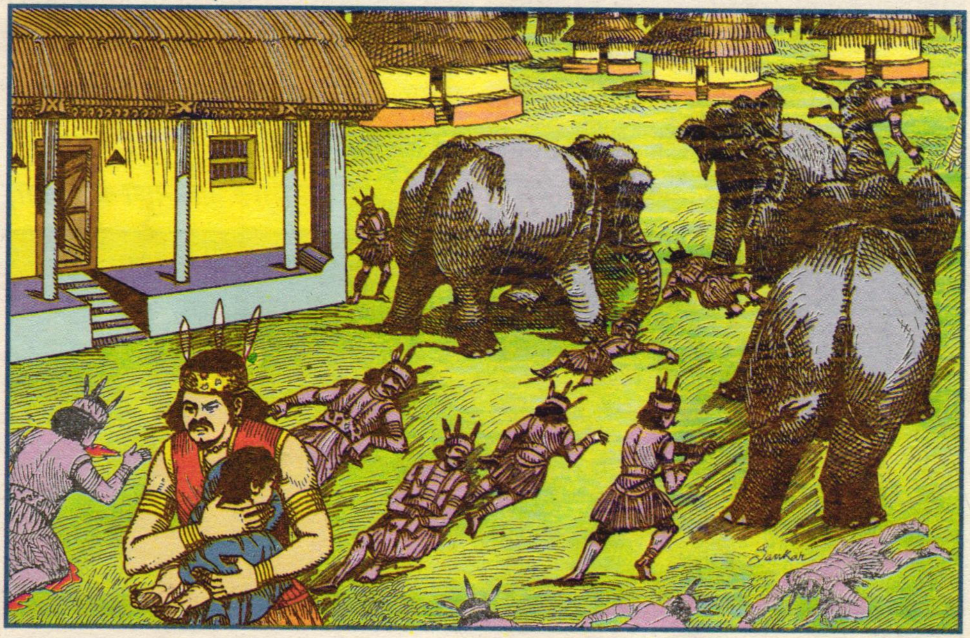

अब उसे खतरनाक जिम्मेदारी सौंपकर उसे वहाँ भेजा। उसके इस आश्चर्यजनक निर्णय को सुनकर वह हक्का-बक्का रह गया।

उसने फौरन गंडोति की जनता को बुलाकर कहा, "अब से हमें जंगिणि की जनता के साथ मैत्री करनी चाहिये। रत्नांगि और दंडधर का विवाह कल संपन्न होनेवाला है। हम सबको उस विवाह में उपस्थित होना चाहिये और अपनी मैत्री को साबित करनी चाहिये। भविष्य में हम एक-दूसरे के शत्रु नहीं, मित्र हैं।"

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा, "राजन्, रत्नांगि-दंडधर की बातों में जो वास्तविकता है, उससे भल्लूकदमन की सोचने की पद्धति में कायापलट हुआ, और यह आश्चर्य की बात नहीं है पर, क्या दुष्ट दंडोद्दंड का शत्रु भाव छोड़ना अजीब नहीं लगता? उसने जिस बच्चे को पाला-पोसा, उसके प्रति उसके हृदय में ममता भरी हुई थी। क्या इसी कारण से उसमें यह परिवर्तन आया? अथवा अपनी जाति के लोगों को विष ज्वर से बचाने के लिए उसने यह निर्णय लिया? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।"

विक्रमार्क ने कहा, "दंडोद्दंड में जो परिवर्तन आया, इसके लिए ये दोनों कारण नहीं हैं। इसके पीछे एक और प्रधान कारण है। चिरकाल से जो शत्रुता दोनों के बीच चली आ रही थी, इससे एक महान सत्य मालूम हो गया। भल्लूकदमन ने धर्म मार्ग अपनाया। इस वजह से उसका कितना ही भला हुआ। तद्वारा उसके जाने बिना ही उसके पुत्र की रक्षा हुई। दंडोद्दंड को प्रत्यक्ष रूप से यह विषय साबित हुआ। उसने यह सत्य जान लिया कि सुख-शांति से जीना हो तो धर्म-मार्ग ही सही मार्ग है। साथ ही उसने जान लिया कि दोनों के बीच में चलता हुआ यह बैर विनाश का ही कारण होगा और इससे लेश मात्र भी लाभ नहीं होगा। इसीलिए उसने शत्रुता छोड़ दी और मैत्री का हाथ बढ़ाया।" राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा। ***(आधारः अविनाश की रचना)***

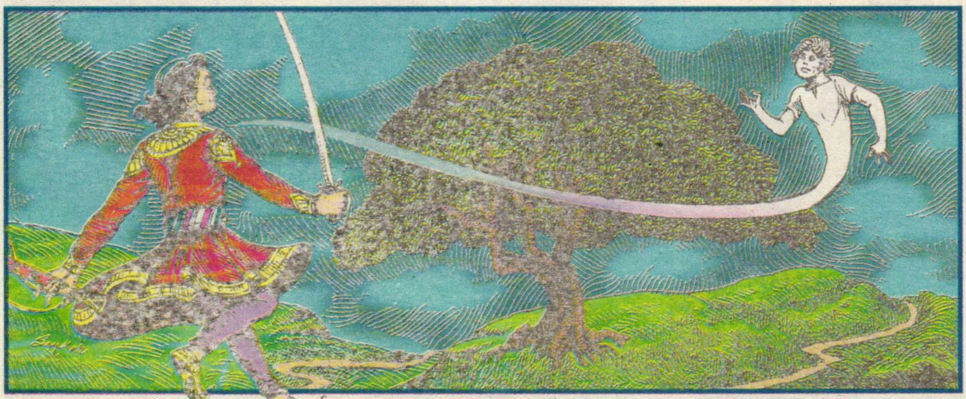

चॉकलेट से परेशान!

कौन ऐसा बच्चा होगा जो चॉकलेट पसन्द नहीं करेगा? लन्दन की रिबेका स्काऊक्राफ्ट नाश्ते में, दिन के भोजन और रात्रि के भोजन में चॉकलेट खाती है, क्योंकि वह कोई दूसरी चीज़ नहीं रखा सकती। वह उत्कट अन्न भय से पीड़ित है जो ब्रिटिश डॉक्टरों के अनुसार ब्रिटेन में प्रत्येक स्कूल के एक बच्चे को प्रभावित करता है। बेशक, हर मामले में चॉकलेट ही नहीं होता। रिबेका प्रत्येक दिन नाश्ते में कुकिंग चॉकलेट (वह नहीं जो आकर्षक बार पैक में आता है) के १५ स्केअर्स खाती है। यह स्कूल छात्रा दोपहर में लगभग १० चाकलेट फिंगर्स खाती है और रात में वह केवल चावल के कुरकुरे खा सकती है यदि वह पिघले चॉकलेट में मिश्रित हो। रिबेका कहती है कि उसे चॉकलेट से घृणा हो गई है। वह खिन्न होकर कहती है: ''चॉकलेट ने मेरे लिए जीना मुश्किल कर दिया है!''

मरने से पहले भोज

किसी की मृत्यु के पश्चात विशेषकर आयु पूरी होने पर वृद्धावस्था में मरने के बाद एक खास तिथि पर, सम्बन्धियों और मित्रों को सम्मिलित कर शोक मनाने वालों के लिए भोज का आयोजन अनेक हिन्दू परिवारों में एक रिवाज है। पटना की एक धनी महिला फुल झरिया को दुनिया से इतनी जल्दी विदा लेने की आशा नहीं है, फिर भी, वह निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि उसके मरणोपरान्त उसकी स्मृति में कोई भोज देगा। इसलिए उसने अपने गाँव तथा पड़ोसी गाँवों और शहरों के लोगों को एक पार्टी देने का निश्चय किया। अन्त में दो दिनों तक चलनेवाले भोज में एक लाख व्यक्ति शामिल हुए। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि काफी लोग सिर्फ भगवान से यह प्रार्थना करके लौट गये होंगे कि इस सम्मानीय महिला के स्वर्गवास होने पर स्वर्ग के द्वार खुले रहें। इस सम्पन्न विधवा ने, रिपोर्ट के अनुसार, भोज पर १६ लाख रुपये खर्च किये। आखिरकार, वसीयत करने के लिए कोई नहीं है।

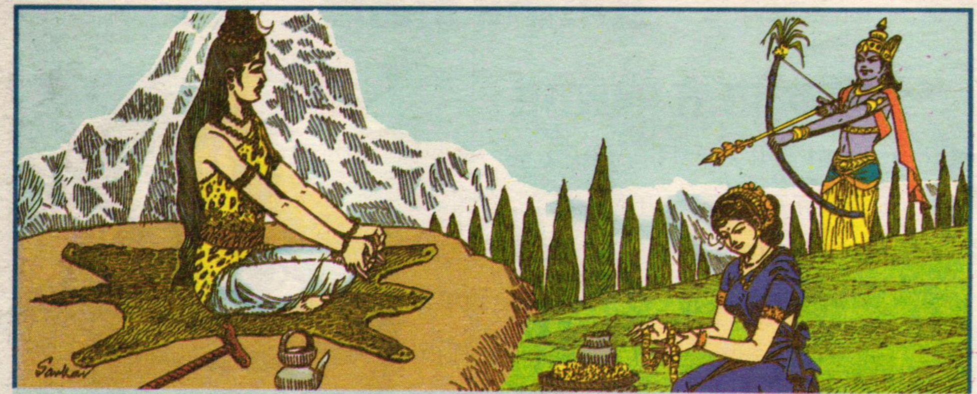

कुमार स्वामी

कुमारस्वामी भारतीय पुराण वाङ्गमय के एक अत्यन्त लोकप्रिय देव युवा नायक हैं। ये देवताओं के पक्ष के महायोद्धा माने जाते हैं। ये देवसेना के सेनापति हैं और इनका वाहन मयूर पक्षी है।

अन्योन्य दांपत्य के प्रतीक हैं, पार्वती-परमेश्वर, तीनों लोकों के माता-पिता। उन मूल दंपति के प्यारे पुत्र बनकर जन्म लेनेवाले और लोक हित के लिए देव सेनाओं का नेतृत्व संभालनेवाले वीर कुमार थे, कुमारस्वामी।

तारकासुर वरांगि-वज्रांग का पुत्र था। उसने कठोर तपस्या की और ब्रह्मा से प्राप्त प्रभावशाली वरदानों के कारण तीनों लोकों पर विजय पायी। अपने बल पर उसे अपार गर्व था, इसलिए वह ऋषियों, देवताओं और साधुओं को सताने लगा।

उसके अन्याय और अत्याचार से स्वर्ग के देवता ही नहीं, बल्कि पृथ्वी लोक के साधु, तपस्वी, सत्य के साधक सभी त्राहि त्राहि करने लगे। जहाँ कहीं यज्ञ-याग या धर्म-कर्म होता, वहाँ तारकासुर के राक्षस उसे भंग कर देते और ऋषि मुनियों को मार देते। देवता असुरों की शक्ति के सामने असहाय हो गये।

जब तारकासुर के अन्याय व अत्याचारों को देवता सह नहीं पाये, तब उसका अंत करने का कोई मार्ग सुझाने के लिए उन्होंने ब्रह्मा से विनती की। ब्रह्मा ने उनसे बताया कि शिव का पुत्र ही तारकासुर का अंत कर सकता है। इसके अतिरिक्त उसके संहार का कोई उपाय नहीं हैं। मेरे वरदानों के कारण कोई अन्य देवता उसका वध नहीं कर सकता।

ठीक उसी समय परमशिव अविचल वैराग्य का आचरण करते हुए कैलास में तपस्या में मग्न थे। हिमवंत चाहते थे कि उनकी पुत्री पार्वती

पौराणिक युवा नायक - ७

शिव की परिचर्या करे। शिव इसके लिए सन्नद्ध नहीं थे, पर हिमवंत उन्हें मनाने में सफल हुए।

देवता चाहते थे कि परमशिव, पार्वती से प्यार करें, वे दोनों दंपति बनें। देवताओं की इच्छा के अनुसार इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर कामदेव ने शिव पर पुष्प बाणों का प्रयोग किया। कामदेव के इस कार्य पर शिव क्रोधित हो उठे और फलस्वरूप वह भस्मीभूत हो गया।

शिव से विवाह करने के लिए पार्वती ने निद्रा और आहार को त्याग दिया और कठोर तपस्या शुरू कर दी। उनकी तपस्या और अपने प्रति उनका प्रेम और भक्ति देखकर शिव ने पार्वती के प्रेम की परीक्षा ली। शिव में भी क्रमशः उनके प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। वे पार्वती से विवाह के लिए तैयार हो गये। अंत में सप्त ऋषियों की मध्यस्थता में शिव पार्वती का विवाह निश्चित हुआ।

ब्रह्मा पुरोहित बने तो विष्णु साले। इंद्र आदि देवता, ऋषिगण सदस्य बने और शिव पार्वती का विवाह बड़े ही वैभव के साथ संपन्न हुआ।

इस बीच तारकासुर के अत्याचार दिन ब दिन बढ़ने लगे। सब देवताओं ने परमशिव की स्तुति की, उन्हें प्रसन्न किया और एक होकर कहा, ''तारकासुर की हिंसाएँ बढ़ती जा रही हैं, असहनीय हो रही हैं। उसने पृथ्वी पर तप, धर्म और सत्य को निर्मूल कर दिया है। पाप पराकाष्ठा पर है। पाप के भार से पृथ्वी त्राहि त्राहि कर रही है। हम में से किसी की शक्ति से उसका अंत संभव नहीं है। इसलिए कृपा करके उसका अंत करने के लिए अपने ही अंश से एक पुत्र की सृष्टि कीजिये।''

शिव ने त्रिलोक की रक्षा के लिए अपने ही अंश से एक शिशु की सृष्टि की। पार्वती की अनुमति लेकर, अग्निदेव की सहायता से वायुदेव ने उसे

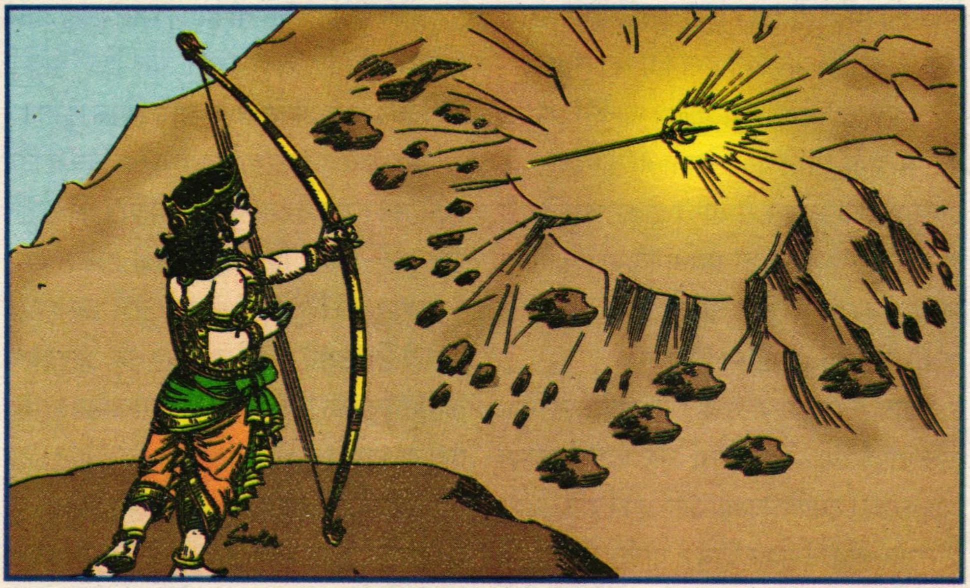

गंगा तट की झाड़ियों में छोड़ दिया। तब छे मुनि पत्नियाँ वहाँ आयीं और उस शिशु को दूध पिलाया। शिशु अति सुंदर लगता था। उसके सुंदर छे मुख थे, बारह हाथ थे और उसका शरीर वज्र की तरह कठोर था। ब्रह्मा आये और उस शिशु का नाम रखा, कुमारस्वामी। स्कंद, षन्मुख, गुह, कार्तिकेय आदि नाम भी शिशु के हैं।

कुमारस्वामी वर्धमान होते गये । वे पर्वतों पर घूमते हुए सिंहों और बाघों को पकड़कर, उनपर बैठते थे। एक दिन उसने शिव का वह धनुष देखा, जिससे उन्होंने त्रिपुरासुर का संहार किया था। उसे उन्होंने अपने हाथ में लिया और उसकी डोरी खींची। इस ध्वनि से भयभीत दोनों दिग्गज उसपर आ गिरे तो उस धनुष से बाण बरसाकर गेंद की तरह खेला। इसके बाद, उसी धनुष से बाण चलाकर क्रौंच पर्वत के शिखर का छेदन करके वहाँ के राक्षसों की भीड़ का संहार किया, जिनमें शामिल थे, शूरपद्म, अंधकासुर आदि। उसके अद्भुत पराक्रम की प्रशंसा की इंद्र ने और दो घंटियाँ पुरस्कार में उन्हें दीं।

इसके बाद पिताश्री की आज्ञा के अनुसार पुष्पक विमान में वे कैलास पहुँचे। पार्वती-परमेश्वर ने उन्हें बड़े ही प्यार से अपने बग़ल में बिठाया। ब्रह्मा ने कुमारस्वामी को देवसेना का अधिपति बनाया। तब पार्वती-परमेश्वर ने देवसेनाधिपति की सहायता करते हुए दुष्टों और पापियों का संहार किया और यों उन्होंने तीनों लोकों की रक्षा की। उन्होंने पुत्र को आशीर्वाद दिया और कहा कि हर स्थान पर तुम्हारा गौरव हो, हर कोई तुम्हें चाहे।

देवताओं ने कुमारस्वामी को अनेक वरदान दिये और अस्त्र, शस्त्र, आयुध देकर तारकासुर

का वध करने भेजा। कुमारस्वामी देवरुद्र, देवभद्र आदि वीरों व अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित देवसेनाओं को लेकर निकल पड़े।

यह समाचार पाकर तारक मंत्रियों की सलाह लेकर युद्ध के लिए सन्नद्ध हुआ। कुमारस्वामी ने युद्ध के पहले संधि के लिए विशाख को दूत बनाकर भेजा। किन्तु तारक ने अपने अधिकार को छोड़ने के लिए साफ़-साफ़ इनकार किया। उसे अपने अपराजेय बल पर घमंड था। उसे विश्वास था कि देवता उसे परास्त नहीं कर पायेंगे चाहे जितनी बार भी उससे युद्ध करें। वह अहंकारी और दम्भी था। देवता पहले ही उससे डरे हुए थे। इसलिए उसने संधि का प्रस्ताव ठुकरा दिया और युद्ध के लिए आह्वान भेजा।

दूसरे दिन युद्ध शुरू हुआ। दोनों पक्षों की सेनाएँ जमकर युद्ध करने लगीं। कुमारस्वामी ने पाशुपतास्त्र का प्रयोग कर राक्षसों को निर्मूल कर दिया और ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके तारक का संहार किया। देवताओं ने प्रसन्न होकर पुष्प बरसाये।

माता-पिता की आज्ञा के अनुसार जो बचे-खुचे दुष्ट राक्षस थे, कुमारस्वामी ने उनका भी संहार किया। देवताओं, ऋषियों के आनंद की सीमा नहीं रही।

इसके उपरांत उन्होंने भूलोक के भील राजा पुलिंद की पुत्री की सुंदरता के बारे में त्रिलोक संचारी नारद के द्वारा जानकारी पायी और उससे विवाह किया। स्कंद के शौर्य-पराक्रम पर मुग्ध होकर इंद्र ने अपनी पुत्री का विवाह उनके साथ किया।

सत्य, प्रेम, दया, करुणा आदि दिव्य-गुण जब मानव में होते हैं, तब मानव जीवन सुख-शांति और आनंद के साथ आगे विकसित होता है। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसे तामस गुण जब मानव में भरे हुए होते हैं, तब वह शांति सुख से दूर हो जाता है और जीवन विकृत हो जाता है। सुख-शांति को स्थापित कर कुमारस्वामी ने इस सत्य को साबित किया। यह पौराणिक वीर कुमार सर्वथा पूज्य है।

इसी कारण से देवसेना समेत सुब्रह्मण्य स्वामी भी अशेष व असंख्य प्रजा की पूजाओं को स्वीकार करने के योग्य बने।

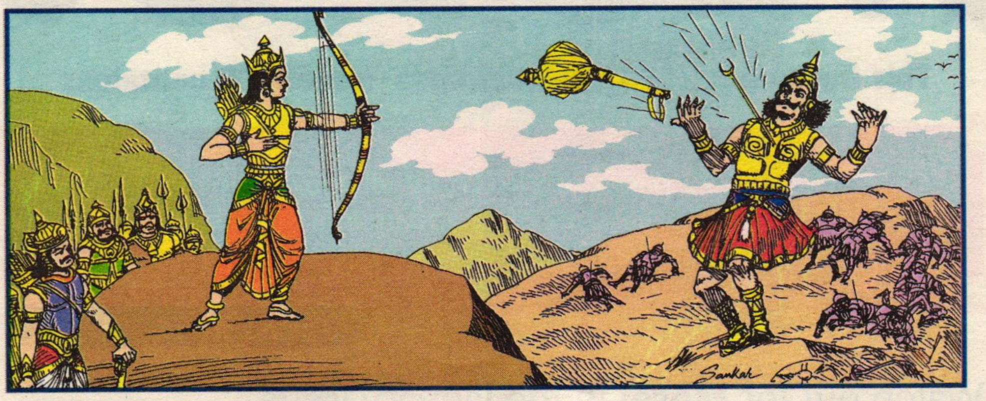

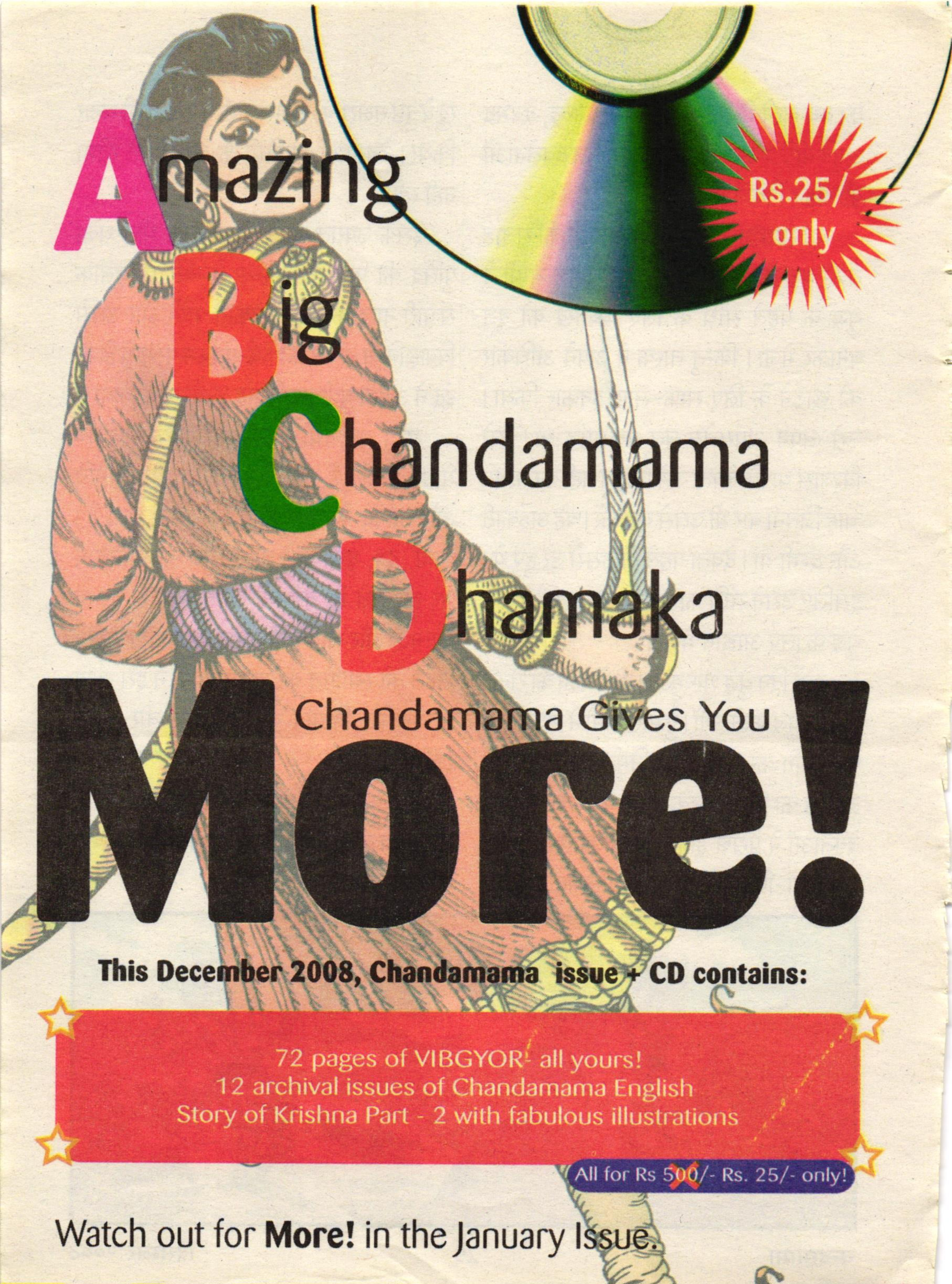
Amazing
Big
Chandamama
Dhamaka
Chandamama Gives You
More!
Rs.25/- only
This December 2008, Chandamama issue + CD contains:
72 pages of VIBGYOR- all yours!
12 archival issues of Chandamama English
Story of Krishna Part - 2 with fabulous illustrations
All for Rs 500/- Rs. 25/- only!
Watch out for More! in the January Issue.

अधित्यका की सुन्दर कुमारी

भारत के सुदूर पूर्वी हिस्सों में प्रसिद्ध सिरॉय कुमुदनी– अधित्यका की सुन्दर कुमारी का प्रदेश है जिसे दूर-दूर के लोग देखने आते हैं। कहा जाता है कि उस फूल का ऐसा जादुई प्रभाव होता है कि इसे देखने के लिए हर साल शिरुई पहाड़ी पर जाने का मन करने लगता है। अविजीत ने कुमुदनी के विषय में इतना अधिक सुन रखा था कि वह एक न एक दिन शिरुई पहाड़ी पर जहाँ यह फूल खिलता है, जरूर जायेगा, उसे ऐसी उम्मीद थी। भाग्य से, मध्य मई में एक दिन अविजीत तथा उसके मित्र विक्रम और अनिल को शिरुई पहाड़ी पर इम्फाल से जाने वाले कुछ युवकों के एक दल में शामिल होने का मौका मिल गया। यह पहाड़ी मणिपुर के पहाड़ी जिला उख्रुल में स्थित है और राज्य की राजधानी इम्फाल से ८२ कि.मी. की दूरी पर है।

पहाड़ की सर्पिल सड़क पर घूमती बस की खिड़की से बाहर का दृश्य देख कर अविजीत अपनी उत्तेजना को रोक न सका और पर्वतीय विस्मयकारी दृश्य को देख कर अभिभूत हो गया। स्फूर्तिदायक शीतल वायु के झोंके उनके चेहरों को स्पर्श कर रहे थे और उनके बाल हवा के साथ उड़ रहे थे। हवा की लहरों के संग बस की सवारी में एक अद्‌भुत आनन्द की अनुभूति थी।

"देखो, उख्रुल आ गया!" उसका दोस्त अनिल चिल्ला पड़ा। अविजीत ने नजर उठा कर देखा, काफी दूरी पर वह पहाड़ी शहर प्रातःकाल के कोहरे से आधा ढका दिखाई दे रहा था। ग्रीष्म में भी, जब वर्षा होती है, उख्रुल शहर घने कुहासे की चादर में छिप जाता है। "काश! इम्फाल जो गर्मी में पसीना और धूल से भर जाता है, उख्रुल की तरह शीतल होता," उसने कामना की। सिरॉय गाँव उख्रुल से १४ कि.मी. और पूरब है। शहर में लाल चाय के लिए थोड़ी देर रुक कर बस उस गाँव की ओर चल पड़ी।

गाँव के निकट पहुँचने पर उन्होंने कुछ दूरी पर शिरुई पहाड़ी देखी। उसकी चोटी घने कुहासे में छिपी हुई थी। शीघ्र ही, वे शिरुई पहाड़ी के पादस्थल पर पहुँच गये। शिरुई पहाड़ी उसके सिर के ऊपर ऊँची मीनार की तरह खड़ी भी है।

"वाउ! हमें काफी दूर तक चढ़ाई करनी पड़ेगी," उसने दोस्तों से कहा।

पादस्थल पर, ट्रेकिंग पायण्ट के निकट चेक पोस्ट की ड्यूटी पर कुछ युवक थे जिनमें से कुछ पहाड़ी के ऊपर जानेवालों को टिकट दे रहे थे और कुछ पहाड़ी के ऊपर से आनेवाले ट्रेकर्स को रोक कर उनके रकसैक्स की तलाशी ले रहे थे। "ये लड़के क्या कर रहे हैं?" अविजीत को सन्देह हुआ। शीघ्र अविजीत तथा उसके दोस्त उनसे बातचीत करने लगे। वे लोग निकटवर्ती गाँव के थे और सिरॉय यूथ क्लब के सदस्य थे। उनका स्वयंसेवकों का एक दल था जो संगठित होकर सिरॉय कुमुदनी की रक्षा तथा संरक्षण के लिए काम कर रहे थे।

"फूल और इसके पौधे की रक्षा की क्यों जरूरत है?" विक्रम ने पूछा।

"मई महीने में फूल खिलने के मौसम के समय मणिपुर तथा इसके बाहर से पहाड़ी पर सैकड़ों भ्रमणार्थी आते हैं," एक क्लब के सदस्य ने समझाया, "परन्तु कुछ वर्षों के बाद हमलोगों ने महसूस किया कि ये पर्यटक सिरॉय कुमुदनी का सर्वनाश कर रहे हैं। ये यांत्री कुमुदनी पौधे को रौंदते हुए चलते थे या चलते-चलते उसे जड़ से उखाड़ लेते थे। ये फूलों को लापरवाही से तोड़ लेते थे और बाद में मसल देते या उनके टुकड़े-टुकड़े कर देते।"

"हमलोगों में से कुछ लोगों ने महसूस किया कि इसे रोकना होगा अन्यथा बहुत जल्द शिरुई पहाड़ी से सिरॉय कुमुदनी का सत्यानाश हो जायेगा।" एक और सदस्य ने आगे कहा।

"अब हमलोग आगन्तुकों को टिकट देते हैं और यह अनुरोध भी करते हैं कि वे पौधों को नष्ट न करें और पहाड़ी को स्वच्छ रखें। और जब वे नीचे वापस आते हैं तब हम तोड़े हुए फूलों और उखाड़े हुए पौधों को देखने के लिए उनके थैलों की तलाशी लेते हैं। इस नियम को भंग करने वाले को प्रत्येक तोड़े गये फूल के लिए ५०/- रु.और प्रत्येक उखाड़े गये पौधे के लिए ५००/- रु का जुर्माना करते हैं।"

और पूछताछ करने पर सिरॉय यूथ क्लब के स्वयंसेवकों ने अविजीत और उसके दोस्तों को बताया कि उनलोगों के लिए पहाड़ी के ऊपर पहरा देना और फूलों की रातदिन रक्षा करना निरन्तर वर्षा और तेज हवा के कारण कठिन होता है।

अविजीत और उसके मित्र बहुत प्रभावित हुए और पहाड़ी के ऊपर जाकर सिरॉय यूथ क्लब के सदस्यों के द्वारा किये जा रहे अच्छे कार्यों का परिणाम देखने के लिए और भी उत्सुक हो गये।

"प्रसंगवश यह बता दूँ इताओ (मणिपुरी में इसका अर्थ मित्र) कि 'सिरॉय' कहना अशुद्ध है। इसका सही उच्चारण 'शिरुई' है। उख्रुल के लोग कुमुदनी को इसी नाम से जानते हैं।" शुल्क की रसीद बनानेवाले सदस्य युवक ने कहा। "दूसरे महायुद्ध के समय जो अंग्रेज यहाँ आये थे उन्होंने इसे 'सिरॉय' कह कर पुकारा। वास्तव में, हमलोगों की तंगखुल भाषा में कुमुदनी को तिमरावोन कहते हैं। तिमरा यानी कुमुदनी और वोन यानी फूल।"

अपने दोस्तों के साथ अविजीत दुरारोह शिरुई पहाड़ी पर जब चढ़ रहा था तब वह मणिपुर के अन्तर्गत ही भाषा की विविधता पर सोचने लगा।

शीघ्र ही वे हाँफने लगे और पसीना-पसीना हो गये। "छिः! हम समतल निवासी पर्वतारोहण के योग्य नहीं है!" उसने हाँफते हुए अनिल से कहा। "सचमुच, इस खड़ी ढाल का पहाड़ी रास्ता मेरी जान ले रहा है!" अनिल बोला।

पहाड़ी की चोटी पर वे जैसे ही पहुँचे, वहाँ के सौन्दर्य की अनुपम छटा को देख कर विस्मयाकुल हो गये। कुछ दूरी पर एक हरे और गुलाबी रंग की कालीन बिछी थी। सैकड़ों मनोरम सिरॉय कुमुदनी के फूल हवा के साथ झूल रहे थे। यह देख कर वे अपनी सारी थकान भूल गये। वहाँ समुद्र तल से ८३०० फुट से अधिक ऊँचाई पर, तूफानी हवा और हलकी झीसी तथा उपाल्पीय घास की हरी कालीन के बीच अविजीत तथा उसके दोस्तों ने अधित्यका की सुन्दर कुमारियों के साथ एक अद्‌भुत चैन का अनुभव किया। उन्होंने इस बात पर गर्व महसूस किया कि मणिपुर के अलावा दुनिया के किसी कोने में भी यह कुमुदनी नहीं मिलती। अविजीत ने आँखें बन्द कर लीं, और अपने अन्दर शुद्ध पर्वतीय हवा भर ली। वे शिरुई पहाड़ी की यात्रा की सफलता पर बड़े प्रसन्न थे।

अविजीत और उसके दोस्तों ने चारों ओर देखा तो उनके हर्ष की सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि कहीं, न कोई फूल टूटा हुआ है और न कोई पौधा उखड़ा हुआ है।

"ओह! वे सिरॉय यूथ क्लब के सदस्य इस पहाड़ी के रक्षक हैं। ईश्वर को धन्यवाद है, कि कम से कम कुछ लोग तो ऐसे हैं जो उत्साह के साथ कुमुदनी की रक्षा कर रहे हैं।" अविजीत ने कहा। वे पहाड़ी की खोज-बीन करने के लिए कुछ देर वहाँ रुके और समय बिताया।

वापस होते हुए वे क्लब के सदस्यों से पुनः मिले। इस बार उन्होंने शिरुई पहाड़ी तथा फूलों को बचाने के उनके प्रयास के लिए उन्हें बधाई दी। "हमें आप लोगों पर गर्व है। आप लोग बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। इसे करते रहें।" अविजीत और उसके दोस्तों ने स्वयंसेवकों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने नये दोस्तों से आदान-प्रदान तथा सिरॉय यूथ क्लब के सदस्यों की मदद और समर्थन के वादे के साथ उन्हें अलविदा कहा।

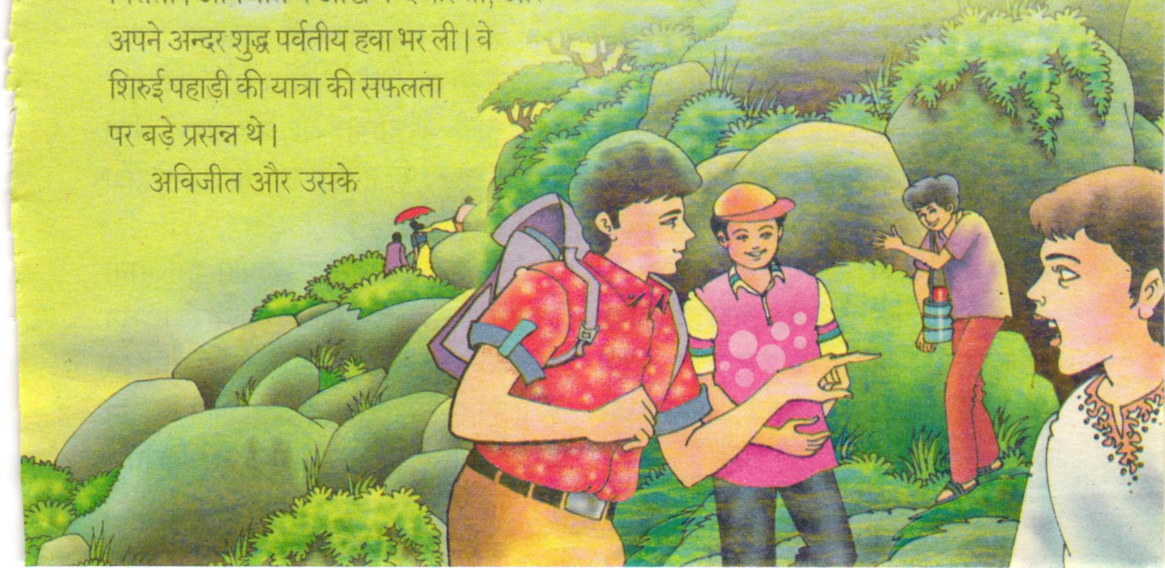

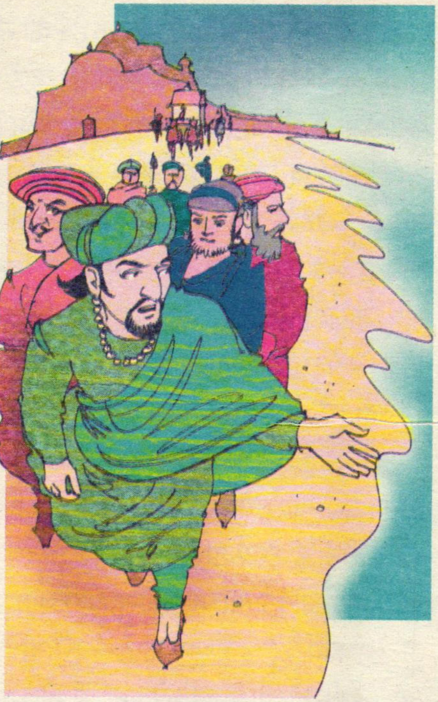

आँखें और बेआँखें

बादशाह अकबर को नदी और इसके बदलते रूपों को देखना बहुत अच्छा लगता था। अपने दरबारियों के संग नदी किनारे सैर करना भी उन्हें बेहद पसन्द था।

एक दिन आकाश मेघाच्छन्न था। अचानक बारिश आ जाने पर शाही दल को ले जाने के लिए तैयार उनके पीछे-पीछे कुछ दूरी पर कुछ घोड़ा-गाड़ियाँ चल रही थीं।

''नदी बड़ी बदमिजाज है,'' बादशाह अकबर ने बहती नदी की लहरों के तेज उतार-चढ़ाव और उसकी गड़गड़ाहट को देख कर अपना विचार दिया।

''बिल्कुल शहनशाह की तरह,'' बीरबल ने चुटकी ली।

''मैं जैसा हूँ हमेशा वैसा ही रहता हूँ,'' बादशाह ने विरोध प्रकट किया।

''फिर भी मनमौजी, सनकी,'' बीरबल ने हार नहीं मानी, ''शहनशाह! ज्यादातर आप मेहरबान और रहमदिल रहते हैं, परन्तु हमेशा नहीं! जब आप को गुस्सा आता है, तब आप धधकती ज्वालामुखी बन जाते हैं। आप नदी के समान हैं। आप भी कभी-कभी सनकी और तरंगी हो जाते हैं, शहनशाह!'' बीरबल ने आगे कहा।

''मैंने पहले इसे क्यों नहीं देखा?'' बादशाह की आवाज थोड़ी-सी काँप गई।

''शहनशाह! यह आप का दोष नहीं है। हमलोग प्रत्यक्ष या सामने दीखनेवाली चीज़ को हमेशा नहीं देख पाते। यहाँ तक कि आँखवाले भी अक्सर अन्धे बन जाते हैं।''

''आपने उसकी बात सुनी, शहनशाह? उसने कहा कि हम सब कभी-कभी अन्धे हो जाते हैं।'' एक दरबारी जो बीरबल और बादशाह के बीच दरार पैदा करने की ताक में था, मौके का फायदा उठाते हुए बोला।

''बीरबल!'' बादशाह छटपटा गये मानो उनके मर्मस्थल में डंक मार दिया गया हो। ''तुम कमबख्त! तुम कहते हो कि मैं कभी अन्धा बन जाता हूँ। तुम्हें यह साबित करना होगा या मरने के लिए तैयार हो जाओ!'' बादशाह ने धमकाया।

"शहनशाह! मुझे एक हफ़्ते की मोहलत दीजिये और मैं यह सिद्ध कर दूँगा कि धरती के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी कभी-कभी अन्धे के समान आचरण करते हैं।" बीरबल ने हर शब्द को नाप-तौल कर स्पष्ट रूप से कहा पर फिर भी वह सावधान था।

"तुम्हारे पास अपनी बात को साबित करने के लिए सिर्फ एक सप्ताह है। कर दोगे तो बच जाओगे। यदि नहीं..." बादशाह अचानक मुड़ कर चले गये।

बीरबल ने कोशिश की कि दल के साथ रहे, परन्तु बादशाह ने उसकी तरफ उंगली का इशारा करते हुए कहा, "नहीं, मैं एक क्षण के लिए भी तुम्हारा चेहरा देखना नहीं चाहता।"

बीरबल भाँप गया कि बादशाह क्रोध से अन्धे हो रहे हैं। "क्रोध शान्त होने में समय लगेगा और यह तब तक नहीं होगा, जब तक मैं अपने कथन को सिद्ध न कर दूँ। मेरे पास एक सप्ताह का समय है।"

क्रोध कभी भी अधिक देर तक नहीं रहता। बादशाह दो-तीन घण्टों में शान्त हो गये। उन्होंने तब बीरबल को वापस बुलाने का निश्चय किया। उन्हें उम्मीद थी कि बीरबल शीघ्र ही लौट आयेगा। परन्तु वह छः दिनों तक दरबार से दूर रहा। अकबर को उसकी कमी काफी खलती रही।

सातवें दिन प्रातःकाल एक दरबारी घोड़े पर सवार हो नदी में स्नान करने के लिए गया। वह घोड़े से उतरा और एक तरफ पत्थर के खम्भे से घोड़े को बाँध कर घाट की ओर बढ़ा। उसने तभी देखा कि एक नीम के पेड़ की छाया में कोई सुनली से एक चारपाई बुनने में काफी व्यस्त है। इससे पूर्व उसने नदी किनारे किसी को ऐसा काम करते हुए कभी नहीं देखा था। इससे उसकी उत्सुकता बढ़ गई। वह उसके पास गया। उस आदमी को पहचान कर दरबारी भौचक रह गया। चारपाई बुनने वाला और कोई नहीं, स्वयं बीरबल था।

"बीरबल!" दरबारी चिल्ला पड़ा। बीरबल सिर उठा कर मुस्कुराने लगा। "क्या कर रहे हैं आप?"

बीरबल एक शब्द भी नहीं बोला। बल्कि उसने बगल में रखा एक पैड उठाया और उस पर कुछ लिखा। फिर अपने काम में मशगूल हो गया।

"बताओ तो सही बीरबल, तुम क्या कर रहे हो?" दरबारी ने इस बार ऊँची आवाज में पूछा। फिर भी उसे कोई उत्तर नहीं मिला। बीरबल अपने काम में काफी डूबा हुआ जान पड़ा।

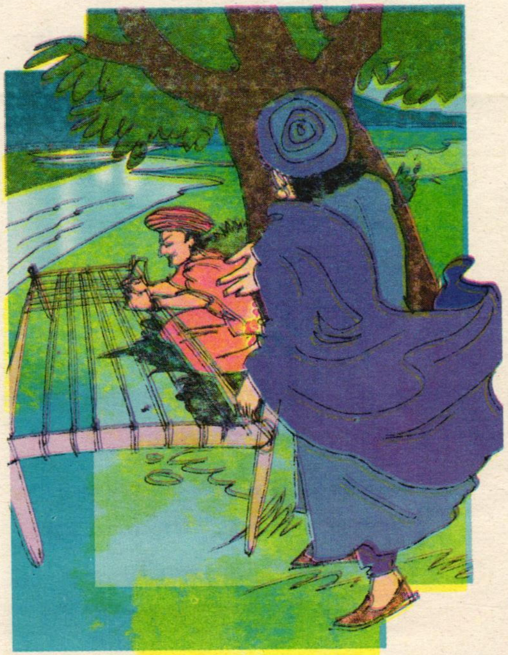

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

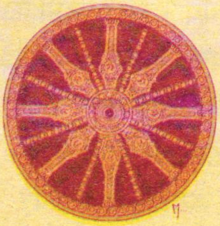

इस महीने की प्रश्नोत्तरी स्मारकों पर केन्द्रित है:

१. पंजाब में अमृत सरोवर लेक के निकट कौन-सा मन्दिर है?

२. एक मन्दिर के सरोवर के केन्द्र में एक ऊँचा ब्रास लैम्प है। यह मन्दिर दक्षिण भारत में है। यह कहाँ है?

३. एक सन्त का शरीर संगमरमर तथा चाँदी की एक पेटी में संरक्षित है। यह कहाँ है? सन्त का नाम क्या है?

४. एक ८०० वर्ष पुराना किला रेगिस्तान के बीचोबीच निर्मित किया गया है। इस किले का नाम क्या है?

५. यह मन्दिर एक रथ के आकार में है जिसमें १२ जोड़े पहिये लगे हैं। यह कहाँ स्थित है?

६. एक स्मारक में, एक बड़े गुम्बद पर इसके केन्द्र में एक घूमती हुई ताम्र आकृति है। स्मारक का नाम क्या है?

७. यदि तुम्हें १९४ गोम्पा या बौद्ध विहारों को देखना हो तो तुम कहाँ जाओगे?

८. इस मस्जिद में एक अवशेष के रूप में सम्पूर्ण कुरान शरीफ एक हिरण-चर्म पर लिखा हुआ है। इस मस्जिद का नाम क्या है?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

''समझ नहीं पा रहा हूँ यह क्या कर रहा है?'' दरबारी अपने आप बुदबुदाया।

एक घण्टे के बाद वह शाही दरबार में पहुँचा। कुछ दरबारी पहले से मौजूद थे।

''शहनशाह! मैंने बीरबल को नदी के किनारे पर देखा।''

''स्नान करने गया होगा,'' इसमें बादशाह को कुछ बेतुका नहीं लगा।

''शहनशाह! वह एक नीम पेड़ की छाया में चारपाई बुन रहा था।''

''पागल हो गये क्या? बेवकूफ!'' बादशाह को विश्वास नहीं हुआ।

''शहनशाह! मैं सच और केवल सच कह रहा हूँ,'' दरबारी बोला।

बादशाह ने स्वयं अपनी आँखों से इसे देखने का निश्चय किया। वे नदी के सामने पहुँचे। इनके साथ कुछ दरबारी भी गये। नदी के सामने सब ने बीरबल को नीम पेड़ की छाया में चारपाई बुनते देखा।

''जाओ, पता करो, वह क्या कर रहा है?'' बादशाह ने दरबारियों से कहा।

सबसे पुराने दरबारी ने बीरबल के पास जाकर उसका अभिवादन किया। बीरबल उसे देख कर मुस्कुराया। ''बीरबल, क्या कर रहे हो?'' दरबारी ने पूछा। बीरबल सिर्फ मुस्कुरा कर रह गया। उसके होंठों से एक लब्ज तक न निकला। बल्कि उसने अपना पैड उठाया और उस पर जल्दी से कुछ लिख लिया। फिर पैड रख कर चारपाई बुनने में लग गया।

''लगता है वह पागल हो गया है,'' दरबारी ने बादशाह के पास वापस जाकर कहा।

बादशाह और दरबारियों का इन्तजार करते रहे जो एक-एक कर बीरबल के पास गये और उससे पूछा कि वह क्या कर रहा है। जब भी कोई प्रश्न पूछता तो बीरबल पैड पर कुछ लिख लेता, पर कुछ बोलता नहीं था।

''क्या वह गूंगा हो गया?'' बादशाह को सन्देह हुआ।

''हो सकता है वह बहरा भी हो गया हो,'' एक दरबारी ने कहा। बादशाह स्वयं इसकी जाँच करना चाहते थे। वे बीरबल के निकट गये और उसे नाम से पुकारा। बीरबल ने जल्दी से हाथ की रस्सी छोड़ दी और बादशाह को सलाम किया।

''बीरबल! क्या कर रहे हो?''

बीरबल मुस्कुरा पड़ा। उसने फिर अपना पैड उठा कर उस पर कुछ लिख लिया।

''तुमने पैड पर क्या लिखा?'' बादशाह यह जानने के लिए उत्सुक थे।

''शहनशाह! मैंने उन लोगों की सूची में आप का नाम लिख लिया है जिनकी आँखें तो हैं, पर व्यवहार ऐसा करते हैं मानों उनकी आँखें नहीं हैं।'' बीरबल ने पैड बादशाह की तरफ बढ़ा दिया।

''बीरबल!'' बादशाह की आवाज में तेज चाकू की धार थी। ''फिहरिस्त में मेरा नाम भी तुमने शामिल कर लिया?''

''हाँ शहनशाह, क्योंकि आपने भी मुझसे सवाल कियाः क्या कर रहे हो? क्या आपने देखा नहीं कि मैं चारपाई बुन रहा था? अतः मुझसे यह पूछने की जरूरत क्या थी कि मैं क्या कर रहा था जब तक कि...।'' बीरबल ने ''आप अन्धे न हों''– ये शब्द अनकहे छोड़ दिये।

बादशाह को अपना गुस्सा काबू करने में थोड़ा वक्त लगा।

''शहनशाह! मैंने पिछले हफ़्ते आप से कहा था कि हमलोगों में से बुद्धिमान भी कभी-कभी अन्धे बन जाते हैं। आप आग बबूला हो गये और मुझसे यह साबित करने के लिए कहा कि मैं ठीक कह रहा हूँ। उम्मीद है, आप मुझे माफ कर देंगे, पर, मैं अपने इस विश्वास पर कायम हूँ कि हम सब, यद्यपि अन्धे नहीं हैं, कभी-कभी ऐसा व्यवहार करते हैं मानों हमारी आँखें नहीं हैं,'' बीरबल धीमे से बुदबुदाया।

''बीरबल, तुम ठीक कहते हो,'' बादशाह ने ठठा कर हँसते हुए कहा।

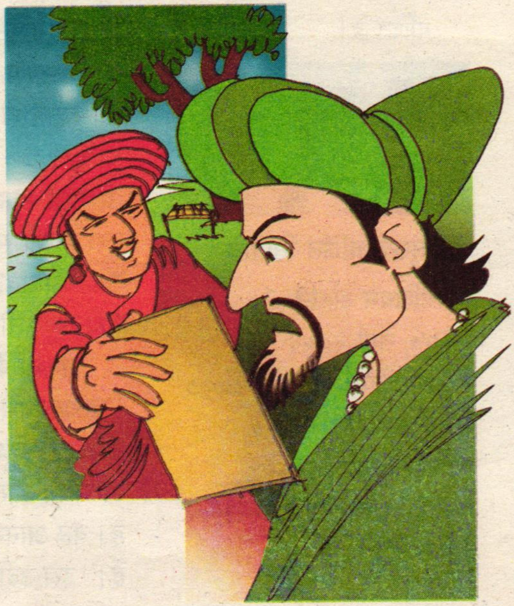

उदीयमान सितारा

अनका अलंकामोनी

अनका ने ६ वर्ष की आयु से ही टेनिस खेलना आरम्भ किया। तीन वर्षों तक खेलने के पश्चात उसने टेनिस छोड़ दिया और स्क्वैश खेलने लगी। (कारण जानने के लिए ट्रिविया बार देखें) यह आत्मविश्वास से परिपूर्ण बालिका अभी कुल १४ वर्ष की है, पर इसके नाम कितने ही अन्तर्राष्ट्रीय खिताब दर्ज हो चुके हैं। उसके मूल्यांकन के अनुसार यू-१५ एशियन जूनियर चैम्पियनशिप (२००८) उसका सबसे मुश्किल टूर्नामेण्ट था। प्रथम दो खेलों में वह नीचे थी, किन्तु तीसरे खेल में उसने अपने आप को संभाला और अपनी प्रतिस्पर्धी को हराने में कामयाब हो गई।

अनका का कहना है कि खेल हमें जीवन के लिए तैयार करता है। हमें उतार-चढ़ाव, हार-जीत में से गुजरना पड़ता है, हमें अपने प्रतियोगी के प्रति ईर्ष्या होती है और तब फलदायक वे उल्लासपूर्ण क्षण आते हैं। "जीवन में भी बहुत कुछ ऐसा ही होता है, है न?" वह प्रश्न करती है। बुद्धिमानी और चुटकुलों से युक्त अनका अपने को सन्तुलित रखना अच्छी तरह जानती है।

चेन्नई के चर्च पार्क स्कूल की दसवीं कक्षा की छात्रा अनका को स्कूल से विशेष अनुमति मिली है कि वह स्कूल में देर से प्रातः ९.३० तक आ सकती है, क्योंकि सुबह उसे स्क्वैश का अभ्यास करना पड़ता है। स्कूल के व्यवस्थापक तथा उसके सहपाठी उसे काफी सहयोग और समर्थन देते हैं तथा यद्यपि अनका के रैकेट की उड़ान ऊपर जाती है फिर भी कक्षा में उसकी श्रेणी नीचे नहीं लुढ़कती।

अनका की गौरवान्वित माँ चित्रा अलंकामोनी का कहना है, "प्रत्येक बच्चे को कुछ न कुछ खेल खेलना चाहिये। उनमें उस तरह का अनुशासन विकसित करने के लिए यह अच्छा होता है। अध्ययन और खेल के बाद भी अनका के पास काफी समय बचता है। वह आनन्द में है और उसकी सहायता करके हमलोग खुश हैं।" इस उदीयमान सितारे को इस महीने *चन्दामामा* का सलाम!

- वह प्रतिदिन ४ घण्टे अभ्यास करती है – स्कूल जाने से पहले २ घण्टे और स्कूल के बाद २ घण्टे।
- अनका की कोच साइरस पोंचा है जो नेशनल स्क्वैश कोच है। वह आई सी एल स्क्वैश अकादमी, चेन्नई में प्रशिक्षिका है।
- उसका रोल मोडेल नं १ स्क्वैश खिलाड़ी निकोले डेविड है जो विश्व जूनियर खिताब को दो बार जीतनेवाला पहला खिलाड़ी था।
- अनका का प्रिय विषय गणित है।

मुख्य अर्जित खिताब :

मलयेशियन ओपन: २००४, २००५, तथा २००६
पिनांग ओपन: २००५, २००७
सिंगापुर ओपन: २००५
स्कॉटिश ओपन: २००५
यू-१५ एशियन जूनियर-२००८ चैम्पियनशिप

एक राजस्थानी लोक कथा

नकली ज्योतिषी

प्रतापगढ़ के राजा राजाधिराज ज्योतिष में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे सोचते थे कि हर व्यक्ति का कर्म और भाग्य ग्रहों की स्थिति और उनके प्रभावों से संचालित होता है। राजा के पास प्रायः भिन्न-भिन्न देशों से ज्योतिषी आया करते थे और राजा उन्हें कीमती उपहार देकर सम्मानपूर्वक विदा करते थे। कुछ दिनों के बाद राजा ने निश्चय किया कि उसके दरबार में एक स्थायी ज्योतिषी रहना चाहिये।

एक बार राजा से मिलने के लिए उसके दरबार में ब्रह्मचारी नाम का एक ज्योतिषी आया। राजा उसके ज्योतिष ज्ञान से बहुत प्रभावित हुआ। उसने ज्योतिषी से पूछा कि क्या आप हमारे दरबार में राज ज्योतिषी का पद स्वीकार करेंगे। ज्योतिषी ब्रह्मचारी ने इस प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया, क्योंकि उसने सोचा कि वह इस प्रकार अपने लाभ के लिए राजा की कमजोरी का उपयोग कर सकता है। राजा ने अपने महल में उसके रहने के लिए स्थान दे दिया।

राजा का मंत्री सत्यराज बुद्धिमान था। राजा अब क्योंकि किसी समय ज्योतिषी को बुला सकता था, उसका अधिकांश समय ज्योतिषी से बातचीत करने में गुजर जाता, इसलिए सत्यराज के लिए राजा से प्रशासन सम्बन्धी परामर्श करना कठिन हो गया। वह स्वयं निर्णय ले सकता था, किन्तु राज्य की ओर से लिये गये उसके निर्णय की जिम्मेदारी तो अन्ततोगत्वा राजा की ही थी।

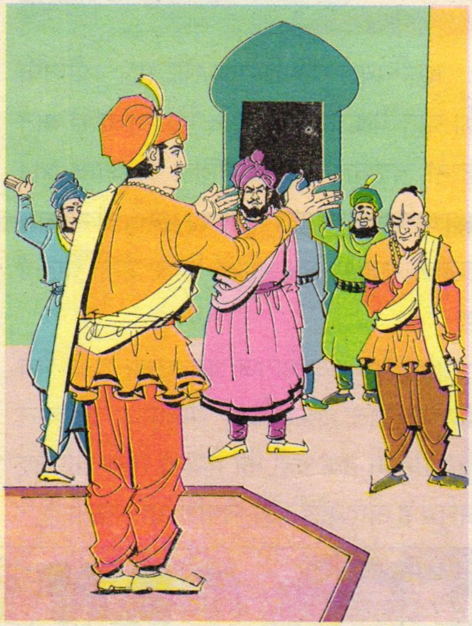

Exclusively for Chandamama Readers!

Do you want to be a whiz kid? SIP Academy has a lot of cool programmes, like an International Art Programme, International Abacus and Brain Gym. Enrol TODAY at any one of 455 centres across India and get 15% off!

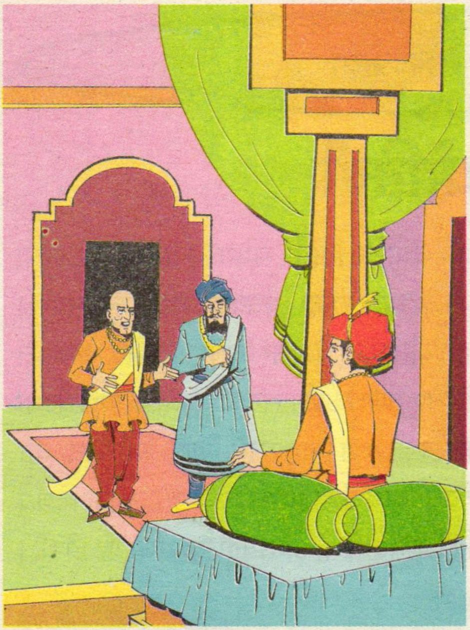

दुर्भाग्यवश राजाधिराज और राज ज्योतिषी की बातचीत के समय यदि मंत्री राजा से बात करना चाहता तो राजा नाराज हो जाता था। ब्रह्मचारी मंत्री के प्रति राजा की मनोवृत्ति से लाभ उठा कर राजा के और अधिक निकट जाना चाहता था।

एक दिन राजाधिराज जब दरबार में थे, तब ब्रह्मचारी खड़ा होकर बोला, ''महाराज, आनेवाले तीन महीनों तक ग्रहों की स्थिति राज्य के लिए अशुभ है और कोई बड़ी विपत्ति आ सकती है!''

राजा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि राज ज्योतिषी ने पिछले दिन आनेवाली किसी विपत्ति के बारे में कोई चर्चा नहीं की। स्वाभाविक ही, राजाधिराज चिन्तित हो गये। ''कैसी विपत्ति?''

''मुझे भय है'', ब्रह्मचारी ने धीमी आवाज में कहा, ''राज्य को पूरब से खतरा है।''

''पूरब से खतरा?'' अविश्वास के स्वर में राजा ने पूछा, ''ज्योतिषी जी, कृपया विस्तार से व्याख्या कीजिये।''

''ग्रहों के संकेत के अनुसार पूरब स्थित हमारा पड़ोसी राज्य आक्रमण करने की योजना बना रहा है।'' ब्रह्मचारी ने कहा।

राजाधिराज मंत्री की ओर मुड़ा। ''क्या कोई ऐसी खबर है, सत्यराज?''

''महाराज, वीरपुर के साथ लगी हमारी सरहदें पूरी तरह सुरक्षित हैं,'' मंत्री ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा।

''क्या तुम्हारा तात्पर्य यह है कि राज ज्योतिषी झूठ बोल रहे हैं?'' राजा ने पूछा। उसके ललाट पर क्रोध और सन्देह के शिकन पड़ गये।

मंत्री ने सीधा जवाब नहीं दिया और कहा, ''महाराज, वीरपुर के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध

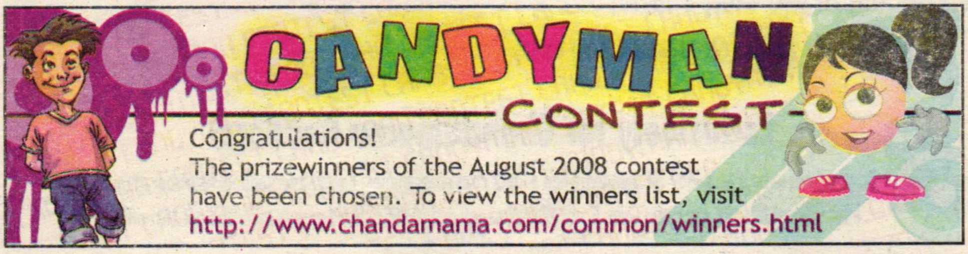

हैं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि वे हमारे राज्य पर आक्रमण करें।''

ऐसा लगा मानों राजाधिराज पूरी तरह विश्वस्त नहीं हुए। उसने राज ज्योतिषी ब्रह्मचारी से पूछा, ''ज्योतिषीजी, कृपा करके बताइये कि यदि विपत्ति आई तो इससे बचने का उपाय क्या है?''

राज ज्योतिषी ने कहा, ''महाराज, मैं ज्योतिष शास्त्र के पावन ग्रन्थों का अध्ययन कर रणनीति निर्धारित करूँगा।''

दूसरे दिन ब्रह्मचारी राजा से उसके कक्ष में मिला और बोला, ''महाराज, शास्त्रों के अनुसार,'' उसने भूमिका के रूप में कहा, ''जब पूरब की ओर हवा बहती हो तब एक पवित्र अग्नि प्रज्वलित की जानी चाहिये और उसमें इस बूटी की टहनी को अग्नि में जलाना चाहिये। किन्तु...।'' उसने वाक्य को अधूरा छोड़ दिया जो अनिष्ट सूचक था।

''किन्तु क्या?'' राजा ने चिन्तित होकर पूछा।

''टहनी की लम्बाई का निश्चय कोयले के इस टुकड़े के धुएँ के वजन द्वारा किया जाना चाहिये,'' राज त्योतिषी ने कहा। उसने अपनी शॉल की तह में से कोयले का एक टुकड़ा निकाला।

राजा उसका चेहरा घूरने लगा। ''कोयले के टुकड़े से निकले धुएँ का वजन...'', राजाधिराज सन्दिग्ध भाव से शब्दों की मात्र पुनरावृत्ति करते रहे और फिर बोले, ''परन्तु यह बताइये कि धुएँ का वजन हम कैसे जानेंगे?''

राज ज्योतिषी ने नीचे की ओर देखते हुए कहा, ''महाराज, हमारे मंत्री के समान कोई बुद्धिमान ही यह जान सकता है।'' फिर वह राजा के कक्ष से बाहर जाने के लिए इस विश्वास के साथ उठ खड़ा हुआ कि मंत्री निश्चित ही उलझन में पड़ जायेगा और राजा उससे नाराज हो जायेगा।

राजा ने सत्यराज को बुलाया। उसने मंत्री को ब्रह्मचारी से हुई बातचीत का पूरा ब्योरा न देकर सिर्फ इतना कहा, ''सत्यराज, यह पता करो कि इस कोयले के टुकड़े को जलाने पर जो धुआँ निकलेगा, उसका वजन क्या होगा?''

सत्यराज ने पहले ही पहरेदार से यह जान लिया था कि उसके पहले राजा से मिलने कौन आया था, इसलिए उसने अनुमान लगाया कि यह सब राज ज्योतिषी की दुष्टता है। ''हँऽऽऽम्, धुएँ का वजन!'' यह बुदबुदाते हुए उसने राजा से विदा ली।

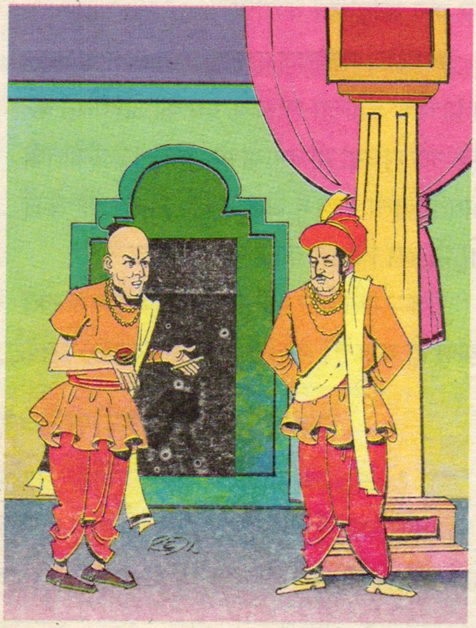

दो दिनों के बाद वह राजा से मिला। अन्य दरबारी भी उपस्थित थे, उनमें ब्रह्मचारी भी था। ''महाराज, मैं अब बता सकता हूँ कि धुआँ का वजन कितना होगा।'' उसने अपने थैले से एक तराजू निकाला। उसने पहले कोयले को तौला और एक कागज पर उसका वजन लिखा। फिर उसने कोयले को जलाया। जब आग बुझ गई तो उसने राख को एकत्र किया और उसे तराजू पर तौला। उसने उसका वजन भी लिखा। फिर वह राजा के पास जाकर बोला, ''महाराज, कोयले के वजन और इसकी राख के वजन में जितना फर्क है, वही धुएँ का वजन होना चाहिये!''

राजा प्रसन्न और सन्तुष्ट जान पड़ा। ''आप बड़े बुद्धिमान हैं, सत्यराज!'' फिर राजा ब्रह्मचारी की ओर मुड़ा। ''ब्रह्मचारी जी, हमलोग पवित्र अग्नि को कब प्रज्वलित करेंगे?''

इस बीच सत्यराज ने कहा, ''महाराज, राजगुरू ने प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथ का अध्ययन कर एक और सूचना भी बताया कि अगर राज ज्योतिषी अपने खाली हाथ में जलती हुई कोयले को ले लें तो भी इस विपत्ति को हल हो सकता है।''

राज ज्योतिषी ने महसूस किया कि उसका खेल खत्म हो गया है। वह राजा के पास जाकर उसके

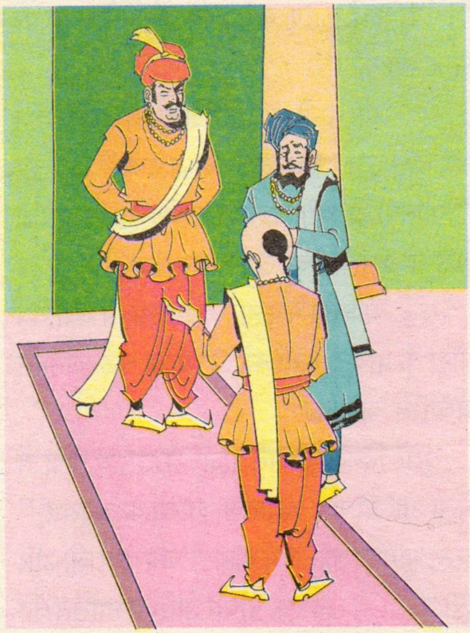

पैरों पर गिर पड़ा, ''माफ कर दीजिये, महाराज! मैं पूरब से खतरे के विषय में बताकर आप से झूठ बोल रहा था। अब ग्रहों की स्थिति शुभ सूचक है....।''

''बकवास बन्द करो!'' राजाधिराज इतने जोर से चिल्ला कर बोला कि ब्रह्मचारी की आवाज दब गई। ''मैं तुझे माफ करता हूँ, परन्तु मेरे राज्य में एक क्षण भी नहीं रह सकते।''

राजा उठा और अपने मंत्री का हाथ पकड़ कर बोला, ''आओ सत्यराज, मुझे तुमसे ढेर सारी चीजों के बारे में विचार विमर्श करना है!''

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-९ अक्तूबर २००८ उत्तर:

१. आइरिश संविधान से; २. ब्रिटिश पार्लमेण्ट; ३. सामान्य काल में फेडरल प्रणाली; आपत्काल में यह यूनिटरी बन जाती है। ४. ३५ वर्ष; ५. ब्रिटेन का संविधान अलिखित है; ६. नहीं; ७. नहीं; ८. २४ जनवरी १९५० को; ९. राष्ट्रपति, १०. अमरीकी संविधान।

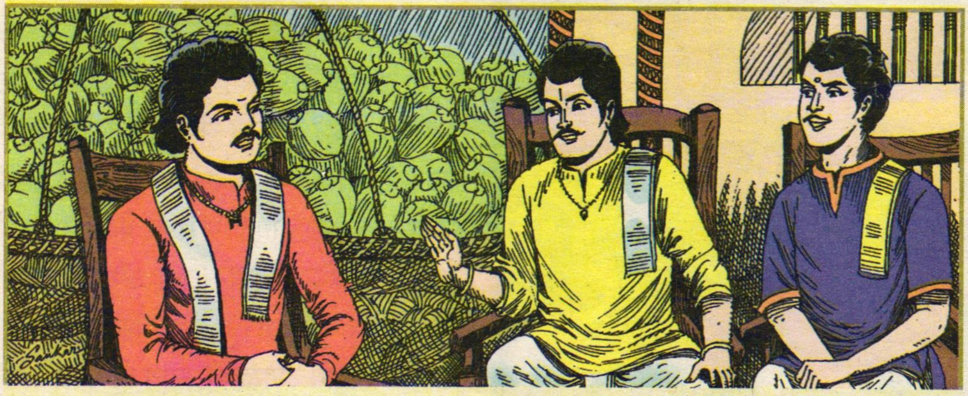

सत्यदेव के वरदान

मोती हरिपुर का निवासी था। वह नारियल का व्यापार करता था। वह अच्छे नारियल ही अपने ग्राहकों को बेचता था। हरिपुर के सब लोग उसका आदर करते थे। वह यथासाध्य ज़रूरतमंदों की सहायता करता था। अपने व्यापार में उसने एक लाख रुपये तक लाभ कमाया। पड़ोस में रहनेवाला हीरा उससे ईर्ष्या करता था।

हीरा चावल का व्यापार करता था। चावल में वह कंकड़ मिलाता था। एक दिन, हीरा के घर धनांश नामक उसका एक रिश्तेदार आया। अपने व्यापार में उसने सब कुछ खो दिया। वह हीरा से सहायता माँगने आया था।

हीरा ने उससे साफ़-साफ़ कह दिया, ''अब मैं तुम्हारी सहायता करने की स्थिति में नहीं हूँ। परंतु मेरा पड़ोसी मोती परोपकारी है। वह अवश्य ही तुम्हारी मदद करेगा।'' यह कहकर धनांश को वह मोती के पास ले गया। उपकारी मोती ने धनांश को कुछ दिनों तक अपने घर में रहने को कहा। धनांश ने उसके घर में रहने से इनकार किया और कहा, ''राजधानी में एक नया व्यापार शुरू करना चाहता हूँ। इसके लिए कम से कम दस हज़ार रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी। अगर आपको मुझपर विश्वास हो तो यह पूँजी कृपया दीजिये। आप यह पूँजी कर्ज के रूप में दीजिये। आपका हमेशा ऋणी रहूँगा।''

मोती ने हीरा की ओर देखा तो हीरा ने कहा, ''इतना तो हामी दे सकता हूँ कि धनांश अच्छा आदमी है, फिर भी कोई भी निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सकता । इसलिए कर्ज़ के विषय में मुझसे हामी मत पूछना। इसका निर्णय तुम्हारे हाथ में है।''

मोती ने परिस्थिति समझ ली। उसने धनांश

वसुंधरा

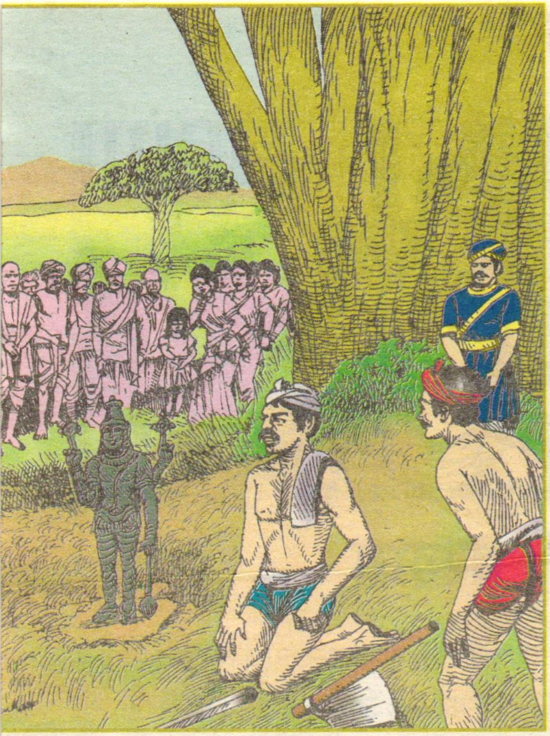

से कहा, ''तुम अगर अच्छे आदमी हो तो भाग्य तुम्हें ढूँढ़ता हुआ आयेगा। व्यापार में तुम्हारी वृद्धि हो तो मेरी रक़म मुझे वापस देना। नुक़सान हो तो उसे मेरी सहायता मान लेना। कर्ज़ की बात भुला देना।'' फिर उसने उसे दस हज़ार रुपये देकर भेज दिया। मोती की संपत्ति में अब दस हज़ार रुपये कम हो गये। इस पर हीरा बेहद खुश हुआ।

दस साल गुज़र गये। अब मोती की संपत्ति दुगुनी हो गयी। उसकी इस बढ़ती को देखकर हीरा निराश हो गया और परेशान होने लगा। अब हीरा इस सोच में पड़ गया कि मोती से अधिक कैसे कमाऊँ? इसका क्या मार्ग है? उस समय उस गाँव में एक विचित्र घटना घटी, मानो यह घटना उसी के लिए घटी हो।

एक मुसाफ़िर बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर अपने साथ लायी रोटियाँ खा रहा था। एक कौआ इसे बार-बार तंग करने लगा तो वह नाराज़ हो उठा और हाथ फैलाकर उसे मारने दौड़ा। इससे उसकी वज्र की अंगूठी पास ही के बिल में जा गिरी। मुसाफ़िर चिल्लाने लगा और लोगों की सहायता माँगने लगा। कुछ ग्रामीणों ने बिल को खोदा तो उसमें अंगूठी थी, साथ ही भगवान की एक मूर्ति और एक शिला फलक भी मिला जिस पर लिखा हुआ था, ''माँगनेवालों की इच्छा की पूर्ति करनेवाला यह सत्यदेव की मूर्ति है। पुजारी के द्वारा इच्छा बतायी जाए तो सत्यदेव पूरे परिवार के लिए एक ही वरदान देंगे। जो माँगते हैं, उनका उद्देश्य सही और सच हो तो इसका फल अच्छा होगा। अगर इच्छा बुरी और स्वार्थपूर्ण हो तो जब तक वे अपनी बुराई को नहीं छोड़ेंगे तब तक शाप बनकर उन्हें तंग करता रहेगा।''

यह समाचार ग्रामाधिकारी तक पहुँचा। उसने मूर्ति के चारों ओर दीवार बनवायी और एक पुजारी को भी नियुक्त किया। सत्यदेव की महिमा से एक अंधे को दृष्टि मिल गयी, एक और को धन का लाभ हुआ। सत्यदेव के दर्शन करने आसपास के गाँवों से भी लोग आने लगे।

मोती भी पत्नी समेत सत्यदेव के दर्शन करने गया। जब मित्रों ने उससे पूछा कि तुमने भगवान से क्या मांगा तो उसने कहा, ''मेरी पत्नी अच्छे स्वभाव की है, सुशील है, मेरे बच्चे प्रतिभावान हैं। कपड़ों की और भोजन की कमी नहीं है। इतना

सब कुछ मिला, इसलिए मैंने भगवान को कृतज्ञता जतायी। सचमुच इसी के लिए मैं सत्यदेव के दर्शन करने आया।''

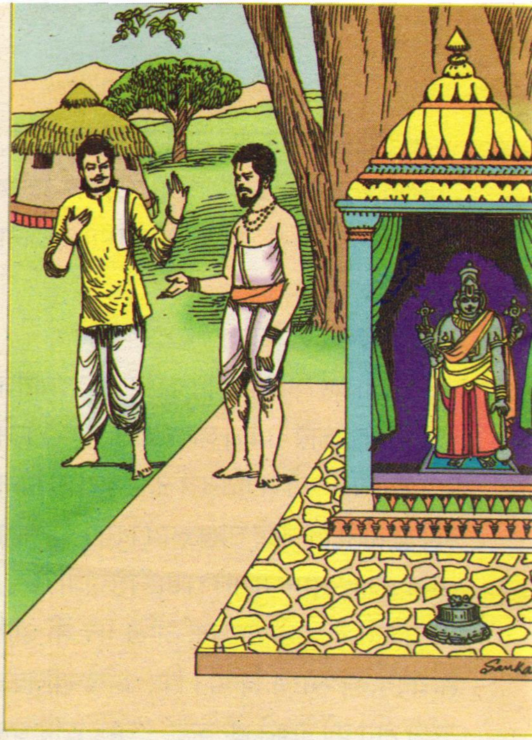

मोती के पास जो भी है, वह हीरा के पास भी है। पर तब तक वह संतृप्त रह नहीं सकता, जब तक उसकी संपत्ति उससे अधिक न हो। वह सत्यदेव के पास गया और माँगा कि उसकी संपत्ति दस लाखों तक बढ़े। तीसरे दिन हीरा के घर के पिछवाड़े में खोदा गया तो उसमें पर्याप्त गुप्त निधि मिली। इससे अब उसकी संपत्ति दस लाख रुपयों से अधिक हो गयी। अब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, क्योंकि वह मोती से कहीं अधिक धनवान हो गया।

इसके दो दिनों के बाद, दस साल पहले राजधानी गया हुआ धनांश हरिपुर आया। वह सीधे मोती के घर गया और अपनी कहानी सुनायी।

नया व्यापार शुरू करने से पहले एक अच्छा मुहूर्त निकालने के लिए धनांश ने अपनी जन्म-पत्री एक ज्योतिषी को दिखाया। उसने धनांश से कहा, ''अब तुम्हारा व्यापार फल नहीं देगा। अपना हिस्सेदार बनाओ। तुम्हारे हिस्से में जो लाभ प्राप्त होगा, उससे परिवार सहित सुखी जीवन बिताना। दूसरा हिस्सा एक ऐसे अच्छे आदमी को सौंपो, जो तुम्हारे परिवार का न हो। उस लाभ में से आधा हिस्सा तुम ले लेना। तुम्हारे व्यापार में पूँजी जब अधिकाधिक होगी, तब समझना, तुम्हारा भाग्य चमका। उस स्थिति में उस सत्पुरुष का हिस्सा उसे दे देना। फिर से तुम्हारा भाग्य चमकेगा। पर याद रखना, अगर सत्पुरुष का हिस्सा उसे नहीं दिया तो तुम्हारा पतन होकर रहेगा।''

धनांश ने ज्योतिषी के कहे अनुसार अपनी पूंजी को दो समान हिस्सों में बाँटा। एक हिस्सा अपने नाम पर और दूसरा हिस्सा मोती के नाम पर करके व्यापार शुरू कर दिया। उसके नाम पर जो हिस्सा था, उससे बहुत ही कम मात्रा में लाभ मिलता था, पर मोती के नाम पर जो व्यापार कर रहा था, उससे अधिकाधिक लाभ मिलता था। दस सालों के बाद धनांश के हिस्से का व्यापार भी खूब चलने लगा। ठोस कमाई होने लगी। इसलिए ज्योतिषी के कहे अनुसार मोती के नाम पर चलाये जानेवाले व्यापार से प्राप्त रकम उसे देने हरिपुर आया था।

सब कुछ सुनने के बाद मोती ने हँसते हुए कहा, ''तुम्हारा पतन न हो, इसके लिए मैं यह धन स्वीकार करूँगा। मेरे हिस्से का लाभ लगभग कितना होगा?''

''पन्द्रह लाख रुपये।'' उसने कहा।

जैसे ही यह समाचार हीरा को मिला, वह नाराज़ हो उठा और पुजारी के पास जाकर बोला, ''मेरे माँगने पर सत्यदेव ने मेरी संपत्ति दस लाख कर दी। बिना माँगे ही मोती को पंद्रह लाख रुपये दिये। यह कैसे संभव हुआ? तुमने मुझसे सच्चाई छिपायी?''

पुजारी ने थोड़ी देर तक आँखें मूँद लीं और सत्यदेव का स्मरण किया। फिर आँखें खोलकर उसने हीरा को देखते हुए कहा, ''तुम्हें इतने धन की कोई आवश्यकता नहीं है, फिर भी मोती से अधिक संपन्न बनने के लिए सत्यदेव से वर माँगा। तुम्हारी माँग के पीछे स्वार्थ है, तुम्हारा उद्देश्य अपवित्र है। इसीलिए मोती को लाभ मिला। वह उसके लिए वरदान नहीं है। तुम्हारे लिए वह दंड है। धनांश ने जब पूँजी माँगी, तब अगर तुम उसकी सहायता करते तो आज तुम्हें पंद्रह लाख रुपये मिलते। तुमने एक अच्छा मौक़ा खोया। जब तक पड़ोसी से अधिक धनी होने की दुराशा तुममें होगी, तब तक भगवान तुम्हें इसी प्रकार सताते रहेंगे। उद्देश्य अच्छे हों, सद्गुण हों तो ऐसा नहीं होता। जो है, उसी से संतृप्त रहने में ही मुक्ति है।''

यह विषय पूरे गाँव में फैला। लोगों ने मोती की अच्छाई और उसके भाग्य की सराहना की। जब वे मोती को बधाई देने उसके पास गये तब उसने कहा, ''मैंने पूँजी के रूप में जो रक़म दी, उससे पंद्रह लाख का लाभ मिला। उसी रक़म को ज़रूरतमंद को देंगे तो वह दस सालों में पंद्रह लाख होगी। इसका यह मतलब हुआ कि हम अपनी अच्छाई और भाग्य दूसरों को देंगे, तभी हम अधिकाधिक लाभ कमायेंगे। हम यह सच्चाई जानें, इसी के लिए हमारे गाँव में सत्यदेव प्रकट हुए।''

उस गाँव के कई लोगों ने मोती की बातों का विश्वास किया और सत्यदेव के वरदानों का सदुपयोग करने लगे। शांतिपूर्वक वे जीवन बिताने लगे। हीरा ने भी इस सत्य को जाना और क्रमशः अपने को परिवर्तित किया।

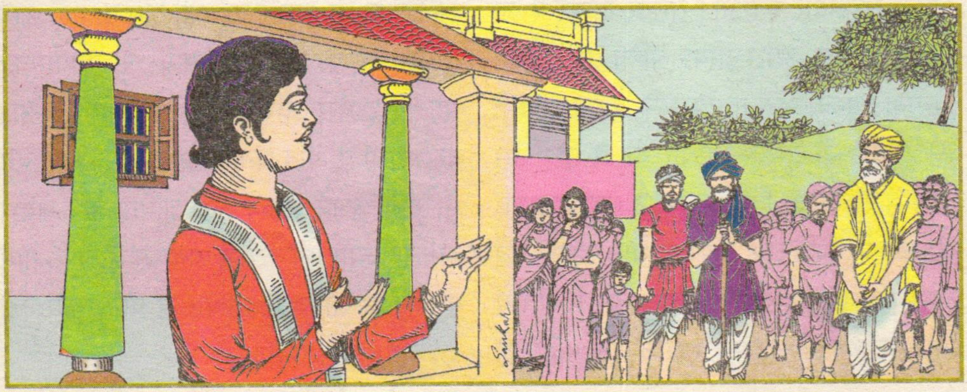

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१५

तात्या टोपे के पलायन का रहस्य

एक दिन, नवम्बर १८५८ में, कानपुरवासियों के लिए एक सनसनीखेज खबर आई। भारतीय स्वाधीनता का महायुद्ध, जो पूरे जोर-शोर के साथ चल रहा था, पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। एक बड़ी ब्रिटिश बटालियन घेराबन्द किले की तरफ बढ़ रही थी। क्या ये शहर को लूटने आ रहे थे? विचित्रता यह थी कि आगे बढ़ते सैनिक निस्तेज और भयभीत दीख रहे थे।

तोपों और अट्टहासों की गूंज सुनाई पड़ रही थी। भारतीय विद्रोही, जो निकटवर्ती जंगलों और खेतों में घात लगाये थे, अंग्रेज़ दस्ते को उल्लास-पूर्वक खदेड़ रहे थे। वे न तो उन पर आक्रमण करते और न उन्हें चैन से बैठने देते। वे दुश्मन को, बन्दूकों और तीरों से, कभी उन्हें दबोच कर और अन्धेरे में डरावनी चीखें मार कर डराते हुए सताते थे।

हाँफते हुए दुश्मन की सेना को कानपुर के फाटकों तक खदेड़ दिया गया। वे अपने को संगठित करें, इसके पूर्व ही उत्साहित विद्रोहियों ने उन्हें वापस लौटने को मजबूर कर दिया। दोनों ओर से चलती बन्दूकों की गड़गड़ाहट और तोपों के जलते हुए गोलों ने एक भयंकर मुठभेड़ का रूप धारण कर लिया। दिन भर युद्ध चलता रहा।

जब लड़ाई खत्म हुई, एक ब्रिटिश अधिकारी ने अपने एक मित्र को लिखा, ''तुम आज की

लड़ाई का विवरण आश्चर्य से पढ़ोगे; क्योंकि यह बताता है कैसे ट्रॉफिज धारी, मोटोज के साथ, बहादुरी के लिए दुनिया में मशहूर अंग्रेज़ी सैनिकों को पीछे धकेल दिया गया और उन सब ने तिरस्कृत और उपेक्षित भारतीयों के हाथ अपने शिविर, सामान और इज्जत खो दी।'' ('इण्डियन म्यूटिनी' द्वारा चार्ल्स बॉल)

ब्रिटिश सेना का कमाण्ड जनरल विनधम के हाथ में था। परन्तु न तो अनुभवी जनरल और न उसकी बहादुर बटालियन भारतीयों का मुकाबला कर सकी। आम जनता से संगठित कर विद्रोहियों के दल को किसने प्रेरित और मार्गदर्शित किया?

वह और कोई नहीं, तात्या टोपे था, जो न तो स्वयं प्रशिक्षित सैनिक था और न युयुत्सु समुदाय का था। सन् १८१४ में एक गरीब परिवार में जन्मे तात्या नाना साहेब के दरबार में एक क्लर्क था। मात्र संकल्प शक्ति, मातृभूमि के लिए प्रेम और सच्ची स्वामिभक्ति के द्वारा उसने अपने आप को एक बहादुर सिपाही और एक समर्थ सेनापति के साँचे में ढाल लिया।

इस लज्जाजनक पराजय के पश्चात भारत में ब्रिटिश सेना का प्रधान सर कोलिन कैम्पबेल, जो लखनऊ में विद्रोहियों से युद्ध कर रहा था, तुरन्त अपने सहकर्मी की रक्षा के लिए दौड़ा आया।

भारतीय नेता ने, उसके इतनी जल्दी आ जाने की उम्मीद नहीं की थी। इसलिए वे उसके आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार नहीं थे। फलस्वरूप महल को जला दिया गया और शहर की सारी सम्पत्ति लूट ली गई। किन्तु कैम्पबेल के आश्चर्य की सीमा न रही जब तात्या टोपे उसके हाथ से फिर निकल गया। उसने इस दुर्दमनीय विद्रोही को पकड़ने के लिए अनेक बार अपनी जिन्दगी दाँव पर लगा दी, फिर भी वह हाथ न आया। इस बार तात्या ने शीघ्र ही कल्पी में जाकर एक नई सेना बनाई और अंग्रेजी सेना का सामना किया।

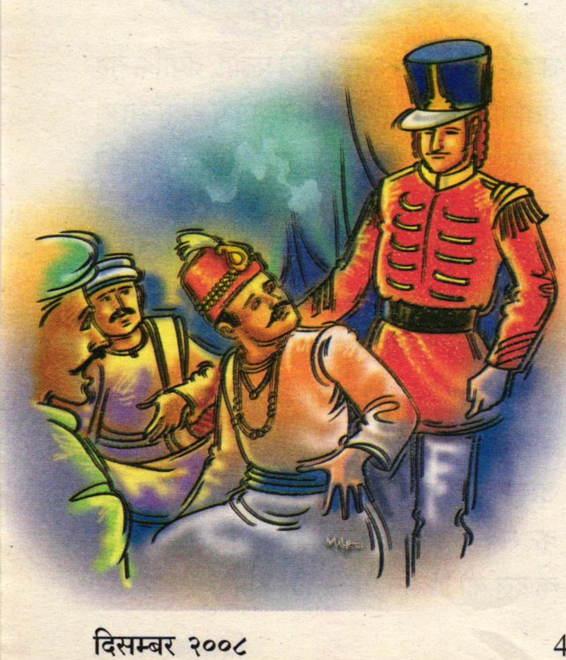

एक अंग्रेज़ लेखक १७ जनवरी १८५९ के 'द टाइम्स' में लिखता है: ''हमारा अत्यन्त विलक्षण मित्र, तात्या टोपे, अप्रत्याशित रूप से उपद्रवी और चतुर दुश्मन है। पिछले जून से उसने केन्द्रीय भारत को परेशानी में डाल रखा है। उसने स्टेशनों तथा सरकारी खजानों को लूट लिया, शस्त्रागारों को खाली कर दिया। सेना संगठित की पर उसे खो दी। लड़ाइयाँ लड़ीं, पर हार गया...पहाड़ हों या नदियाँ, तराई या घाटियाँ या दलदल, वह कभी आगे बढ़ता है, कभी पीछे, कभी बगल की दिशा में, कभी तिरछा...।''

जब तक तात्या टोपे जिन्दा था, ब्रिटिश को चैन नहीं मिला। एक बार वह एक निभृत स्थान में अपने मित्रों के साथ मंत्रणा कर रहा था। अचानक, किसी ने पीछे से उसका कन्धा थपथपाया। पीछे मुड़ कर देखा कि एक अंग्रेज़ मेजर खड़ा मुस्कुरा रहा है। दुश्मन ने गुप्त रूप से उसके शिविर को घेर लिया था। उसे इसकी भनक नहीं मिल सकी।

शीघ्र ही, अंग्रेज़ी खेमे में उल्लास के साथ नारे सुनाई पड़े, ''तात्या कैद कर लिया गया। टोपे पकड़ा गया।'' पर तुरन्त यह खुशी निराशा में

बदल गई। "तात्या टोपे कहाँ है? ओह! वह अभी तो यहीं था! उसका पीछा करो, सैनिकों!" सिपाहियों ने उस स्थान के कोने-कोने को छान मारा पर व्यर्थ! तात्या टोपे, लगता है, अदृश्य हो गया! क्या वह जादूगर है?

अचानक लैम्प्स गुल हो गये। घोर संघर्ष और हो हल्ला में विद्रोही भाग गये। पर वे कहाँ गायब हो गये? उन्होंने शत्रु के सतर्क सिपाहियों के घेरे को तो पार नहीं किया? क्या वहाँ झाड़-झंखाड़ के नीचे कोई गुप्त सुरंग है?

एक जनश्रुति के अनुसार तात्या अपने कुछ साथियों के साथ पैरोन के घने जंगलों में भाग गया जहाँ वह अपने एक पुराने मित्र नरवर के अपदस्थ राजा मान सिंह से मिला। पर अंग्रेज़ों ने उसे खोज निकाला। उन्होंने मान सिंह को विश्वास दिलाकर कहा कि यदि वह तात्या को पकड़ने में मदद करे तो उसे अच्छा खासा इनाम दिया जायेगा।

तीन दिनों के बाद एक आधी रात को, जब तात्या और उसके साथी अपने गुप्त स्थान में गाढ़ी नींद में सो रहे थे, तब मान सिंह आँख बचा कर कुछ सैनिकों को वहाँ ले गया। उसने स्वयं एक सोये हुए व्यक्ति को काबू में लेकर दुश्मन के हवाले कर दिया। जब सिपाहियों और विद्रोहियों में गुत्थम गुत्थी हो रही थी, तब वहाँ से दो व्यक्ति निकले और दो मजबूत घोड़ों पर सवार होकर अन्धेरे में अदृश्य हो गये। उनमें से एक पुरोहित के वेश में था।

अगली सुबह ब्रिटिश शिविर में खुशी की लहरें फैल गईं। आखिरकार अपराजेय तात्या उनकी पकड़ में आ गया। अन्त में उसे १८ अप्रैल १८५९ को सिपरी में एक झूठे मुकदमे के बाद फाँसी दे दी गई।

परन्तु क्या तात्या सचमुच पकड़ा गया और उसे फाँसी पर लटका दिया गया? कहानी के अनुसार दो साहसी घुड़सवारों में, जो अन्धेरे में भाग गये थे, एक तात्या टोपे था और दूसरा उसका मित्र पंडित गोविन्द राव था। वास्तव में उसी ने पलायन की योजना बनाई थी। वह आदमी, जो तात्या टोपे के रूप में फाँसी पर लटका दिया गया था, नारायण राव भागवत था। उसने निःसंकोच फाँसी के तख्ते को चूम लिया जिससे उसका नेता स्वाधीनता संग्राम को निर्बाध जारी रख सके।

एक अंग्रेज़ लेखक ने लिखा हैं, "यदि केवल आधा दर्जन ही तात्या टोपे होते तो १८५७ में क्रांतिकारी संघर्ष का इतिहास कुछ और ही होता।" भारतीय भी इससे अधिक और क्या कह सकते थे!

- ए.के.डी.

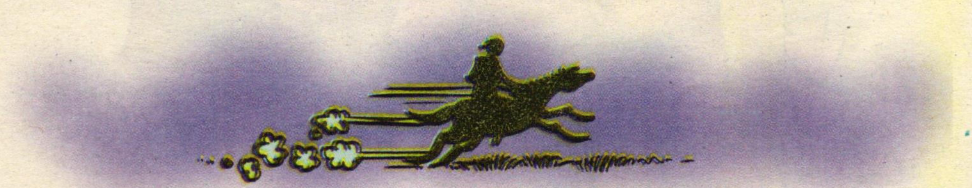

प्रशासन में त्रुटि

हिमगिरि के राजा विक्रमसिंह के अधीन उसके राज्य में अनेक जागीर थे। कुँवर धवल सिंह धौलागिरि जागीर का जागीरदार था। वह न्यायपूर्ण शासन के लिए प्रसिद्ध था; उसे सदा अपनी प्रजा के कल्याण की चिन्ता रहती थी। उसने अपनी हवेली के अन्दर एक कुटिया बनाई थी, जहाँ बैठकर वह ध्यान किया करता तथा अपनी प्रजा की भलाई के लिए वह क्या कर सकता है, इस पर चिन्तन करता था। यदि उसे किसी अपराध या दुष्कर्म की जानकारी मिल जाती तो वह अपराध कर्त्ता या निरंकुश व्यक्ति को दण्ड नहीं देता था, बल्कि वह यह मानता था कि उसके प्रशासन में कुछ त्रुटि के कारण ही वह दुष्कर्म या अपराध हुआ है। इसलिए वह अपने प्रशासन में सुधार करता रहता जिससे वैसी घटना की पुनरावृति न हो।

एक रात, जब वह ध्यान में मग्न था, तब उसे मुख्य भवन से कुछ शोर सुनाई पड़ा। उसने अनुमान किया कि हवेली में कोई बाहरी व्यक्ति घुस गया है। जो भी हो, वह कुटिया से बाहर नहीं निकला। उसका अनुमान ठीक था। एक चोर चुपके से, सावधानीपूर्वक, जिससे कोई नींद से जाग न पड़े, सभी कमरों में चोरी करने के लिए घुसा। उसे यह देख कर निराशा हुई कि किसी कमरे में चोरी करने लायक कोई मूल्यवान वस्तु नहीं है। संयोगवश उसकी दृष्टि रत्नजटित एक जोड़ा जूते पर पड़ी। उसने जूते चुरा लिये और

जैसे वह छिपता हुआ हवेली के अन्दर घुसा था वैसे ही वह बाहर चला गया।

धवलसिंह ने किसी को भी नहीं बताया कि उसके जूते की चोरी हो गई। वास्तव में, वह शीघ्र ही इस घटना को भूल गया। वह अपनी जागीरदारी में छद्मवेश में खास कर बाजार में, यह जानने के लिए घूमा करता था कि उसके कर-समाहर्ता व्यापारियों से ज्यादा धन लेकर अन्याय तो नहीं कर रहे हैं। वह दुकानदारों और उनके ग्राहकों पर कड़ी नजर रखता था।

एक ऐसे ही भ्रमण के दौरान उसने दो व्यक्तियों को देखा जिनमें से एक के हाथ में एक जोड़ा जूते थे और दूसरा उससे बातचीत करना चाह रहा था। दोनों ऊँची आवाज में बातें कर रहे थे। धवल सिंह उनके निकट पहुँचा और उनसे पूछा, ''क्या बात है? तुम लोग वाद विवाद क्यों कर रहे हो?''

एक व्यक्ति ने कहा, ''वह जूतों का एक जोड़ा बेचना चाहता है। मैं उसे खरीदना चाहता हूँ, परन्तु मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि यह चोरी का माल नहीं है। मैं उसे यह कह रहा हूँ कि कोई यह आश्वासन दे कि ये जूते इसी के हैं और ये चोरी के माल नहीं हैं, तभी मैं इन्हें खरीद सकता हूँ।''

तभी धवल सिंह ने जूतों को ध्यानपूर्वक देखा। उसने तुरन्त पहचान लिया कि वे उसी के जूते हैं जो हवेली से गायब हो गये थे। वह आसानी से चोर को पकड़ कर मजिस्ट्रेट के सामने ले जा सकता था। पर उसे हिचकिचाहट हुई। उसने सोचा कि चोर को पैसों की आवश्यकता होगी, इसीलिए उसने जूते चुराये और अब वह इन्हें बेचने की कोशिश कर रहा है। उसने खरीदनेवाले व्यक्ति को कहा, ''मैं प्रमाणित करता हूँ कि ये जूते इस आदमी के हैं और आप इन्हें निरापद रूप से खरीद सकते हैं। यदि आप को मुझ पर विश्वास नहीं है और आप इन्हें नहीं खरीदना चाहते तब मैं इन जूतों को खरीद लूँगा।''

कुछ दिनों के पश्चात चोर को मालूम हो गया कि जिस व्यक्ति ने प्रमाणित किया था कि जूते मेरे हैं, वह और कोई नहीं, स्वयं कुँवर धवल सिंह थे। उसे अपने ऊपर शर्म आई। वह हवेली में गया और जागीरदार के सामने आत्म समर्पण कर दिया। ''स्वामी, मुझे क्षमा करने की कृपा कीजिये। मैंने बहुत बड़ा अपराध किया था, फिर भी आपने मुझे दण्ड से बचा लिया। मैं वचन देता हूँ, मैं जीवन भर चोरी नहीं करूँगा।''

धवल सिंह ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, ''इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। मैं इसे अपने प्रशासन का दोष मानता हूँ जिसने तुम्हें चोरी करने के लिए बाध्य किया। मैं अब इस बात पर ज्यादा ध्यान दूँगा और यह सुनिश्चित करूँगा कि मेरे शासन काल में कोई किसी चीज का अभाव महसूस न करे।''

धवल सिंह ने देखा कि उस व्यक्ति की आँखों से किसी को हानि पहुँचाने का नहीं, बल्कि समाज की सेवा का संकल्प झाँक रहा है।

- शमशेर अहमद खान

शतरंज चैम्पियन्स

भारत के ***विश्वनाथन आनन्द*** को तीसरी बार विश्व खिताब जीतने के लिए ग्यारहवें खेल में केवल २४ चालों की आवश्यकता थी। अब वह शतरंज के तीनों फॉरमेट्स – क्लासिकल, रैपिड तथा ब्लिट्ज में विश्व चैम्पियन है। आनन्द ने २००० में नॉक-आउट फॉरमेट में यह खिताब जीता था, जो आजकल नहीं खेला जाता। सन् २००७ में, वह आठ खिलाड़ियों के डबल रॉबिन-बाउण्ड फॉरमेट में चैम्पियन हो गया। बोन (जर्मनी) में २९ अक्तूबर को उसने परम्परागत मैच-प्ले फॉरमेट में रूस के विश्व चैम्पियन व्लादिमीर क्रैमनिक को हरा कर पुनः खिताब जीत लिया। रूसी खिलाड़ी, सन् २००० में एक अन्य विश्व चैम्पियन गैरी कास्परो को हराने के बाद विश्व खिताब की प्रतियोगिताओं में अपराजित था। उसने २००४ तथा २००६ में अपने प्रदर्शन की पुनरावृति की। यह विवाद किया गया कि विश्वनाथन आनन्द ने मैच-प्ले फॉरमेट में अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा को प्रमाणित नहीं किया था। परन्तु बोन की विजय ने आलोचकों को गलत सिद्ध कर दिया। उसने क्रैमनिक को ६.५-४.५ पॉयन्ट्स से परास्त किया। यह एक ऐतिहासिक विजय थी।

उसी दिन, जब आनन्द शतरंज का शहनशाह बना, भारत की ***पद्मिनी राउत*** ने १४ वर्ष से नीचे की लड़कियों का विश्व खिताब जीता जिसमें उसने जॉर्जिया की नाटिया जलबाइज को ११-१० पॉयण्ट्स से हराया। उंग ताऊ (वियतनाम) में पद्मिनी का केवल एक ड्रा था और वह मोलडोवा की डायना बासियू के विरुद्ध था। पद्मिनी को पहले से ही अनेक एज-ग्रूप अन्तर्राष्ट्रीय जीतों का श्रेय प्राप्त है।

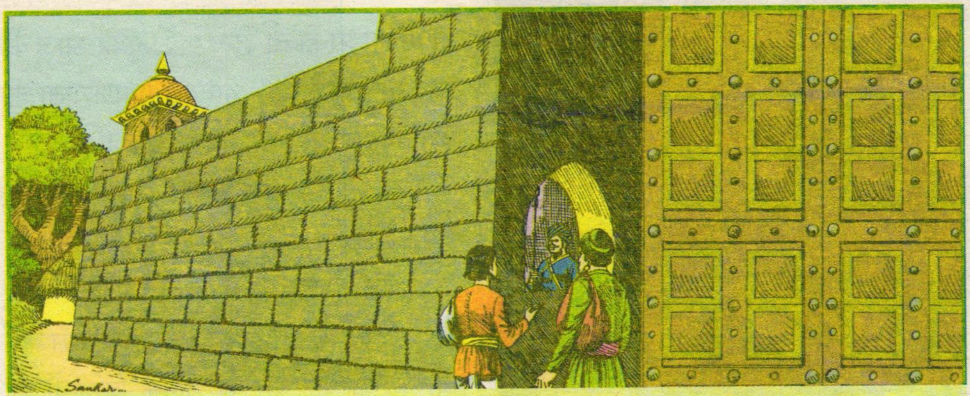

नरभक्षी यक्ष

जिन दिनों काशी पर ब्रह्मदत्त का राज्य था, बोधिसत्व ने एक वैश्य परिवार में जन्म लिया। उनके पिता बहुमूल्य रत्नों का व्यापार करते थे। उन्होंने सोलह वर्ष तक गुरुकुल में रहकर सब प्रकार की शिक्षा पाई।

बोधिसत्व के गुरुकुल से घर लौटने पर पिता ने उनसे कहा, ''बेटा! मैं वृद्ध होता जा रहा हूँ। तुम मेरे इकलौते पुत्र हो। जो व्यापार मैंने अपने पुरखों से सीखा है, उसे मैं तुम्हें भी बता देना चाहता हूँ। इसलिए तुम मेरी बातों को ध्यान से सुन लो और अपने और अपने पुरखों के यश को आगे बढ़ाओ!''

बोधिसत्व ने पिता की बात मान ली। एक सप्ताह बाद पिता और पुत्र रत्नों की गठरियाँ बाँधकर व्यापार के लिए परदेश चल पड़े।

दोनों अनेक गाँवों और नगरों में जाकर व्यापार करते हुए प्रयाग पहुँचे। उस समय सूर्यास्त हो चुका था।

बोधिसत्व के पिता ने नगर के प्रवेशद्वार के द्वारपाल से नगर में प्रवेश करने की अनुमति माँगी।

''भद्रजनो! आप देखने में धनी व्यापारी मालूम होते हो, लेकिन मैं राजा के आदेश को तोड़ नहीं सकता। उनका आदेश है कि सूर्यास्त से सूर्योदय तक नगर का द्वार खोलना नहीं चाहिए। राजा के आदेश का पालन करना मेरा कर्तव्य है। इसलिए मैं आप के लिए नगर का प्रवेशद्वार नहीं खोल सकता। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।'' द्वारपाल ने कहा।

बोधिसत्व के पिता ने निराश होकर कहा, ''बेटा! अब रात का भोजन हमें कहाँ मिलेगा? अगर नगर में प्रवेश मिल जाता तो किसी सराय में भोजन का प्रबन्ध हो सकता था। हमें भूखा रह कर रात काटनी पड़ेगी!''

जातक कथा

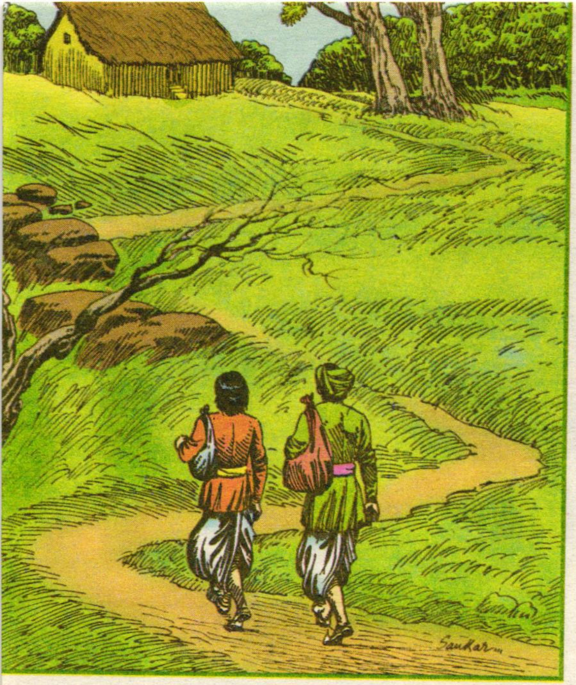

द्वारपाल उनकी बातें सुन रहा था। उसे उन पर दया आ गयी। उसने कहा, ''भद्रपुरुषो! अगर आपके पास रसोई बनाने की सामग्री हो तो दुर्ग की बगलवाली मेरी कोठरी में आप रसोई बना सकते हैं! इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं हैं।''

पिता-पुत्र को बात ठीक जान पड़ी। उनके पास खाना बनाने की सामग्री थी। वे द्वारपाल की कोठरी में पहुँचे और एक घंटे के अंदर खाना बनाकर खा लिया। उस कोठरी में दोनों के सोने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था।

बोधिसत्व ने द्वारपाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर पूछा, ''भाई। आज रात विश्राम के लिए कोई स्थान का पता बता सकते हो?''

''नगर के बाहर एक पर्णशाला है। लेकिन कहते हैं कि उसमें भूत-प्रेतों का अड्डा है। अगर आपमें साहस हो तो दोनों वहाँ जाकर आज की रात काट सकते हैं।'' द्वारपाल ने पर्णशाला की दिशा में हाथ से संकेत करते हुए कहा।

भूत-प्रेतों की बात सुनकर बोधिसत्व के पिता काँप उठे।

लेकिन बोधिसत्व ने उन्हें हिम्मत देते हुए कहा, ''पिताजी! आप मत डरिये। मैंने दस वर्षों तक गुरु के पास रह कर अनेक विद्याओं का अध्ययन किया है। भूत-प्रेत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। आप निश्चिन्त रहिये।''

बोधिसत्व के इस उत्तर से पिता के अन्दर साहस आया और वे दोनों उस पर्णशाला में पहुँचे। वह पर्णशाला एकदम सुनसान और अंधेरी थी। उन दोनों ने भीतर प्रवेश किया और दीवार के साथ लगे तख़्तों पर लेट गये।

लंबी यात्रा के कारण वे थक गये थे, इसलिए लेटते ही सो गये।

उस पर्णशाला के द्वार की चौखट पर एक नरभक्षी यक्ष निवास करता था। उसे इधर कुछ दिनों से खाना नहीं मिला था, इस कारण वह भूख से अधमरा हो रहा था। उन बाप-बेटों को देखते ही वह खुशी से फूल उठा और सोचने लगा कि आज कई दिनों बाद बढ़िया आहार हाथ लगा है।

पर एक बाधा थी। उसे एक ऋषि का शाप था। वह केवल उसी मनुष्य को खा सकता था, जिसे छींक आने पर कोई 'चिरंजीव' न कहे।

यक्ष बड़ी देर तक इन्तज़ार करता रहा कि बाप-बेटे में से कोई छींक दे। लेकिन दोनों में से

कोई नहीं छींका। इस पर यक्ष ने बोधिसत्व के पिता पर तेज़ गंधवाला चूर्ण छिड़क दिया। गंध का स्पर्श होते ही बोधिसत्व के पिता को छींक आ गयी। पार्श्ववर्ती बोधिसत्व ने 'चिरंजीव' न कहा। यक्ष प्रसन्न होकर चौखट के ऊपर से नीचे कूद पड़ा। तब बोधिसत्व ने पूरी बात भांप कर अपने पिता की पीठ थपथपाते हुए 'चिरंजीव' कह दिया।

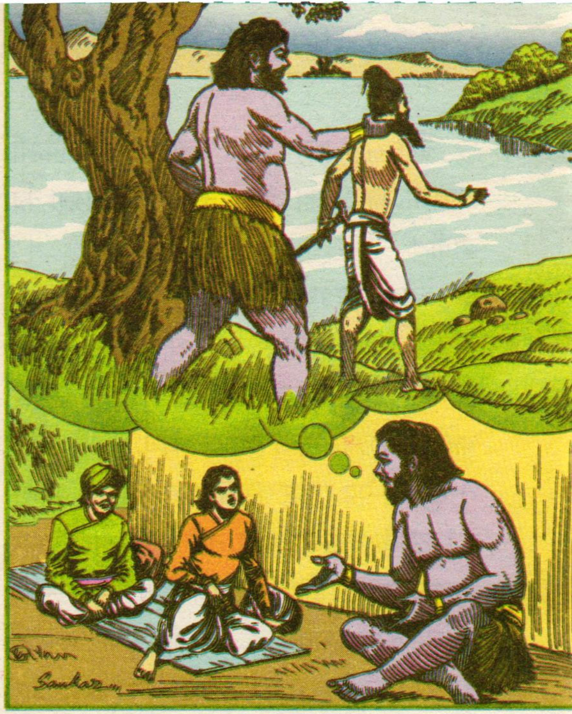

यक्ष निराश होकर पीछे घूम गया। उसे सताने के ख्याल से बोधिसत्व ने अपने नासिका-पुटों में कपड़े की बत्ती बनाकर घुसायी और बड़ी ज़ोर से छींक दिया।

यक्ष के मन में फिर से आशा जाग उठी। बगलवाले पुरुष ने अगर 'चिरंजीव' न कहा तो वह बोधिसत्व को खाकर अपनी क्षुधा शांत कर लेगा। यह सोचकर वह वापस मुड़ा और उनके निकट जाने लगा। तभी बोधिसत्व के पिता ने चिरंजीव कह कर बेटे का सिर स्पर्श कर दिया। उसे लगा कि किसी ने उसके मुँह का कौर ही छीन लिया। लाचार होकर वह फिर से चौखट पर चढ़ने को हुआ। तभी बोधिसत्व ने पुकारा, "यक्ष! यहाँ आओ!"

यक्ष ने मुड़ कर देखा। बोधिसत्व के मुखमंडल पर अपार तेज था। यक्ष भयकंपित हो उठा और हाथ जोड़कर बोधिसत्व के सामने आ खड़ा हुआ।

बोधिसत्व ने यक्ष के ऊपर तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर कहा, "यक्ष! मैं जानता हूँ, तुम नरभक्षी हो! तुम हम दोनों में से किसी को भी खाकर अपनी भूख मिटा सकते हो। पर तुम चुपचाप वापस लौट जाते हो। ऐसा क्यों?"

यक्ष बोधिसत्व को प्रणाम करके बोला, "हे महातेजस्वी! मुझे एक ऋषि ने शाप दिया है। भोजन में प्रतिबन्ध होने के कारण मैं विवश हूँ।"

"ऋषि का क्या शाप है? ऋषि ने तुम्हें शाप क्यों दिया? साफ़-साफ़ बता दो।" बोधिसत्व ने पूछा।

"पचास वर्ष पहले की बात है। मैं जंगलों में घूमते हुए किसी मनुष्य को अपना आहार बना लिया करता था। एक बार शाम के समय जब मैं बहुत भूखा था, मैंने रात्रि-भोजन के लिए नदी के किनारे जाते हुए एक मनुष्य को देख कर उसकी गर्दन दबोच ली। दूसरे ही क्षण मुझे बिजली का आघात लगा और मैं नीचे गिर पड़ा।"

बोधिसत्व मंदहास करके बोले, "तुमने किसी तपस्वी को अपना आहार बनाने की धृष्टता की होगी !"

"महानुभाव! सचमुच ऐसा ही हुआ ! जब मुझे चेत आया तो मैं उठने को हुआ, लेकिन सामने खड़े दण्ड-कमण्डलुधारी एक ऋषि ने मुझे बायें पैर से ठोकर मारते हुए शाप दिया, 'अरे पापी ! तू मनुष्यों का संहार करके उनका भक्षण करता है! उसके दंडस्वरूप मैं तुझे भूख का शिकार बनाना चाहता हूँ। जा, आज से तू केवल उन्हीं मनुष्यों को खा सकेगा, जिन्हें छींक आने पर कोई दूसरा 'चिरंजीव' न कहे। अगर तूने किसी और को अपना आहार बनाने की कोशिश की तो तू जलकर भस्म हो जायेगा।' इस तरह मैं शाप ग्रस्त हो गया।" यक्ष ने अपनी आप बीती सुना दी।

यक्ष की बात सुनकर बोधिसत्व को उस पर दया आ गयी। उन्होंने यक्ष को न केवल शापमुक्त किया, बल्कि उसे हिंसा के कर्म से भी मुक्त कर दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल बोधिसत्व अपने पिता तथा यक्ष को लेकर राजा से मिलने गये।

राजा ने सारा वृत्तान्त सुनकर बोधिसत्व को प्रणाम किया और उनसे विनती की, "महानुभाव! आप अत्यन्त शक्तिशाली हैं। आपके कारण मेरी प्रजा एक नरभक्षी यक्ष के चंगुल से बच गयी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे सेनापति का पद ग्रहण कर यहीं निवास करें!"

बोधिसत्व ने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और राजा का सेनापति बन कर वहीं रह गये। राजा ने बोधिसत्व के पिता का सम्मान किया और यक्ष के बारे में बोधिसत्व का निर्णय माँगा।

बोधिसत्व ने कहा, "महाराज! इस यक्ष के सारे पाप धुल गये हैं। इससे अब किसी की भी हानि न होगी। आप इसे अपनी अश्व एवं गजशाला का अधिपति नियुक्त कर इस को अपने राज्य की सेवा का अवसर दें !"

राजा ने बोधिसत्व के निर्णय का सम्मान किया और यक्ष को अश्व-गजशाला का अधिपति नियुक्त कर दिया।

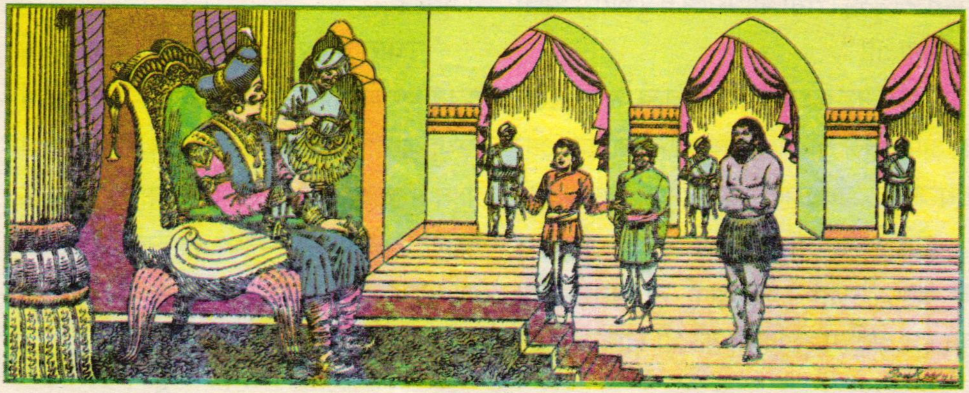

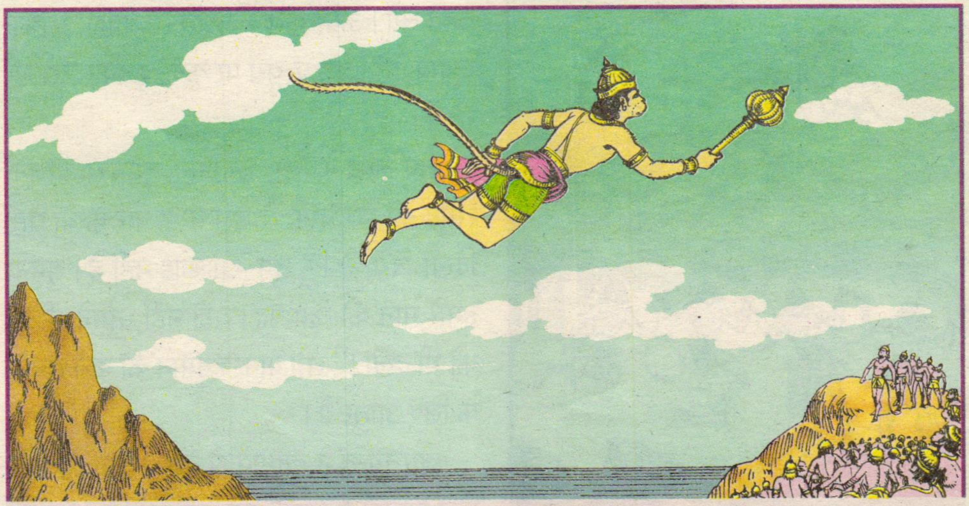

रामायण

सारी लंका को दग्ध करके हनुमान अशोक वन में सीता के पास आया। उनको नमस्कार करके उसने कहा, "मेरा सौभाग्य है कि आपको कोई हानि नहीं हुई। मैंने अनेक वीर राक्षसों को मार दिया है। रावण के पाँचों सेनापति और रावण का बेटा अक्ष भी मेरे हाथों मारा गया। रावण के सभी महत्वपूर्ण भवनों को जला दिया है। अब रावण डरा हुआ है। अब वह आप को कुछ भी हानि नहीं पहुँचायेगा। मुझे आप को सकुशल देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, क्योंकि इसी कार्य के लिए मुझे यहाँ भेजा गया था। मैं ये सारी बातें राम को सुनाऊँगा। वे यह सब जान कर बड़े प्रसन्न होंगे। आप को लेने के लिए राम जल्दी ही वानर और भल्लूक सेना को साथ लेकर आयेंगे।"

उनसे विदा लेकर अरिष्ट पर्वत पर चढ़कर समुद्र की ओर देखते हुए उसने अपना शरीर बड़ा किया। जब उसने छलांग लगाने के लिए जोर से उस पहाड़ को कुचला तो उस पहाड़ के पत्थर चूर चूर हो गये। उस पर रहनेवाले जन्तु भय से इधर उधर भाग गये। हनुमान उस पार जाने के लिए आकाश में उठा। वह मेघों में कभी दिखाई देता, तो कभी लुप्त हो जाता। उसने समुद्र को इस तरह पार कर लिया, जिस तरह कि हवाई जहाज़ पर किया करते हैं। उसे जल्दी ही कुछ दूरी पर महेन्द्र पर्वत दिखाई देने लगा। उसे देखते ही उसने उत्साह में गर्जन किया।

अंगद आदि वानर तो इसी प्रतीक्षा में थे कि वह कब वापस आता है, इसलिए उसका गर्जन

सुन्दर काण्ड - ७

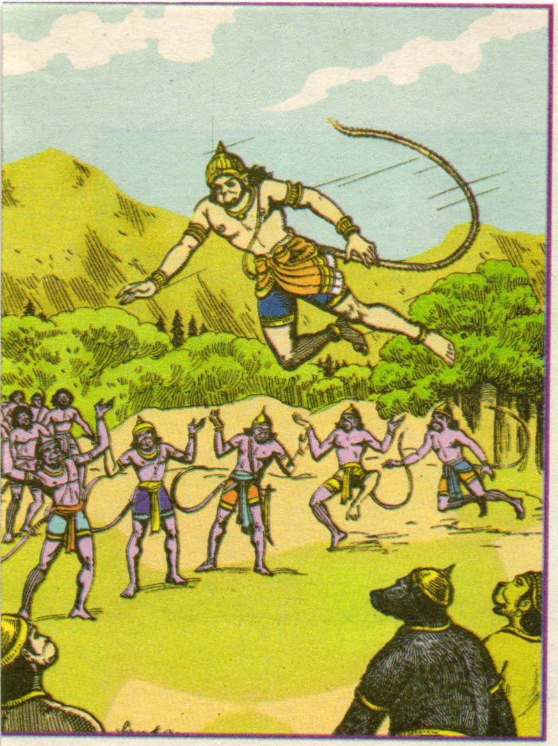

करने लगे। अगर कुछ चिल्लाते तो बाकी उसका जवाब देते। कई पत्थरों पर कूद-कूदकर उसे छू रहे थे।

तब अगंद ने कहा, "हनुमान, तुमने सौ योजन समुद्र को इस तरफ़ से उस तरफ़ पार करके यह दिखा दिया है कि तुम-सा कोई नहीं है। तुमने हमारे मान की रक्षा की। यही नहीं, तुमने सीता को भी देखा।" सब वानर हनुमान की बातें सुनने के लिए आतुर थे।

जाम्बवन्त ने हनुमान से कहा, "सीता तुम्हें कैसे दिखाई पड़ गई? वह वहाँ कैसी है? उसके प्रति रावण का कैसा व्यवहार है? जो कुछ गुज़रा है उसे बिना छिपाये बताओ। फिर उसमें से राम को क्या बताया जा सकता है और क्या नहीं बताया जा सकता, हम बाद में सोचेंगे।"

हनुमान ने यों कहना शुरू किया। "तुमने मेरा जाना तो देखा ही था। कुछ दूर जाने पर, एक सोने के पर्वत का शिखर मेरे रास्ते में आया। उसने मुझसे प्रेमपूर्वक बात करते हुए कहा कि उसका नाम मैनाक है और मेरे पिता वायुदेव ने उसकी इन्द्र से रक्षा की थी। मैनाक से विदा लेकर जब मैं आगे बढ़ा तो सर्पमाता सुरसा देवी ने मेरे सामने आकर धमकी दी कि वह मुझे निगल जायेगी। मैं अंगुल के बराबर अपना शरीर बनाकर उसके अन्दर घुसा और बाहर निकल गया।"

इस प्रकार हनुमान ने कहना शुरू किया। फिर उसने सविस्तार बताया कि कैसे अन्धेरा होने के बाद वह लंका नगर में पहुँचा था। लंका को छानने

सुनकर वे बहुत खुश हुए। सबमें बड़े जाम्बवन्त ने वानरों को एकत्रित करके कहा, "हमारा हनुमान काम करके आ रहा है। उसकी आवाज़ सुनकर यह अनुमान किया जा सकता है।"

वानर आनन्द में उछल कूद करने लगे। कुछ पेड़ों पर चढ़ गये और टहनियाँ इस तरह हिलाने लगे जैसे वे उसे बुला रहे हों। इतने में हनुमान आकर महेन्द्र पर्वत पर उतरा। वानरों ने जोश में उसे घेर लिया। उसे फल और कन्द-मूल दिये।।

हनुमान ने जाम्बवन्त जैसे प्रमुख और युवराज अंगद को नमस्कार करके कहा, "मैंने सीता को देख लिया है?" उसने अंगद का आलिंगन किया। सब के बैठने के लिए महेन्द्रगिरि पर एक सुन्दर स्थल देखा। हनुमान के यह कहते ही कि उसने सीता को देखा है, कुछ वानर शेरों की तरह गर्जन

पर, अशोक वन में एक शिंशुपा वृक्ष के नीचे कैसे सीता दिखाई दी थी। आखिर में उसने कहा, ''इसमें सन्देह नहीं है कि सीता महा पतिव्रता है। वह राम के लिए ही जी रही है और बहुत कष्ट झेल रही है। जब मैंने अकेले ही सारी लंका को भस्म कर दिया है तो क्या हम सब मिलकर रावण और उसकी सेना को खत्म न कर सकेंगे? हम में कौन कम है? जाम्बवन्त, अंगद, पनस, नील, अजेय कितने ही वीर लोग हममें हैं। यही अच्छा है कि हम रावण को मारकर सीता को राम के पास पहुँचा दें।''

अंगद ने हनुमान का समर्थन करते हुए कहा, ''सीता को देखकर भी उनको राम के पास न ले जाना हमारे लिए अनुचित है। राम के पास खाली हाथ जाना और जाकर यह कहना ठीक न होगा कि हमने सीता को देखा तो है, पर हम उनको लाये नहीं हैं। यही नहीं, हनुमान ने वहाँ के वीर राक्षसों को मार ही दिया है। सिर्फ रावण को मारना कौन सी बड़ी बात है? सिवाय सीता को लाने के हमारे लिए कोई और बड़ा काम नहीं है।''

इस पर हनुमान ने फिर कहा, ''मैं सीता को अपने साथ ला सकता था। मैंने उन्हें कहा भी। परन्तु वे पतिव्रता हैं, इसलिए मेरे साथ नहीं आईं। अब तक क्या हुआ, यह राम को बताना जरूरी है।''

यह सुनकर जाम्बवन्त ने कहा, ''हनुमान, तुम्हारी बात अच्छी है। इस विषय में राम का क्या विचार है यह जानकर ही हमें कार्यवाही करनी पड़ेगी। अब तक जो पता चला है, यह राम और

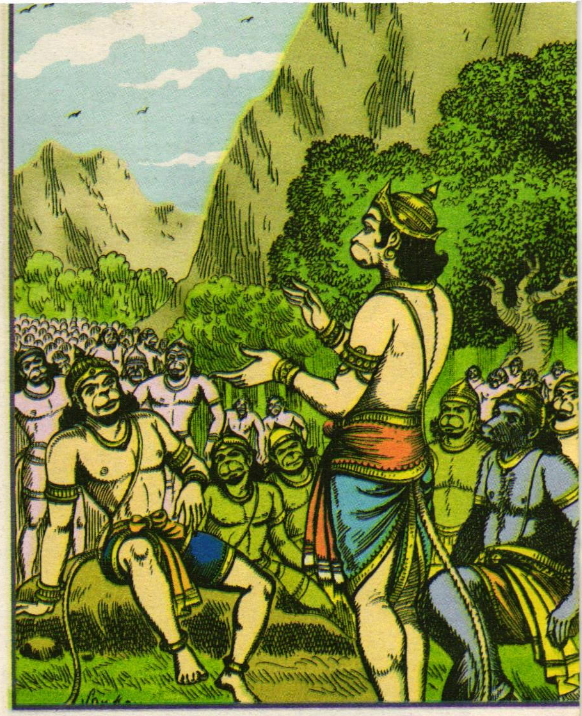

सुग्रीव को बताना आवश्यक है। आगे क्या करना चाहिये, इसकी रणनीति राम-लक्ष्मण, सुग्रीव की सलाह से तय करेंगे। वे जैसी योजना बनायेंगे, उन्हें कार्यरूप देना हम सब का कर्त्तव्य होगा।'' यह सलाह अंगद ही नहीं, बाकी वानर भी मान गये।

जो काम सोचा था, वह चूँकि हो गया था, राम को कहने के लिए कुछ समाचार थे, युद्ध की भी सम्भावना थी, इसलिए वानर खुशी में उछलते कूदते वापस निकल पड़े। वे कूदते फाँदते मधुवन में पहुँचे। वहाँ अंगद की अनुमति पर उन्होंने शहद के छत्तों से शहद पिया। खुशी में उन्होंने तरह तरह के खेल भी खेले। चिल्लाये। एक दूसरे का पीछा किया। पेड़ों पर भागे।

मधुवन का रक्षक दधिमुख था, सुग्रीव का

खुशी में तालियाँ बजायीं। शहद पी पाकर उन्होंने ऊधम मचाया। मधुवन के पहरेदारों को उन्होंने पकड़कर बाँध दिया। फल खा लिये। कई जोर से गरजे, तो कई धीमे से चीखे और कई सो गये।

मधुवन को नष्ट होता हुआ देख, दधिमुख ने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया। पेड़, पत्थर आदि अस्त्रों से अंगद के वानरों की सेना पर आक्रमण किया। अंगद नशे में था, उसने यह भी न सोचा कि वह अपने नाना से लड़ रहा है। उसने उसे जोर से धक्का दिया। दधिमुख बेहोश हो गिर गया।

कुछ देर बाद उसे होश आया। उसने अपने हाथ के पेड़ से खूब नशे में आये हुए वानरों को भगाया। फिर उसने अपने लोगों से कहा, ''इन सबको यहीं पड़े रहने दो। मैं जाकर सुग्रीव को बताऊँगा, यहाँ क्या गुज़रा है, तब सुग्रीव ही उनके सिर कटवा देगा।'' कहकर वह जल्दी-जल्दी सुग्रीव के पास गया।

मामा। जब उसने देखा कि वानरों ने केवल शहद ही न पिया था, बल्कि पेड़ों और फलों को तोड़ दिया था, तो वह उनको गुस्से में वन छोड़कर जाने के लिए चिल्लाया। पर वानरों ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। उसने कुछ को पीटा तो कुछ को समझाया। कुछ को मनाया। परन्तु सबने उसको छेड़ा। कई ने उसको काटा भी।

हनुमान ने वानरों को प्रोत्साहित करते हुए कहा, ''जितना चाहो उतना शहद पीओ। देखें, कौन तुम्हें रोकता है !''

अंगद ने हनुमान की बात का समर्थन करते हुए कहा, ''यदि हनुमान ऐसा काम भी करने के लिए कहेगा, जो नहीं करना चाहिए, तो मैं कर दूँगा। उस हालत में अच्छा काम करने के लिए क्यों झिझका जाये?'' वानरों ने अंगद की बात पर

सुग्रीव ने अपने मामा को देखकर आश्चर्य से पूछा, ''क्या बात है?''

''उस मधुवन को जहाँ देवताओं का प्रवेश भी निषिद्ध है, अंगद आदि ने आकर ध्वंस कर दिया है। जब पहरेदारों ने उन्हें जाने के लिए कहा, तो उन्हें मारा पीटा, उनको सिर के बल लटका दिया। मधुवन का सारा शहद भी खा गये।'' दधिमुख ने सुग्रीव से कहा।

उस समय लक्ष्मण वहाँ आया और दधिमुख को देखकर उसने कहा, ''यह कोई फरियाद करता मालूम होता है।''

"हमारे लोगों ने, जो सीता को ढूँढ़ने गये थे, मधुवन में आते ही सारा वन ध्वंस करके शायद पी पा लिया। बिना काम पूरा किये वे उस तरह कभी नहीं करेंगे। वे जरूर सीता को देखकर आये होंगे। जो यह कर सकता था, वह हनुमान उनके साथ है भी। काम पूरा होने की खुशी में ही उन्होंने पहरेदारों को बाँध दिया होगा..." सुग्रीव ने कहा।

सुग्रीव का अनुमान सुनकर राम और लक्ष्मण बड़े आनन्दित हुए। सुग्रीव ने दधिमुख से कहा, "उनसे कहना कि मैं यह सुनकर बड़ा खुश हुआ क्योंकि उन्होंने मधुवन का सारा शहद खा लिया है। उनके लिए मैं, राम और लक्ष्मण प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनको यहाँ बिना विलम्ब किये जल्दी आने के लिए कहो।"

दधिमुख, जब तीनों को प्रणाम करके आकाश मार्ग से मधुवन वापस आया, तब तक वानरों का नशा उतर चुका था। उसने अंगद से कहा, "अनजाने में हमने तुमको रोका टोका था। अनजाने यह गलती हो गई है। जब मैंने जाकर यह तुम्हारे चाचा से कहा, तो वह खुश होकर तुम सब को बुला रहा है।"

अंगद ने अपने लोगों से कहा, "अब हमने यहाँ विश्राम कर ही लिया है, इसलिए चलो अब चलें। हमारे आने के बारे में राम और लक्ष्मण को पहले ही मालूम हो गया है।" अंगद और उसके साथी गर्जन करते हुए आकाश में कूदे। सुग्रीव को भी किष्किन्धा के पास उनका किया गया गर्जन सुनाई दिया। उसने खुशी में अपनी पूँछ

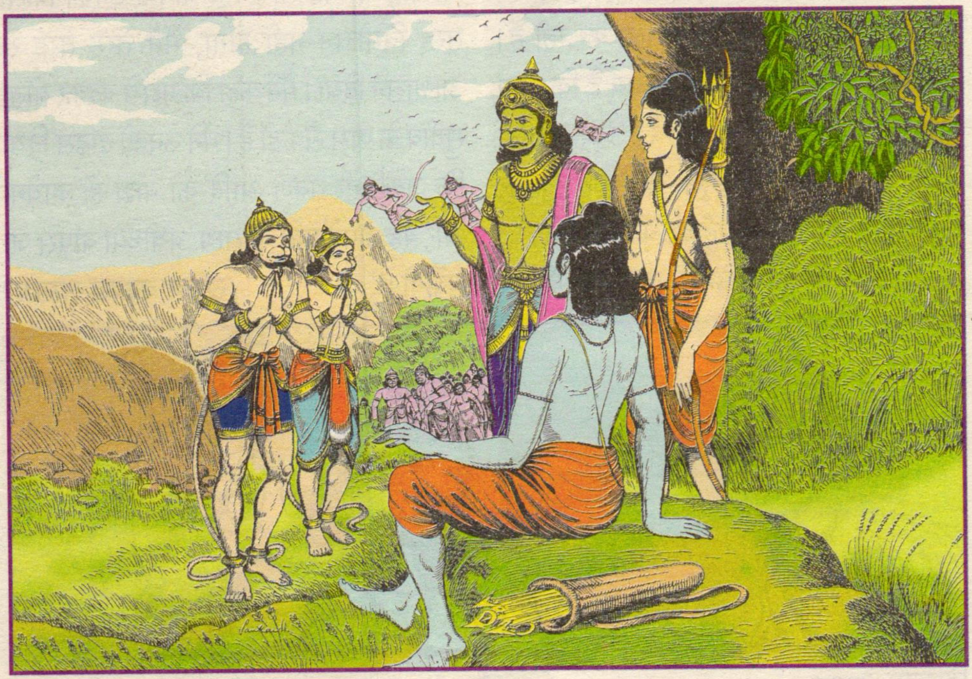

फैलायी। इतने में वानर अंगद और हनुमान को सामने रखकर राम के पास आये।

''वानरो! सीता कहाँ है? मेरे बारे में वह क्या सोच रही है? वह कैसी है? सकुशल तो है? वह वहाँ क्या बहुत दुखी होकर रो-धो रह रही है? क्या उसने मेरे लिए कुछ सन्देश दिया है?सब मुझे सविवरण बताओ।'' राम ने वानरों से पूछा। वानरों ने हनुमान को आगे धकेला।

हनुमान ने राम को जो कुछ गुज़रा था, बताया। सीता की दी हुई चूड़ामणि को राम के हाथ में रखकर कहा, ''राम चित्रकूट में जब आये थे और जो कुछ कौव्वे ने किया था, वह सब आपको याद दिलाने के लिए सीता ने कहा है। उन्होंने यह भी बताया है कि बस अब उनके लिए एक महीना समय ही रह गया है। वह बड़ी उद्विग्न हैं। वे बड़ी बेसब्री से आप की प्रतीक्षा कर रही हैं। उन्हें इस बात का दुख और आश्चर्य है कि आप अब तक उन्हें लेने क्यों नहीं गये। उनका कहना है कि शायद आप उन्हें भूल गये हैं। समुद्र पार करके शीघ्र ही लंका में पहुँचने की सोचिये।''

सीता की दी हुई चूड़ामणि को देखते ही राम और लक्ष्मण का दुख काबू में न रह सका। 'बिना सीता के इस चूड़ामणि के दिखाई देने से अधिक दुख का कारण क्या होगा? क्या सीता केवल एक मास मात्र ही जीवित रहेगी? जब यह मालूम हो गया हो कि वह कहाँ है, तब यहाँ कैसे रहा जाये? उन भयंकर राक्षस स्त्रियों के बीच में सीता कब तक रहेगी?' राम सोचने लगे।

जो कुछ सीता ने कहा था, उसने हनुमान के मुँह से सुना। हनुमान ने सब सुनाकर कहा, ''उन्होंने आपको सेना के साथ आकर, रावण को मारकर उनकी रक्षा करने के लिए कहा है। उसके लिए मुझे आप को प्रोत्साहित करने के लिए भी कहा है। उन्हें यह सन्देह हो रहा है कि शायद वानर समुद्र पार करके न आ सकें। सीता जी को, जो यह सोच रही थीं कि उनका किसी तरह विमोचन नहीं होगा, मैंने तरह तरह से आश्वासन दिया। मैंने कहा कि मुझसे बढ़कर योद्धा सुग्रीव के पास सैकड़ों हैं। मैंने उनको ढाढ़स दिया कि जल्दी ही रावण आदि का नाश हो जायेगा और वह अपने पति के साथ अयोध्या वापस जा सकेंगी।''

(सुन्दर काण्ड समाप्त)

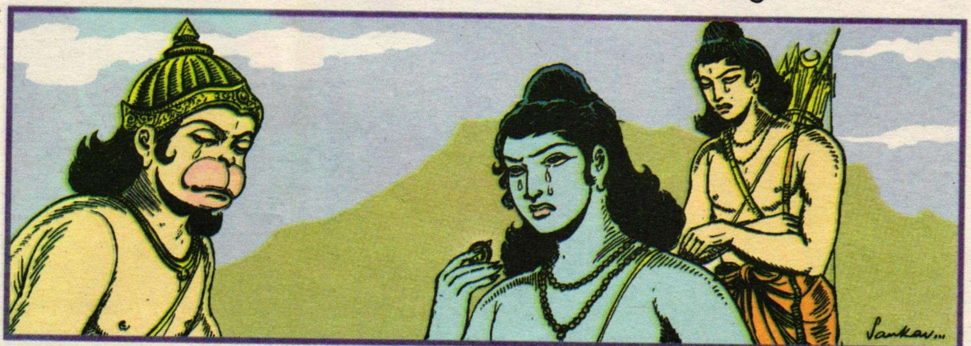

खजाने की खोज

दीनू महतो इक्का चलाकर अपने दिन बिताता था। एक दिन संध्या के समय जब वह घर लौट रहा था, तब रास्ते के किनारे खड़े हुए एक व्यक्ति ने उससे पूछा कि गाँव से छे मील की दूरी पर स्थित सराय तक इक्का चाहिए, फिर सवेरे तक लौटना है। क्या मेरे साथ चलोगे? इसे दीनू ने मान लिया।

उस बुजुर्ग ने अपने साथ ढक्कन पर कपड़ा बन्धा और एक कलश, दो कुदाल और एक फावड़ा भी गाड़ी पर रख लिया। दीनू ने सोचा कि वह बुजुर्ग उजड़ी सराय में कोई ख़जाना खोदने जा रहा है।

इक्के के सराय तक पहुँचने में काफ़ी वक़्त हो गया। इक्के पर सवार व्यक्ति जब उस कलश को उतारने लगा, तब वह छूटकर गिर गया और खन् खन् की बड़ी आवाज़ हुई। कलश लुढ़ककर गिर गया था जिससे उसके भीतर के थोड़े से टीकरें बाहर आ गिरे थे।

दीनू ने उस बुजुर्ग से पूछा, ''इस आधी रात के वक़्त आप टीकरोंवाला यह कलश यहाँ पर क्यों लाये हैं?''

''मैं सारी बातें तुम्हें इतमीनान से सुनाऊँगा। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए!'' इन शब्दों के साथ बुजर्ग ने यों सुनाया :

''मेरा नाम हजारीमल है। मेरे दादा ने समुद्री व्यापार करके काफ़ी धन कमाया। एक बार वे बहुत-सा धन लेकर गाँव लौट रहे थे। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते आधी रात हो गई। वे उस दिन रात को यहीं पर ठहर गये। उस रात को डाकुओं ने सराय पर हमला किया। डाकुओं ने अंधाधुंध सब को मार डाला, जो कुछ हाथ लगा, लूटकर ले गये। उन मरे हुए लोगों में मेरे दादा भी एक थे।

''मेरे पिता ने खुदरी चीज़ों का व्यापार शुरू किया। किसी तरह तकलीफ़ उठाकर मुझे पाला-

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

पोसा और बड़ा किया। वे हाल ही में मर गये।

"मेरे पिता सिर्फ़ अपने पीछे एक मकान छोड़ गये हैं। उस मकान को बेचने के ख्याल से मैंने अटारी पर रखे पुराने सामान को निकाला। उसमें मेरे दादा के जमाने की एक किताब हाथ लगी। मैं उसके पन्नों को उलटने लगा। एक जगह मेरे दादा ने कुछ लिख रखा था, मैंने उसे पढ़ा। उसमें यों लिखा हुआ था, "आजकल डाकुओं की संख्या बढ़ गई है। अगर मैं वापस नहीं आया तो समझ लेना कि अनहोनी हो गया है और मैं मेरे पास जो कुछ धन होगा, उसे संदूक के साथ सराय पर, पौधे रोपने के लिए जो थाला बनाया जा रहा है, उस गड्ढे में गाड़ दूँगा।'

यह वृत्तांत सुनाकर हजारीमल ने कहा, "सुनो, सराय के पीछे के पेड़ों के नीचे हमें उस खजाने को निकालने के लिए खोदना होगा! तुम मेरी मदद करोगे तो तुम्हें उस खजाने का तीसरा हिस्सा दूँगा।"

दीनू ने हजारीमल की बात खुशी से मान ली। उसने पूछा, "तब तो ये टीकरोंवाले कलश का क्या मतलब है?"

"अचानक अगर हम इस कलश को साथ ले आयेंगे तो किसी को संदेह हो सकता है! अगर रोज यह कलश हमारे साथ रहा तो कोई भी इस पर ध्यान न देगा। संदूक में भरा धन हम इसमें रखकर ले जा सकते हैं।" हजारीमल ने कहा।

इसके बाद दीनू ने घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया। तब दोनों कुदाल और फावड़ा लेकर सराय के पीछे चले गये, पेड़ों के थालों के पास दोनों दो अलग दिशाओं में खोदने लगे।

सवेरा होने को था, इसलिए दोनों ने खोदने का काम रोक दिया और दूसरे दिन रात को फिर वहाँ

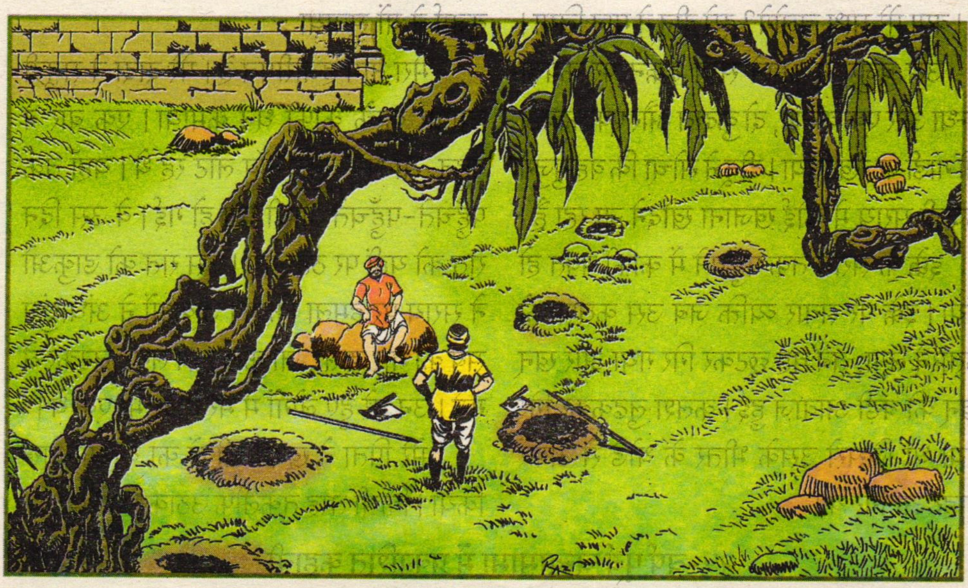

आने का निश्चय कर लिया। मगर उस रात को दोनों ने जो मेहनत की, उसका उन्हें कोई फल नहीं मिला। गाँव लौटने पर दीनू ने हजारीमल को उसके घर पर उतार दिया और वह अपने घर लौट आया।

''तुम रात भर कहाँ रहे?'' दीनू की पत्नी कामाक्षी ने कड़ककर पूछा। दीनू ने सारी बातें सुनाईं और कहा, ''तुम ये बातें किसी से मत कहो! आज शाम को जाकर मैं फिर थोड़े पेड़ों के थालों के पास खोद डालूँगा। अगर हमारी खुश क़िस्मती से खजाना निकल आया तो उसे हम ही रख लेंगे।''

''यह तो सरासर अन्याय है! अन्याय का धन हमें नहीं चाहिए!'' कामाक्षी ने दृढ़ स्वर में कहा।

लेकिन दीनू ने अपनी पत्नी की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह फिर शाम को उस उजड़ी सराय के पास पहुँचा, अंधेरा फैलने तक थोड़े और पेड़ों के थालों के पास खोदता रहा, जब उसे कुछ हाथ न लगा, तो उन गड्ढों को भरकर घर लौट आया।

उस दिन रात को हजारीमल और दीनू ने सराय के पीछे खोद डाला। यों दो हफ़्ते तक दोनों ने कड़ी मेहनत की, मगर दीनू निद्रा और आहार का भी ठीक से ख्याल किये बिना कड़ी मेहनत करने की वजह से ढीला पड़ गया, दूसरे दिन सवेरे उसे बुखार भी आ गया। उस दिन उसने अपने पडोसी के जरिये हजारीमल के पास ख़बर भेजी, ''आज रात को मैं इक्का नहीं ले आ सकता।''

पड़ोसी ने लौटकर बताया कि हजारीमल घर खाली करके शहर चला गया है।

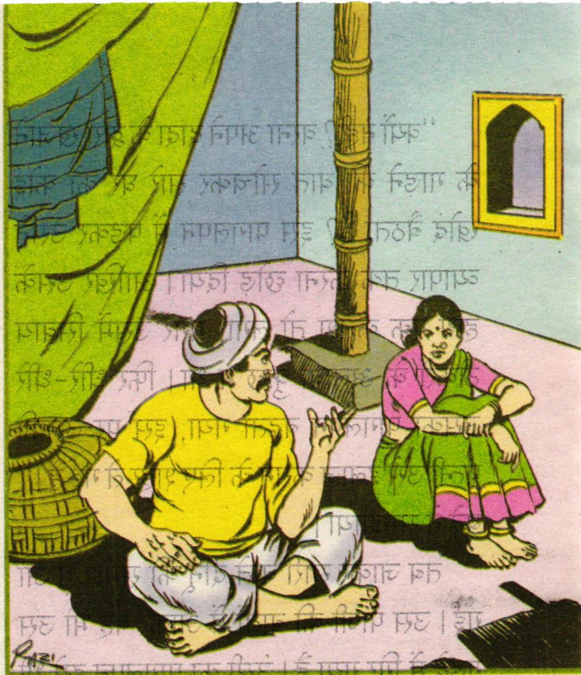

यह खबर सुनते ही दीनू का सिर चकरा गया। वह सोचने लगा कि हजारीमल अगर अपने परिवार के साथ शहर चला गया है तो इसका मतलब है कि उसे खजाना हाथ लग गया है। उसे हजारीमल ने दगा दिया है।

उस बुखार की हालत में भी दीनू उठते-गिरते हजारीमल के घर की ओर दौड़ पड़ा।

आख़िर वहाँ पहुँचकर देखता क्या है, हजारीमल के घर पर ताला लगा हुआ है। पड़ोसी घर के चबूतरे पर बैठे एक बूढ़े से दीनू ने हजारीमल के बारे में पूछा। उसने बताया, ''उसका पागलपन बढ़ गया था, इसलिए इलाज कराने उसे शहर ले गये हैं।''

दीनू ने चकित होकर पूछा, ''क्या हजारीमल पागल हो गया है?''

''क्यों नहीं? वरना अपने दादा के द्वारा ख़जाने के गाड़ने की बात सोचकर सारे घर को कोई खोद बैठता है? इस पागलपन में पड़कर उसने व्यापार तक करना छोड़ दिया। आख़िर उसके हाथ एक कलश तो लगा, मगर उसमें सिवाय टीकरों के अलावा कुछ न था। फिर धीरे-धीरे उसका पागलपन बढ़ता गया, इस पर उसकी पत्नी उसे इलाज कराने के लिए शहर ले गई है।'' बूढ़े ने समझाया।

तब जाकर सारी बातें दीनू की समझ में आ गईं। उस पाजी की बातों में आकर वह भी उस गड्ढे में गिर गया है। उसी का पागलपन इसे भी छू गया है। आख़िर धन महानों को भी पागल बना देता है।

अब दीनू का दिल हल्का हो गया। वह अपने पैर घसीटते घर की ओर चल पड़ा।

तब तक एक खंभे के पीछे छिपी दीनू की पत्नी कामाक्षी बाहर आई और बूढ़े से बोली, ''नानाजी, मुझे माफ़ कर दो। मैंने तुमसे झूठ बुलवा दिया।''

''हाँ, बेटी! हजारीमल को ख़जाना हाथ लगा था। वह अपना कर्ज चुकाकर शहर में चला गया है न? तुमने उसे पागल क्यों बताया?'' बूढ़े ने पूछा।

कामाक्षी ने सारा समाचार बूढ़े को सुनाकर कहा, ''मैं अगर ऐसा न कहूँ तो सचमुच ही मेरा पति पागल हो जाएगा! इस ख़जाने की बात उठने के पहले वह जो कुछ कमाता था, उससे हम घर भर के लोग आराम से खा-पी लेते थे। सुखी थे, घर में शांति थी! ऐसे व्यक्ति के मन में अगर ख़जाने का लोभ पैदा हो जाये तो हमें सुख कहाँ से मिल सकता है? जब से खजाने के बारे में उसे मालूम हुआ, वह पागल हो गया है। न उसे खाने का होश है, न सोने का। रात-दिन उसी के पीछे पड़ा है। जो कुछ कमाता था, वह भी छूट गया। अब भूखों मरने की नौबत है। इसी चिन्ता में वह बीमार हो गया। इसीलिए मैंने आप से ऐसा कहवाया। माफ कीजियेगा। '' यों जवाब देकर कामाक्षी एक दूसरे रास्ते से अपने घर की ओर चल पड़ी।

दोस्त

एक दिन रामेश और कामेश नदी तटपर जा रहे थे। एक आदमी सामने से आया और दो खिलौने दिखाते हुए कहने लगा : ''जितने भी खिलौने ले आया था, सब बिक गये हैं। दो ही बच गये हैं। एक-एक पंद्रह रुपयों पर बेचा। आप दोनों ये ले लेंगे तो दस रुपयों में दे दूँगा।''

रामेश के पास रक़म नहीं थी। कामेश के पास रक़म थी, पर वह दोनों लेने के लिए तैयार नहीं था। ''दोनों खिलौने अच्छे हैं। एक तुम रख लो और दूसरा अपने किसी दोस्त को दे देना।'' रामेश ने उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा।

''नहीं, नहीं, इनमें से एक तुम्हें लेना होगा'', यों उसने रामेश को मनवाया। तब जाकर उसने दस रुपये देकर उन दोनों खिलौने ले लिये। फिर दोनों इधर-उधर की बातें करते हुए घर के पास आये। तब रामेश ने कहा, ''कामेश, एक मिनट रुक जाना। घर जाकर रक़म ले आता हूँ।''

कामेश ने हँसते हुए कहा, ''क्या कह रहे हो यार। तुमसे थोड़े ही रक़म लूँगा। अच्छा खिलौना है। रख लेना।''

''किसी से मुफ्त में किसी चीज़ को लेना मैं पसंद नहीं करता'', कहता हुआ रामेश चला गया।

कामेश दोनों खिलौनों को लेकर घर के अंदर गया और पत्नी को दिखाया। साथ ही जो भी हुआ, वह सब बताया। कामेश की पत्नी ने कहा, ''लगता है, भाई साहब को यह खिलौना अच्छा लगा। वे एक अलग प्रकार के शख्स हैं। रक़म लेकर उन्हें दे देना था।''

''मैं भी अपनी पद्धति का शख्स हूँ। रक़म देने से इनकार करने पर ही उसे यह खिलौना दूँगा।'' कामेश ने गंभीरतापूर्वक कहा।

''दो चार दिनों के बाद यह खिलौना भाभी

बाबी

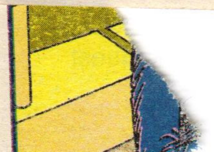

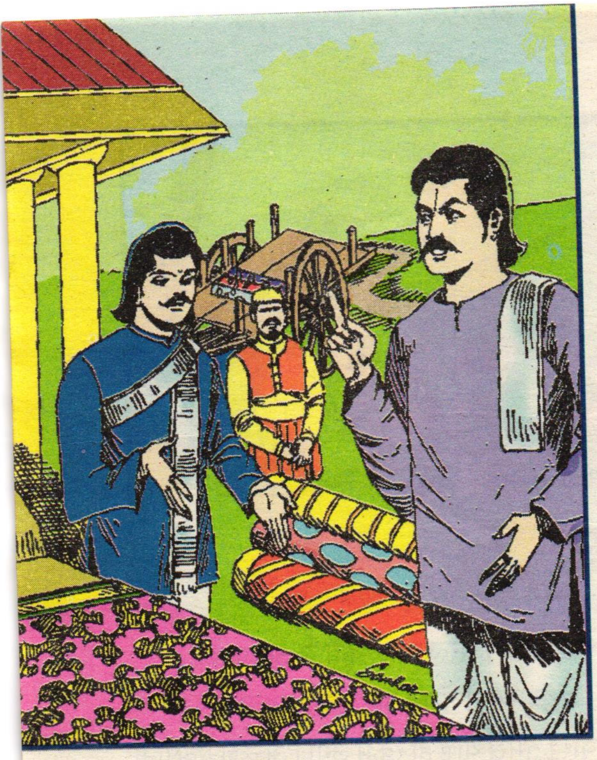

को दे आऊँगी। यों आपकी पद्धति का भी पालन हो जायेगा। साथ ही खिलौना भी उन्हें दे सकेंगे।'' इस प्रकार वह चार दिनों के बाद वह खिलौना रामेश की पत्नी को दे आयी।

एक दिन कामेश किसी काम पर ग्रामाधिकारी के घर गया। तब उसने देखा कि ग्रामाधिकारी कंबल खरीदने के लिए सौदा कर रहे हैं। जमीन पर बिछाये कंबल को एकदम नया देखकर कामेश ने कहा, ''घर में जो यह कंबल है, बिल्कुल नया दीख रहा है। एक और कंबल खरीदने की क्या ज़रूरत है?''

''यह सवाल मुझसे नहीं, अपने दोस्त रामेश से पूछना। उसने यह कंबल लेने का वादा किया, इसीलिए मैं यह नया कंबल खरीदने को तैयार हुआ हूँ।'' ग्रामाधिकारी ने कहा।

कामेश ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''रामेश क्या उपयोग में लाये गये कंबल को खरीदने के लिए तैयार हो गया?'' उसने पूछा।

''तुमने भी यह क्या कह दिया। उसे उपयोग में लाये गये कंबल को थोड़े ही बेचूँगा। पुरानी चीजों को फेंक देना उसे बिल्कुल पसंद नहीं आता। बस अपने घर में उन्हें सुरक्षित रखता है'', ग्रामाधिकारी ने कहा।

कामेश का चेहरा फीका पड़ गया। उसने कहा, ''रामेश तुमसे लेगा? या किसी और से खरीदेगा?'' कामेश ने पूछा।

''वह बहुतों से लेता है'', ग्रामाधिकारी ने कहा। कामेश में आक्रोश भर आया। रामेश को मुफ्त में सबसे पुरानी चीज़ों को लेने की आदत है। उल्टे डींगें हाँकता रहता है कि मैं किसी से कुछ नहीं लेता। इस बात को गाँव के सब लोगों से बताने के लिए वह निकल पड़ा। पहले वह अपने घर गया और पत्नी को लेकर फिर रामेश के घर गया। ग्रामाधिकारी ने जो विषय बताया, उससे बताया।

रामेश ने कहा, ''इतनी छोटी-सी बात पर इतना शोरगुल क्यों मचा रहे हो? औरों से मैं जो लेता हूँ, उन्हें अपने पास नहीं रखता। जो देते हैं उनके दोस्तों को दे देता हूँ।''

''जो देना चाहते हैं, उन्हें हर कोई दोस्तों को ही देता है। बीच में तुम्हारे हस्तक्षेप की क जरूरत है?'' कामेश ने उलाहना भरे स्वर में क

रामेश ने अपने स्वर को कम करते हुए क

चन्दामामा

न्दामामा प्रश्नोत्तरी-११

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने की प्रश्नोत्तरी भारत के भूतकालिक और वर्तमान इतिहास पर केन्द्रित है।

*यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।

तुम्हें क्या करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को लिखो; २. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-११** लिखो ; ४. तुम्हारे उत्तर ३१ दिसम्बर तक हमें मिल जाना चाहिये। सही उत्तर फरवरी २००९ के अंक में प्रकाशित होंगे।

१. ए.डी.३७० तथा ४१० के बीच किस चीनी यात्री ने भारत की यात्रा की थी?
२. किस दिन पांडिचेरी को भारतीय संघ में मिला दिया गया?
३. २४ जनवरी १९६६ का इन्दिरा गाँधी के जीवन में क्या महत्व है?
४. वह ब्रिटिश राजदूत कौन था जिसने बादशाह जहाँगीर से भेंट की थी? किस वर्ष?
५. विजयलक्ष्मी पंडित कौन थी? उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा का अध्यक्ष कब चुना गया? स्वाधीनता के पूर्व तथा पश्चात वह किन पदों पर रहीं?
६. रज़िया सुलताना कौन थी? उसके पिता कौन थे?

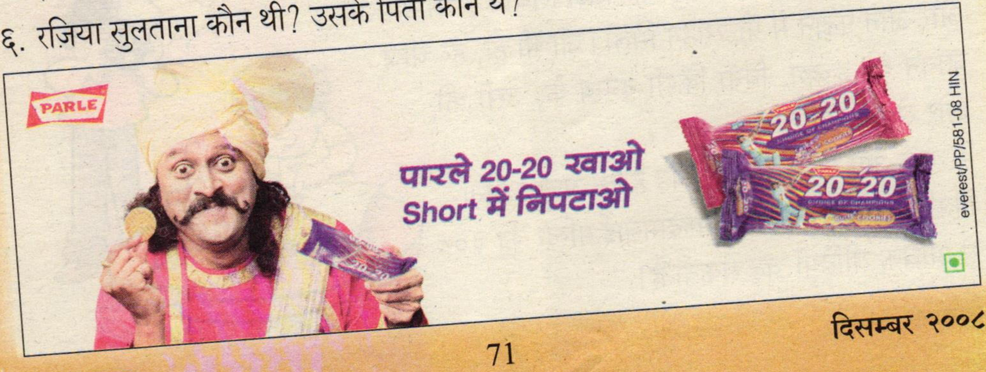

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

तेरह वर्षीय जादूगर

बच्चे जादू के तमाशे देखना पसन्द करते हैं। परन्तु यहाँ एक बच्चा जादू दिखाता है। तेरह वर्षीय करुण कृष्णा हवा में से चॉकलेट पैकेट्स निकालता है! बंगलोरवासी करुण को सन् २००५ में पोगो का अमेजिंग किड चुना गया।

करुण, जब तीन साल का था, तब कारों और खिलौनों की अपेक्षा ताश के पत्तों और सिक्कों से खेलना अधिक पसन्द करता था। यह देख कर उसके पिता ने उसे जादू सीखने के लिए बंगलोर के प्रसिद्ध जादूगर के पास भेजने का निश्चय किया। करुण ने अन्तर्राष्ट्रीय जादूगर कन्वेन्शन 'विस्मय २००८' में, जिसमें दुनिया भर से ७५० से अधिक जादूगर आये थे, प्रथम पुरस्कार जीता।

स्मरण-खेल

अव्युत ढाई वर्ष का है। इस उम्र के अधिकांश बच्चे टी.वी. पर टॉम एण्ड जेरी को पहचान कर ही सन्तुष्ट रहते हैं, किन्तु, अव्युत को कम्पनी लोगोज को पहचानने और कम्पनी के नामों की सही वर्तनी याद करने में अधिक मजा आता है! उम्र के लिहाज से इस अद्भुत बच्चे में असाधारण स्मरण शक्ति है। वह बॉलीवुड के बिग बी से लेकर क्रिकेट के बिग डी-धोनी तक ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों के नाम याद रख सकता है। वह फिल्म के केवल गीतों को सुन कर गायकों के नाम भी बता देता है।

अव्युत के पिता के. उमेश बाबू का कहना है, ''मैंने निकट से इसका निरीक्षण किया है और देखा है कि इसमें विशिष्ट प्रतिभाएँ हैं। शनै शनै मैंने गायक-गायिकाओं के चित्र और कम्पनियों के लोगोज दिखाने शुरू किये। उसने तुरन्त समझ लिया। इससे हमें उसे और आगे पढ़ाने में प्रोत्साहन मिला। जो भी हो, हर चीज जानने की इच्छा, बिना किसी दबाव के, उसी की ओर से आती है।''

एक और दिलचस्प बात यह है कि अव्युत बिना किसी की मदद के, स्वयं, मरुदामलाई मन्दिर की ३०० से अधिक सीढ़ियाँ चढ़ सकता है।

chandamama.com is now MORE

H
ot
appening
ecka Lot of Fun!

Want to become a Chandamama Author?
Come online!

Tiger or Tigon?

Ranger Rani, our resident animal lover and zoologist rolled into one, brings you loads of interesting info on the animal world.

Hi kids! Here is the question:
When can a tiger look like a tiger without being a tiger?

Wait! Don't give up! Rani Ranger has the answer: when it's a tigon!

Can you guess what a tigon is? If you say a cross between a tiger and lion, you're right. A tigon is born to a lion mother and tiger father. They don't occur in nature; neither are they a new species of animal. They are artificial hybrid animals. Because of this, Tigons don't have scientific names like other animals.

Tigons are born in overcrowded zoos, amusement parks or circuses. They might have stripes, like a tiger's. Others have spots. But many have both spots and stripes!

For many years, tigons were a best-kept secret in circuses in India. In 1837, Queen Victoria came to India for an official visit. The princess of Jamnagar state presented a tigon cub to the Queen, which became her pet. A travelling circus with a litter of tigons also exhibited them to the Royal family. That was the first time western people saw tigons.

Want to know more about tigons and other animals?
Visit RANGER RANI'S ADVENTURES in our EXPLORE column!

Chill Out

Movies, music, books... get the latest reviews here!

Download

You like to read ebooks? Come to our Download section.

Comics

Interviews and issues, with today's popular kids and adults

What's more...?!

Hundreds of stories for your reading pleasure

Post your thoughts in our POST section

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

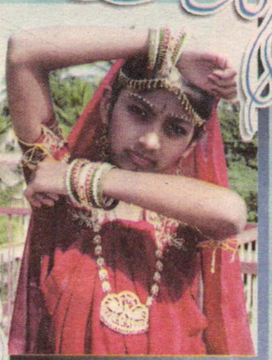

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

कुमारी सरिस्का शर्मा
गायत्री भवन के पास
पो. बडू, जि. नागौर
राजस्थान - ३४१ ५०१

विजयी प्रविष्टि

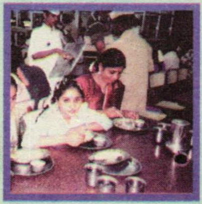

खाने का यह अपना ढंग।
प्रेम से खाये संग-संग ॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. स्वर्ण मन्दिर; २. मदुराई में मीनाक्षी मन्दिर; ३. बेसिलिका ऑफ बोम जीसस, वेल्हा (गोवा) में, सेंट फ्रांसिस जेवियर; ४. जैसलमेर का किला; ५. ओडिसा में, कोणार्क का सूर्य मन्दिर; ६. कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल; ७. सिक्किम; ८. दिल्ली में जामा मस्जिद।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited,
JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**